दिव्य आदेश

(भाग तीन)

रामचन्द्र

श्री रामचन्द्र मिशन
शाहजहाँपुर, उ०प्र० (भारत)

दिव्य आदेश

(भाग तीन)

इरशादात हज़रत क़िब्ला पीर

दस्तगीर श्रीमान रामचन्द्र जी

साहब फ़तहगढ़ी, जिला फ़र्रुख़ाबाद

मन इब्तदाई 7 अकतूबर लग़ायत 31 दिसंबर, 1944 ई०

प्रथम संस्करण- 2000 . 1100 प्रतियां

© श्री रामचन्द्र मिशन

मूल्य : रू० 90/-

प्रकाशक :
श्री रामचन्द्र मिशन,
प्रकाशन विभाग,
शाहजहांपुर, उ. प्र. (भारत)

मुद्रक : **खन्ना आर्ट प्रिन्टर्स**, WZ 190, शादीखामपुर,
वेस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली - 110 008.

प्रस्तावना

आप सब बाबूजी महाराज और उनकी शक्ति के बारे में जानते हैं, और अपने जीवन में उन्होंने विश्वबन्धुत्व की फैलाने का प्रयास किया और कहा कि भाईचारे से ईश्वर की प्राप्ति सम्भव है। और जरा सा संयम अगर वर्ताजाप तो उनके बनाये हुये सिद्धान्त और सहजमार्ग की महत्ता को हर अभ्यासी को समझने में मुश्किल न होगी। यह एक practical method है इसमें अमल करना ज्यादा और बात कम करने पर बल दिया गया है।

यह पुस्तक दिव्य आदेश - भाग ३ जो प्रस्तुत की जा रही है, इस पुस्तक में बड़ी हस्तियों के dictations सम्मलित हैं जो कि बाबूजी को superconscious stage में मिले और उन्होंने अपनी डायरियों में लिख लिये। मोहम्मद साहब की भविष्यवाणी को मैं छापना तो नहीं चाहता था मगर जैसे इस दुनियाँ के हालात नजर आ रहे हैं, उन सब को देखते हुये यह समझ में आया कि छापना अनुचित न होगा।

हम सब 21वी सदी में दोड़तो रहे हैं पर इस सदी का भयानक रूप जो सबके सामने आने वाला है, उस के कुछ क्षणों के बारे में मोहम्मद साहब ने अपनी भविष्यवाणी में दर्शाया। यह सारे उन सारी बातों का एक hint एक डिक्टेशन के रूप में दिया है जो हमारे बाबूजी महाराज ने अपनी कलम से लिख डाला।

सहज मार्ग एक ऐसा मार्ग है जिसमें जात-पात, धर्म का कोई स्थान नहीं है। इसकी सीढ़ी का पहला step भाईचारे से आरम्भ होता है और ईश्वर प्राप्ति तक पहुँचता है। यही काफी नहीं है, बल्कि उस के आगे भी बहुत कुछ मिल सकेगा। अब ये आपके ऊपर है कि आप

कितना परिश्रम करें और बाबूजी महाराज की आप पर कृपा हो। इसके अलावा दिव्या आदेश भाग ३ में लार्ड कृष्णा के जन्म स्थान, समाधि स्थान (place of cremation), क्रीणा स्थल तथा नन्द गाँव के बारे में भी दर्शाया गया है। और जो काम लार्ड कृष्णा ने हमारे बाबूजी को सौंपे थे, जैसे गोवर्धन पर्वत, जमुना का तट, और द्वारकाधीश का मन्दिर आदि आवश्यक स्थानों को Power से charge करने की जो बात कही गयी है वह वास्तव में सत्य है। इस बात को वही लोग महसूस कर सकते हैं जो हमारे सहज मार्ग से जुड़े हुये हैं।

हमारे लालाजी महाराज और स्वामी विवेकानन्द जी ने अपने सन्देशों में जो बाबूजी को dictation दिये हैं उससे यह प्रतीत होता है कि बाबूजी महाराज की पहुँच, ईश्वर के कामों में इतनी थी जिसके आगे कुछ और समझने की आवश्यकता नहीं। इसका उदाहरण और वास्तविकता का पता इस पुस्तक के पढ़ने के बाद ही समझ आयेगा।

इसलिये यह हमारा सुझाव है कि हर इन्सान को किसी न किसी रूप में ईश्वर से लगाव रखना आवश्यक है और एक अपना गुरु चुने जो उसको उस तक पहुँचा सकता है। यह सारे messages जो पुस्तक के रूप में प्रस्तुत किये गये हैं, वे पढ़ने और समझने योज्ञ हैं। और किसी भी तपके के विषय में जो भविष्यवाणी की गयी है उसे बजाय अनुचित रूप में लेने के एक शिक्षा के रूप में लेना चाहिये और अपने आगे आने वाले समय को किस प्रकार सुधारें जो उस पर विपदान आये हर इन्सान को जात, पात, धर्म की महत्ता न देकर एक इन्सानी रूप को देखने का पयत्न करना चाहिये। यह हमारा सुझाव है।

उमेश चन्द्र

अध्यक्ष

श्री राम चन्द्र मिशन

शाहजहाँपुर

दिव्य आदेश

भाग - ३

7-X-1944 वक्त 10 1/2 दिन

रामेश्वर प्रसाद को मुबारकबाद दो कि उनके सुगरा के कुल मुक़ामात खोल दिये गये। बाबू मदन मोहन लाल का कुद्स का मुक़ाम खोल दिया गया। हरी बाबू को उनकी क़िस्मत पर छोड दिया जाय। ज्यादा कहने सुनने की ज़रूरत नहीं। रामेश्वर प्रसाद ने जो कुछ कहा है वह काफी है। एक मर्तबा और अगर रामेश्वर चाहे तो उनका गोश गुज़ार दिया जाये। ज्यादा छेडने की ज़रूरत नहीं। उनके (चतुर्भुज) मुताल्लिक जो ड्यूटी मैंने मदन मोहन लाल के सुपुर्द की है, वो बिलानाग़ा किये जाये। लल्लन के बारे में ज्यादा परेशान न हों। मैं मदन मोहन लाल का इन्तज़ाम सोच चुका हूं। भंडारे से निपट जाने दें। मैं उनके (मदन मोहन लाल) लिये भी फ़ील्ड तैयार करूंगा। एक बात मैं मदन मोहन लाल की दारस के लिये कहता हूं। मैं ने जो कुछ सोचा है वो टल नहीं सकता है। इस वक्त में सिर्फ सब से बड़े मुख़ालिफ की सरकोबी की गई है।

8-X-44

बाबू सूरज प्रशाद ने आज की तारीख़ से कुबरा के मैदान में क़दम रख दिया।

9-X-44

कार्तिक बदी अष्टमी सम्बत् 2001बिक्रमी - सोमवार 20 शवाल सन 1363 हिज्री

आज पण्डित रामेश्वर प्रसाद ने आलमे कुबरा में क़दम रख दिया। अज़ीज राम चन्द्र की तालीम का इस वक्त बिल्कुल नया ढ़ंग था, जो मुझ को बहुत पसंद आया। यह तरीक़ा आम तौर पर किया जा सकता है। मगर किसी शख्स पर एतबार न हो उस पर नहीं करना चाहिये। इस ईज़ाद को जो confidential नोट बुक में लिखी गई है, कोई मामूली ईज़ाद नहीं है। न मामूली अक्ल में आ सकती है। जिस को दावा हो वो उनकी (RC) ईजादात को देखे। इस से मेरा यह मतलब नहीं है कि उनको दिखा दी जावें, बल्कि ख़ुशी में कह रहा हूं। मैंने कहीं पर कहा कि इन से नई नई ईजादें इस सिलसिले की बाबत सरजद होंगी।

हजरत मुहम्मद साहब (सल्ल०) = मैंने राहे रास्ते पर लाने के लिये सैकड़ों बुत तुडवा दिये। मैंने क़ुरान शरीफ में कुछ इशारे दिये हैं। उसमें बहुत कुछ लोगों की मनमानी कहानियाँ हैं। तुम में मैंने अपनी निस्बत भर दी है। यह पीर की मुहब्बत का असर है। इस से आगे तुम्हारे पीर फ़रमावेंगे।

बतौरुल पीर= मैं ने कुरान शरीफ में जो इशारें दिये हैं, इस इशारों से तुम को मिलाया जावे। अब कुछ कौमों का total destruction शुरू कर दो। यह काम सबसे जरूरी है। अब इन लोगों को दुनियाँ में रहने की ज़रूरत नहीं। तुम्हारा खुद तजुर्बा है कि जब ग़ौस साहब (हज़रत इमामुद्दीन नजदी) ने तुम से गुफ्तंगू की थी वो भी तास्सुब से बरी न थी। इस काम को पवित्र स्थान से ही से शुरू करोगे। हज़रत की मज़ार बचा जाना। बुज़ुर्गों को यानी जो वाक़ई बुज़ुर्ग हैं, उनको ख़ुदा ताला की तरफ रुजू कर दो। काफ़ी जोर के साथ रुजू कर दो। क़ुदरत की मन्शा इन बुजुर्गों को भी रखना (मन्जूर) नहीं है। इसीलिये तुम को यह तरकीब बताई गई ताकि उन का अन्जाम बख़ैर हो। इस काम के लिये मेरी भी duty लगी है। हर ख़याल (या तहरीर) का अक्स आकाश यानी खिला में क़ायम रहता है। जिस को मुझे (हज़रत मुहम्मद साहब) उन का बताना मक्सूद होता है तो वो ही ज़र्रात उस के दिल में पैवस्त कर देता हूं। और वो ज़र्रात वैसे ही ख्यालात मामूल के दिल में पैदा कर जाते हैं। और जो असर उसकी मादरी ज़बान का या जिस इल्म से वो वाक़िफ है, उस में मौजूद होता है, वैसा ही तर्जुबा हो जाता है।

हज़रत क़िब्ला यानी गुरु महाराज= एक तहरीक यह भी हो रही है कि तुम्हारे (RC) विसाल के बाद तुम को आज़ाद मुतलक कर दिया जावे और इन झन्झटों से बचा लिया जावे। एक बात की ऐहतियाद की जरूरत है कि इस स्टेज से किसी के तवज्जो न देना, यह नबुवत है।

हज़रत मुहम्मद साहब= मैं भी बारोह रास्त तुम से हमकलाम हुआ करूंगा, जैसे तुम्हारे पीर हुआ करते हैं।

हज़रत इमामुद्दीन साहब ग़ौस, बमुक़ाम नज्द, मौजूदुल्वक्त = ख़ाना-ए-काबा में स्याही आगई। मेरे दिल में घबराहट है और वो कूद रहा है। वजह बताईये।

जवाब ग़ौसुल आज़म साहब (RC)= यह राज़े क़ुदरत है, इसके बताने की ज़रूरत नहीं।

हज़रत मुहम्मद साहब = मैं ने सब को एहकाम जारी कर दिये कि यह (ग़ौसुल आज़म) जो कुछ भी कहें, उस पर अमल किया जावे। ग़ौस साहब अभी बराहे रास्त मुझ से भी मुख़ातिब हुये थे, मैं ने कुछ जवाब नही दिया। यह बात जो तुम्हारे गौसुल आज़म का दर्जा शुरू होते वक्त तुम से कही थी (हवाला=क्या हिन्दू गौसुल आज़म हो सकता है) मुझ को भी नागवार हुई और मैंने यह नतीजा निकाल लिया कि कुछ कौमें अब इस क़ाबिल नहीं रहे। तुम्हारे परदादा पीर की भी यह पेशेन गोई है। मेरे करिश्में जो क़ुरान शरीफ़ में लिखे गये हैं, वो सब सब सही नहीं हैं। खजूर वाली बात भी अनुचित है। क़ानूने क़ुदरत के ख़िलाफ मैं कब कर सकता था। मोजज़े सरज़द मुझ से जरूर हुये हैं। कुछ धार्मिक पुस्तकों का असर गलत धर्म पर पड़ता है उन का असर खींच लो। यह करिश्मा जो मुर्गी ने अण्डा दिया और मैं ने अपनी will से फ़ौरन बच्चा उस में निकाल दिया, सही नहीं है। किसी कौमी दुश्मनों के लिये वाक़ई तौर पर सेहत की दुआ न करना। ज़माना साज़ी दूसरा सवाल है।

हज़रत क़िब्ला (गुरु महाराज) = नन्हें से बढ़ कर मेरा कोई दुश्मन नहीं। नजद में आग लग गई (वक्त था एक बज कर 50 मिनट दो पहर) । रामेश्वर को तवज्जो रोज़ दी जाये। खाने की एहतियात रखें। इस दौरान में किसी को तवज्जो न दें। अक्सी तौर पर वो मकामात तय करा दिये जावें जो क़ुतुब के लिये ज़रूरी है। वो (रामेश्वर प्रसाद) ज़ेर-मातहती बाबू मदन मोहन लाल काम करेंगे। आयन्दा जो मेरा हुक्म होगा, उसकी भी तामील करेंगे। यह क़सम खायें कि तास्सुब को अपने पास नहीं आने देंगे। और आयन्दा जो हुक्म होगा उसकी तामील करेंगे। Destruction का काम अगर ज़रूरत हुई तो उनके भी सुपुर्द कर दिया करना। इस हालत के पैदा करने से पहले उन से यह क़सम ले ली जायेगी और उससे यह शर्त होगी कि अगर ख़िलाफे-हक कोई काम उन्होंने किया तो वो ताकत जहां से आई है, वहीं वापिस हो जायेगी। एक हफ़्ते के अन्दर उन को कुबरा से निकाल दो। उस के आगे मैं फिर बताऊँगा। इस दौरान में यह (रामेश्वर) ख़ूब हालत का मुशहिदा करें ताकि दूसरे शख्सों को सिखाने में मदद मिल सकेगी। यह पहला ब्राह्मण है जिसके लिये मैंने कुतुब का दरजा क़ायम करने के लिये आज हुक्म दिया है। ब्राह्मणों में कोई कुतुब के दरजे तक नहीं पहुंचा। सिर्फ एक मिसाल जरूर है। वजूहात साफ हैं। एक बात रामेश्वर के दिमाग के आराम देने के लिये मैं बताता हूं कि अपने सोते वक्त अपनी मां के चारों तरफ़ एक हल्का क़ायम करदें और यह तसव्वुर बांधे कि इस का ताल्लुक उन के जिस्म के अन्दर और बाहर है। मौत और ज़िन्दगी की परवाह न करें। यह वक्त से पहले नहीं हो सकती। रामेश्वर को मैं ने कुबरा में क़ायम किया था। उनके चचा (नन्हें) ने उनको नीचे उतार दिया था। अब मैं ने रामेश्वर का पात्र बना दिया।

हजरत मुहम्मद साहब= मैं विलायत कुबरा की हालत पैदायशी तौर पर लेकर उतरा था। मुझ पर बहुत से इल्ज़ाम अपनी बदमाशी क़ायम रखने के लिये लगाये गये जैसे तुम्हारे यहां कृष्ण को अय्याश बताया जाता है। आइशा का क़िस्सा बिल्कुल ग़लत है। आइशा की शादी मैंने अपनी लड़की समझ कर एक शख़्स के साथ कर दी थी (नाम miss हो गया)। मेरी दो बीवियां (wives) थीं। उन में से एक के साथ मजबूरन शादी करना पड़ी थी। और यह बात मेरी तबियत के ख़िलाफ थी। मैंने हमेशा बे-सरोसामावी और फ़क़ीरों की जिन्दगी बसर की। कुज़े का पानी और चन्द निवाले मुझ को अक्सर मिले। इल्मलुद्दनी से मैं वाकिफ़ था। मैं सिर्फ एक सिलसिला जो हिन्दुओं से मिलता जुलता था, क़ायम रखना चाहता था। पॉलिटिक्स (politics) मेरे साथ ज़रूर थी। यह अरबों के जोर घटाने और ज़ोश ख़रोश कम करने के लिये की गई थी। यह अन्सर इन जाहिलों में ज्यादा था, इस को कम करना चाहता था। मगर हज़रत अली ने मेरी मदद न की और मैं ने दिल का राज़ भी उन्हें नहीं बताया था क्योंकि वो ख़ुद इस मर्ज़ में मुब्तला थे। तुम्हारे पीर साहब की तरह एहबाब से दिल बर्दाश्ता हो कर मैंने भी जल्दी कर दी। मेरे जितने यार कहे जाते हैं, वाक़ई तौर पर उन्होंने पैरवी नहीं की। बल्कि ईजाद बन्दा करते रहे। यह बात ज़रूर थी कि मैं उनके साथ रहा। मगर जैसा ख़लूस कि मैं पैदा करना चाहता था पैदा नहीं हुवा। जिन लोगों में, मैं ने तालीम करना चाही, वो तुम्हारे ही क़ौम थी और मैं भी तुम्हारी ही क़ौम का एक नबी था। रस्मोरिवाज की वजह से दोनों में इम्तियाज़ी तफ़ावत पैदा हो गया। ऐसा कभी नहीं हुवा कि मैं ने हिन्दुस्तान की तरफ रुख़

करके कभी नमाज न पढ़ी हो। यह ही मस्कन है और यह ही मख्जन है। यही से लोग बरामद हुये और होते रहेंगे। मेरा असल वतन हिन्दुस्तान ही था। अगर तुम किसी पुरानी तारीख को देखो तो तुम को पता चलेगा कि हिन्दुस्तान की हद अरब तक थी और यह कुल हिन्दुस्तान कहलाता था। संगे-अस्वद पर एक बोसा दिया जाता है। यह पत्थर हिन्दुस्तान से लाया गया था। इस बोसा देने का मक़सद यह है कि जिस जगह पर ऐसे बड़े-बड़े लोग (जो ऐसे ख़ित्ते में) पैदा हुये वहाँ की मिट्टी बतौर तबर्रुक ऐसी जगह रखी जावे और इज्जत की जावे। अब नतीजा बरअक्स है। अगर मैं (हज़रत मुहम्मद साहब-सल्ल) जिस्म से मौजूद होता तो मुमकिन था कि मैं इन को तह-तेग कर देता। यह बात क़ुरान शरीफ में कतअन बढ़ाई हुई है कि मैं रूए-शफायत इस क़ौम के लिये ख़ुदा के सामने रखूंगा। यह हूरोगिलमाँ सब यारों की ईजादें हैं। दोज़ख के लिये मैं ने नार का ख़ौफ अल्बत्ता दिखलाया है। वो इस लिये कि वो इस गरमी का मज़ा रेगिस्तान में चखे हुये हैं। अगर सच पूछो तो कुछ धार्मिक पुस्तकें पढ़ने की लायक ही नहीं रही। मुझे सिर्फ एक शख्स मेरा आशिक मिला जो मेरे साथ है। (मुराद हज़रत बिलाल से) अगर मैं तुम से अपनी क़ौम को सुधरवाऊँ तो यह मुहाल क्या बल्कि नामुमकिन है। अगर सही बात कहीं तुम्हारी ज़ुबान से निकल जाये तो यह लोग तुम्हारी जान के पीछे पड जायेंगे। मेरे सिर्फ थोड़े से उसूल थे। और कुछ रूहानी कैफ़ियत और तर्जे-तमद्दुन थे जिस की इतनी मोटी किताब बन गई । एक लुत्फ और हुवा कि लोगों ने पेच दर पेच बातें लिखी और खुद ही उन की अपने मतलब के मुताबिक तफ़्सीर की। क़ुर्बानी का मतलब मेरा यह था कि लोग अपने बुरे ऐमालों और आदतों को ख़ुदा की राह में जा कर छोड दें।

अब मतलब उन का खुरेजी हो गया। यह सब बातें उन के नामाए-एमाल में लिखी जा चुकी है। एक बात मैं बहुत ख़ास बताता हूं कि जिन बुजुर्गों (मुराद फुक़रा से) ने खुदा की राह में जानवरों की कुर्बानियाँ कीं, वो साफ नहीं गये। सिर्फ़ लडाई और तन्द्रुस्ती की ख़ातिर इजाजत हो सकती है, वो भी आम तौर पर नहीं। तुम्हें जो तुम्हारे हजरत ने इजाजत दी है वो ठीक है। तुम्हारे यहां भी कुछ कौमों ने जो जुल्म किया है, उस की भी मिसाल नहीं। मेरे आबा व अजदाद भी ब्रह्मण थे। मेरी पैदाइश के वक्त के जो भी क़िस्से तहरीर किये गये हैं वो सब घडन्त हैं। सिर्फ इतनी बात सही ज़रूर है कि मेरी माँ का रुख मुबारक झलकने लगा था जबकि मैं हमल में था। और जिस वक्त मैं उन की आगोश शफकत में खेलने लगा था तब उनकी भी हालत बदल चुकी थी। यह बात ख़ुदादाद थी और मेरी सोहबत का असर था। लोगों ने यहां तक मुबालगे ये काम लिया है कि जब मैं चलता था तो मेरे जिस्म का साया नहीं बनता था। यह बिल्कुल ग़लत है और नामुमकिन है। मैंने सख़ती ज़रूर की और यह बात हर जगह पाई जाती है। मेरा ताल्लुक हज़रत कृष्ण से रहा है और उन्होंने मुझे रोशनी बख्शी है। हुसैन के क़त्ल के मूजिद हमारी ही क़ौम के लोग थे। यह उन्हीं का प्लॉट था जिस से उस बेगुनाह की ज़िन्दगी का खात्मा हुवा। और वो सहब हमारे ख़ास दोस्तों में से एक थे। और होना भी ऐसी ही था। जब तक किसी बड़ी जिन्दगी का ख़ात्मा तकलीफ़ से नहीं होता, कुद्रते-कामिला मोज़ज़न नहीं होती। यह एक उसूल है। मगर मेरा काम जितनी जल्दी शुरु हुवा, वाक़ई तौर पर उतनी ही जल्दी ख़त्म भी हो गया। बल्कि मैं यह कहूंगा कि मेरे जाते ही दूसरी हवा चलने लगी। असलियत काफूर हो गई। इसमें मैं खास खास लोगों को छोडता हूं।

तुम्हें कृष्ण जी का किस्सा शायद याद होगा कि अपने जाने से पहले यदु वन्शियों का ख़ात्मा कर दिया मगर वो बहुत बड़ी ताकत थी। मैं ऐसा न कर सका। आखिर को मुझे उन्हीं की पैरवी करना पड़ी। सब से बड़ी ग़लती जो कुछ लोगों ने मेरे बाद की है, वह यह है कि कूड़ा करकट अपनी तब्लीग की ज़ोअम में आकर भर लिया। बरबादी सब लोगों की लाज़मी है। बुनियाद पड़ गई, तकमील जब हो जाये। हिन्दुओं की तबाही की बुनियाद कुछ लोगों ने पहले ही से डाल रखी है। जिस खित्ते से हमारी क़ौम को नफ़रत थी उस की गुलुतराशी के लिये वहीं आदमी पैदा किया गया। मैं जानता था, इसीलिये हमेशा हिन्दूस्तान को वुक़अत की निगाह से देखा।

हज़रत मुहंम्मद साहब (सल०)= तुमने किसी वक्त मुझे ख्वाब में देख था कि मेरी कब्रशक हो गई है और मैं बरामद हुवा हूं। मेरी असली शम्ल वही थी जो तुम ने देखी थी। मैं ने तुम्हारे सिर पर हाथ फेरा था और ख़ुशी में दुआ दी थी कि तुम को फ़लाह नसीब हो। । तुम्हारे हज़रत ने जो अभी फ़रमाया है कि तुम पर वही (वहीय) नाज़ल होगी। यह सही है। जबराईल को हुक्म दे दिया गया है, और वो तुम्हारे पास है।

हमारे हज़रत किब्ला = जबराईल अक्ले-सलीम को कहते हैं। तुम्हारे नये टायम से एक बज कर 15 मिनट पर खाना-ए-काबा में जहूर हो गया। पौने सात बजे शाम के रामेश्वर का उलिया को मक़ाम शुरू हो गया। आठ बज कर 20 मिनट पर उलिया का मक़ाम तय कर के इब्द के मक़ाम पर लाया गया और उस से आगे वाले मक़ाम

की भी रोशनी फैंकी गई।

X-X-1944

हजरत मोहम्मद साहब = कल जो काम ख़ाना-ए-काबा का शुरू किया था और उस के अतराफ के बाशिन्दगान को तबाही के लिये ले लिया था, उस दाय्रे को रफ्ता-रफ्ता बढ़ाते जाओ। ग़ोस साहब की जो हरकत भी वो मुझे भी नागवार हुई। तुम को इजाजत देता हूं कि अगर वो तुम्हारे काम में मुखिल हो तो इस दरजे से गिरा दो।

हमारे हज़रत क़िब्ला = आज 10 बज कर 55 मिनट, बरोज मंगल, वक्त सुबह के पण्डित रामेश्वर प्रसाद को इब्द के मक़ाम से इज़ाजत ब-मुवाजा बाबू मदन मोहन लाल दी गई।

ह० रामचन्द्र

तस्दीक की।ह० मदन मोहन लाल 10/10/44

सब से पहले हमारे हज़रत किब्ला मौलाना साहब को सिलसिले के तबादले की रोशनी मिली थी।

11-X-44

हज़रत मोहम्मत साहब (स०) = जो सिलसिले कि मेरे नाम पर क़ायम किये गये हैं, उनको क़ायम रखने की ज़रूरतें नहीं।

सिलसिले एक दम तोड़ दो और अपने पीर से उस में मदद लो।

हज़रत मोहम्मद साहब (स०) = अगर वो ग़ोस साहब जो तुम्हारी मातहती में काम कर रहे हैं, अगर तुम्हारे कामों में मुख़िल हों तो उनके कह दो कि अगर इस फेल से बाज न आये तो मैं तुम्हारी बैअत शिकस्त कर दूँगा। और कुलियतन सलब कर लूंगा। कोई बुज़ुर्ग तुम्हारी मुताबअत से मुह नहीं मोड़ेगा। मगर यह काम तुम्हारे ही ताल्लुक रहेगा। यह लफ्ज़ मैं ने दीगर कामों के सिलसिले में लिखया है। अगर तुम्हारे पीर साहब कुछ दिनों इस दारे-फ़ानी में और क़याम करते तो ड्यूटी उन्हीं को अन्जाम देनी पड़ती। एक ताकत थी जो इस काम को करने के लिये महफ़ूज रखी गई थी, वो तुम में मुन्तक़िल कर दी गई। तुम्हारे पीर साहब इस रम्ज से वाकिफ थे। यह काम उनकी तबियत के खिलाफ था। इसलिये तुम्हारे हज़रत ने और भी जल्द वापसी की। तुम्हारे पीर में आसारे-नबुवत नुमायाँ थे जो कोई न जान सका। मासूमियत दरजाये-कमाल पर थी और यह मेरी ख़ास निस्बत है।

•

हमारे हजरत क़िब्ला = आगाज़े-आलम से पहले जो कैफ़ियत एक वहम मात्र ज़ात में मौजूद थीं, छोब पैदा होते ही उनको एक हलका धक्का लगा। नक्शा दिखाया। जिस तरफ झटके का push ज्यादा था उन्होंने एक मोटी धार की शक्ल अख्तियार कर ली। या यूं कहें कि उस में वो जर्रात जिस से कि दुनियाँ का काम चल सके,मोटे और ताक़तवर थे। दूसरे अल्फ़ाज में यह भी कहा जा सकता है कि

वो ताकतें जो मैं ने अभी बयान की हैं, मुख्तलिफ अख़लाक के हरकत देने के लिये थी। वो ही विवेक शक्ति के नाम से मशहूर हुई। किसी में अक़ल का हिस्सा ज्यादा था। किसी में घूंसाबाजी का माद्दा ज्यादा था। किसी में जहालत की तारीक हालत थी। इन धारों के उतरते ही उन्होंने वो हल्के परमाणु घसीटना शुरू किये कि लताफ़त से कुछ ज्यादा गहरे हो गये।

महात्माओं ने जब या फ़ल्सफ़ा study किया तो उन्होंने इस के मुख्तलिफ़ नाम रख दिये। इन सब का ताल्लुक इन्सान के जिस्म से है। अंभी जो ज़िक्र गणेश और स्वामी कार्तिक के बारे में था, वो महज घडन्त है। और गणेश की प्रतिष्ठा ज्यादा करने के लिये किस्सा गढ़ दिया गया है। यह वो ताकत है जिस का गुदा चक्र से ताल्लुक है। और यह मूल द्वारा जाकर दिमाग तक पहुंचती है। हठ योग में सब से पहली सीढ़ी यह ही है और राज योग में आखरी। यह मक़ाम, गो कहने में बड़ा ख़राब है मगर इस के जागते ही (नक्शा सामने आया) यह सब खुल जाते हैं और शक्तियां पैदा हो जाती हैं। जमान्ना बदलता गया, अन्धेरा छाता गया। ठोसपना बढ़ता गया, असलियत भूलती गई। मौजों की तलाश रही, पानी से वास्ता नहीं रक्खा। अक्ल पर परदे पडते गये। नतीजा यह हुआ कि अपनी प्रतिष्ठा के लिये और क़ाबलित क़ायम रखने के लिये नये-नये क़िस्से गढ़ दिये गये। जिस से पढ़ने वालों को कातिब की जूलानी तबाअ का सबूत मिले। नतीजा यह हुवा कि महज किस्से ही किस्से रह गये और उन्हीं की शकलें बदल कर पूजा होने लगी। मौजों में असलियत का पता नहीं।

12-X-44

हज़रत मोहम्मद साहब (स०) - मैंने सुबह हुक्म दिया था कि इन सिलसिलों को तोड़ दो। देर करने की जरूरत नहीं। फ़िलहाल अपना सिलसिला क़ायम रक्खो। नक्शबन्दी सिलसिले पर अभी हाथ न डालो तावक्तेकि उस की जगह पर दूसरा सिलसिला न आजावे। मैंने इस का इन्तजाम तुम्हारे पीर के सुपुर्द किया है। अपने पीर साहब को बुला लो।

हमारे हज़रत क़िब्ला= सिलसिले का तोड़ देना जरूरी है। आज ही इस का काम ख़त्म कर दो। नक्शबन्दी सिलसिला फ़िल्हाल क़ायम रहेगा।

हज़रत कृष्ण जी = ये सिलसिले जिन को आज तुमने तोड़ा है, यह सब मुझ में लय होंगे। फ़क्त एक सिलसिला जो मुझ से ताल्लुक रखता है, रह जावेगा। मेरा तुम से आज बराह-रास्त सम्बन्ध जुड गया। मैं इस एत्काद पर खुश हुआ। तुम्हारी ग़लतियां सब मुआफ की गई।

हमारे हज़रत किब्ला = एक बात मैं बग़ैर कहे हुये नहीं रह सकता गो तुमने गुस्ताख़ी और rashness की मगर उस में मेरी मुहब्बत शामिल थी। यह मुरीद की पहली मिसाल है जो मेरे मुक़ाबिले में किसी नेमत-ए-अज्मा को लेने के लिये तैयार नहीं। इस हालत को लोग तरसैंगे और यह तुम्हारे ही हिस्से में रहेगी। मैंने क़ायदे की पाबन्दी तुम से करा दी जो कि लाज़मी थी। तुम मेरे ही रूप को कृष्ण का रूप समझो।

बाबू मदन मोहन लाल= क्या आप के ख्याल में ऐसी मिसाल हो सकती हैं जो ऐसी बड़ी ख़ुदाई नेमत को अपने पीर के सदके में खैरबाद कहदे। तुम्हारा नाम हमेशा जिन्दा रहेगा। एक बात बहुत राज़ की मैं तुम्हें बताता हूं कि यकगोना तुम में कृष्ण की फ़नाईयत मौजूद है। इसका इल्म तुम को आज हुआ। यह बात अज़खुद मुन्तक़िल हो गई थी। मुझे खुशी है।

हज़रत कृष्ण जी= मेरे वाक़यात जो लोगों ने मेरी जीविनी में लिखे हैं उस में बहुत कुछ बढ़ाया गया है। मेरी जिन्दगी बहुत सीधी सादी रही है। खेल कूद का मुझे शौक था। गीता में बहुत कुछ लोगों ने अपनी आमेजिश कर दी और मेरे अल्फ़ाज को पलट दिया। पीर हो तो ऐसा ही हो जैसे तुम्हारे। पीर तुम्हारा सा हो। बस एत्काद की तारीफ़ करता हूं।

हमारे हजरत क़िब्ला = मैंने तुम को जुमला मुसलमानी सिलसिलों की इजाज़त दी थीं अब उस को वापिस लेता हूं इसलिये कि उनकी टूटफूट हो चुकी है। सिर्फ़ एक ही सिलसिले से इजाज़त रह गई।

मदन मोहन लाल को जिन खानदानों से इजाज़त दी गई थी, बिस्तस्ना नक्शबन्दी मुजद्ददी, मिज्रहैरी, मैं उनको भी वापिस लेता हूं। यह सिलसिला बस अब एक ही रहेगा। बिरजू को जो इजाजत बहुत ख़ानदानों से दी गई और यह मौलवी साहब ने दी थी, वो भी वापस लेली गई।

कृष्णा जी= यह मेरी ही मन्शा थी जिसकी तोड़ फोड़ हजरत मोहम्मद (स०) ने की। अब सिलसिला सन्त मत रहेगा। लोग कसरत में पड गये थे। बाहम सिलसिला के लोगों में ताल्लुकात की कमी पड़ गई थी। बैअत करने का अब नया ढंग होगा।

हजरत क़िब्ला= इस के खिलाफ जिस ने बैअत की वो खिलाफ होगी। तुमअहकाम जारी कर देना। तुम्हारे एत्काद की तारीफ बुजुर्गें में खूब हुई। गो तरीक़ा गुस्ताख़ाना था। अगर मैं तुम्हें ख़बरदार न कर देता तो अमामत में झगड़ा पड जाता। और मतलब अधूरा रह जाता। कबीर पन्थी इजाजत तुम्हारी क़ायम है। मुझ को कबीर पन्थ, दादू पन्थ और दीगर पन्थाईयों की तरफ से इजाज़त थी। वो इजाज़तें सब क़ायम रहेंगी। बैअतें सब मेरे हाथ पर होंगी और उन का ताल्लुक कृष्णा जी से रहेगा। बैअत के वक्त यह इक़रार लिया जायेगा कि वो जुम्ला बातें जो कृष्णा जी महाराज ने असूलन कहीं है उनकी पाबन्दी करूंगा। यह बात मैं आयन्दा के लिये बताता हूं। जब मौका पड़े तो मुझ से पूछ लेना। शिज्रे के बारे में तुम्हारी जबान से ठीक निकला। यह भी होता है मगर ज़रा क़ब्ल अज़ वक्त है।

श्री कृष्ण जी महाराज= तुम्हें आज के वाक़यात से रन्जीदा नहीं होना चाहिये। मैं तुम को बराह-रास्त अपने सिलसिले में लाना चाहता था। तुम से मेरा सिलसिला ईजाद होता। तुम ने अपने पीर को शामिल कर लिया। यह बात मुझे पसन्द आई। सिर्फ तरीक़ा ख़राब था। उस को मुआफ कर दिया।

नोट= मेरा एहसास यह था कि गुरु महाराज को छोड़कर एक

धार मेरी श्री कृष्ण जी महाराज से जुड़ी (connect) हुई है और हमारे पीर उस में शामिल नहीं है। इसलिये मैं ने अर्ज किया कि मैं अपने पीर के ज़रिये से चाहता हूँ। जवाब में देर होने पर मैं इस connection को cut off करना ही चाहता था कि हमारे पीर की तरफ से निदा आई कि ऐसा न करना, मैं भी शामिल हूँ।

हमारे हज़रत क़िब्ला= जवाब में देर इस वजह से हुई कि वह धार तुम्हारे कहने पर मुझ से हो कर रुजू करना चाहते थे।

13-X-44

अवतार काल और महाकाल से आया करते हैं। जब ज्यादा सख्ती की ज़रूरत होती है तो महाकाल से ज़हूर होता है और जब उस से कम सख्ती की ज़रूरत होती है तो काल (के मकाम) से अवतार होता है। इन में मजमलन शक्ति होती है। दोनों शक्तियाँ उनके अख्तियार में होती है। उनका भगत रूप भी हो सकता है और काल रूप भी। एक हाथ में तलवार होती है और दूसरे हाथ में किताब। सत् पद से आने वालों को यह अख्तियार नहीं होता। उनकी क़ुदरती शक्ति संग्राम करने में काम नहीं देती। हज़रत मोहम्मद साहब (स०) दया के भण्डार थे। और दीगर अवतार जो जानवरों के नाम से मौसूम किये गये हैं, यह घडन्त और गपं हैं। रामा, कृष्णा सिर्फ यह ही दो अवतार हुये हैं।

मत्स्य अवतार = हिन्दुओं का जमाना जब जवाल पर हुवा तो ऋषि लोग भी अपनी उस हालत से जो उनके शान शयाँ थीं, गिरते

गये। जब गिराव की सूरत पैदा होने लगी तो इज़्ज़त और प्रतिष्ठा का ख़्याल पैदा हुआ। होते-होते यह नौबत पहुंची कि हर ऐसे शख़्स ने अपनी एक किताब लिखना शुरू कर दी और कोई किस्सा ऐसा घड़ लिया जिस से आगे आने वाले लोग उन को इज़्ज़त से याद करें। जिन साहब ने मत्स्य अवतार की बुनियाद डाली, उन का हाल मैं तुम्हें बताता हूं। उन्होंने खूब तपस्या की और अपने क़वा-बातनी develop कर लिये। नक्शा सामने आ गया। इन की पहुंच उस ख़याल तक नहीं हुई थी जहाँ कि development का ख़याल काफूर हो जाता है। जो कुछ भी थी, उसी को उन्होंने काफी समझा। उनको नहाने का बड़ा शौक था और मछली पकडने की आदत थी। यह मछलियाँ पकड-पकड कर दरिया में फेंक देते थे। यह एक क़िस्म का उनके लहु-व-लुआब में दाखिल हो गया था। एक रोज़ ख़याल पैदा हुआ कि नुक्स को आम निगाह में दूर करने के लिये कोई अज़ीब बात घडना चाहिये ताकि उन का ख़्याल जो मेरी तरफ खराब हो रहा है, ठीक हो जावे। और आयन्दा आने वाले मेरे इस ऐब को निगाह न करें बल्कि इज़्ज़त की निगाह से देखें। सोचते-सोचते वह ही मछलियाँ उनके ख़्याल के दरिया में उछलने लगीं। नतीजा यह हुवा कि कमन्डल में एक छोटी मछली उन्होंने डाली, उस के बाद उस से बडी मछली पकडी जो कमन्डल में न आई। सब को दरिया में फेंक कर चले आये और किताब का लिखना शुरु कर दिया। इसका सबूत कितना अच्छा है कि वही ऋषि जिन्होंने लिखा है कि वह मछली जब कमन्डल में न समाई तो दरिया में फेंकी गई। जब दरिया में न समाई तो समन्दर में डाली गई। और जब समन्दर में न समाई तो वो मछली

उनसे हमकलाम हुई। दरिया की रवानी हमेशा zig zag way में होती है। इस के मानी यह हुये कि जब मछली बढ़ी तो उसने कितने बल लिये और फिर ऐसा कौन ताकतवर आदमी होता जो समन्दर में उसको डालता। लोगों ने अक्ल से काम नहीं लिया वरना यह किस्सा खुद घडन्तता का सबूत है।

मेरी position और थी और तुम्हारी और है। मैं किसी पिछली लिखी हुई किताब को cross नहीं करता था। तुम्हें सही बात कहना चाहिये और reasonable हो। एक बात मैं तुम्हें बडे राज की बताता हूँ। जिनका कारण शरीर मौज़ूद हो वो अवतार नहीं। तुम को मालूम है कि दुर्वासा रुद्र का अवतार क्यों कहे जाते हैं। उन्होंने तरक्की करते-करते उस मन्डल से अपना सम्बन्ध जोड़ लिया जहाँ से तबाहकुन ताक़तें नीचे उतरती हैं। उन्होंने उस में खूब शनावरी की और ताक़त के बहुत बड़े हिस्से को अपने अन्दर जज्ब कर लिया। लिहाज़ा यह जहां पहुंचते थे, वो ही ताकत जो उन में कूट-कूट कर भर गई थी, उनसे इज्हार होती थी। यह ताक़त तबाहकुन होने की वजह से दूसरों को ईज़्रा पहुंचती थी। रंजो-अलम में डालती थी। और आंसू बहाने में मददगार होती थी। यह ताक़त चूंकि कमाल दरजे तक उसको अपनाने की वजह से उन की हो चुकी थी और इस लिये उन में उतरी हुई थी। इसीलिये उनको रुद्र का अवतार कहते हैं। उनको मोक्ष नहीं मिला। चूंकि वो ईश्वरी ताकत थी, इसलिये छोटे महात्माओं ने और दीगर शख्सों ने डर की वजह से इन की इज्ज़त की। इस ताक़त का कहीं जवाब न था।

श्री कृष्ण जी : मैं ने ऋषियों की मरजाद क़ायम रखने के लिये उनकी इज़्ज़त की।वो मेरा किस्सा जो द्रौपदी और इन से ताल्लुक रखता है, यह लोगों को सबक देने के लिये मैं ने किया था। यह सही है। वो अपने ऋषिपन से इसलिये नहीं गिरे कि मेरी कोई मन्शा उनके ख़िलाफ न थी। तुम्हारे पीर की चढ़ाई इस से बल्लियों ऊँची थी।

नुस्खा दुरस्ती दिमाग मौसम सर्मा में सुर्ख चन्दन और गरमी में सफेद चन्दन 11/2 माशा और दाना इलायची सफेद 11/2 माशा। इन दोनों का सफ़ूफ़ तैयार कर के एक वक्त सुबह या शाम को फकी लगावे। अगर पागलपने की हालत ज्यादा हो तो चन्दन सफेद इस्तेमाल करे। सुर्ख इलायची के छुक्कल का पानी तीन रोज़ तक बराबर जब प्यास लगे, इस्तैमाल करावें। मतलब यह है कि पागलपन ज्यादा हो तो मौसम सभी में भी सफेद इलायची इस्तैमाल करे। फंकी हमराह अर्क मुन्डी एक छटाक। और अगर अर्क उम्दा हो तो आधी छटाक।

14-X-44

अज़ीज रामचन्द्र ने एक और ईजाद निहायत पुर असर की है। मग़रबी लोगों ने माद्दा को ज्यादा तर destruction की तरफ रुजू किया और जो मफ़ादे-आम के लिये काम किया उसमें भी कुछ न कुछ ख़राबी बाक़ी रह गई। इन्होंने वो ईजाद की है जिस में माद्दी ताक़त से रुहानियत पर असर पड़े। इन को इस से ज्यादा सोचने की इजाज़त देता हूं।

वो ईजाद यह है कि जिस तरह से रूहानी विलायतों और तवज्जोह में मख्तलिफ रंग हुवा करते हैं, इसी तरीके से बिजली के मुख्तलिफ रंगों से जो शीशे के जरिये से लाये जा सकते हैं, मामूल पर डाले जावें। इस में एक तरमीम मैं करता हूं कि जितनी तेज बिजली होगी उतना ही तेज असर शीशे के जरिये मामूल पर पडेगा। Dark colour जो धूमैला हो, कुबरा के लिये अच्छा रहेगा। इस से आगे (उलिया के लिये) ज़र्दी मायल सफेद रंग अच्छा रहेगा। सुग्रा के लिये reddish (गुलाबी) रंग। किसी character अगर खराब हो तो इन रंगों के जेरे-अस़र और साथ-साथ इसी किस्म की तवज्जोह भी बडा अच्छा काम करेगी। इसी तालीम को हज़रत मोहम्मद साहब (स०) ने कृष्ण जी से लिया था यानी सलूक के साथ मजजूबियत बहुत हल्की हातल में। यह ही तरमीम श्री कृष्ण जी महाराज ने की थी। रामावतार में सिर्फ सलूक ही सलूक था। यह एक बहुत बड़ी बात है। तुम को complete destruction करना होगा।

श्री कृष्ण जी महाराज= अपनी पैदायश के वक्त मैं ने महाभारत का जुद्ध(युद्ध) ख़याली तौर पर खत्म कर दिया था। और मेरी आखीरी हिस्से जिन्दगी में वाकई तौर पर इन का ख़ात्मा हुआ। मेरा अवतार उस ज़हरीले असरात को जो वायू मन्डल में शमिल हो गये थे, ख़त्म करने का था। किताबों में बड़ी आमेज़िशे हो गई हैं। इन सब को दूर करना है। लोगों ने गोपियों के साथ क्या-क्या इल्ज़ाम मुझ से मन्सूब करे और मेरी उम्र का लिहाज न रखा कि आया इस उम्र में कोई शख्स इस बात को समझ भी सकता है। अक्ल के दुश्मनों ने इन को सही मान लिया और इस के ज़िम्मेवार ब्राह्मण हैं।

इन लोगों का इन्तज़ाम भी हो चुका है। इस का completion इसी सिलसिले से होगा। इस के बारे में तुम्हारे पीर साहब बहुत कुछ कह चुके है, जो सही है। अगर जानवरों के ख्वास देखता हूं, तो गौर से देखने पर इन लोगों में बहुत कुछ मिलेंगे। मेरे जमाने में जाति की तफरीक ऐसी न थी। इन लोगों की वुक़अत उन लोगों के अभ्यास और इल्म की क़ाबलियत पर थी। वाक़यात सुने होंगे कि एक तवायफ का लडका ब्राह्मण कहलाया। अब इस के बरअक्स है। जनेअ की वुकअत इस हद तक बढ़ गई। जनेऊ की ईजाद ब्राह्मणों को जाति तौर पर ब्राह्मण मानने के लिये की गई। एक शूद्र भी ब्राह्मण हो सकता है ख्वाह उस के गले में जनेऊ हो या न हो।

हमारे हज़रत क़िब्ला = यह बातें जो तुम को बताई जा रही हैं हर जगह पर लिखने की जरूरत नहीं वरना लोग तुम्हारी जान के दुश्मन हो जायेंगे। अगर इत्फ़ाक से कही ऐसा हो जाये कि किसी ऐसी शख्स के यह राज़ गोश गुजार हो जाये और वो दुश्मन साबित हो तो अमामत की position में उस को खत्म कर देना। यह मुमकिन है तुम्हें दुनियाँ में बहुत दिन तक रहना पड़े। यह जरूरत पर है, जैसा मुनासिब होगा, किया जायेगा। रामेश्वर को मैं कुछ स्पेशल पावर्स देना चाहता हूं कि वो इस ख़ित्ते में काम करें।

इस शख्स (चतुर्भुज सहाय) की कोई पीढ़ी नहीं तर सकती। इस शख्स को अपने यहाँ कभी मत बुलाना। श्री कृष्ण को मुआफ कर सकता हूं। तुम को मैं अख्तियार देता हूं कि तुम इस शख्स पर जितना चाहो जुल्म कर सकते हो। और बाबू मदन मोहन लाल भी इस में कोताही न करें। इन के बारे में मुझ से कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं।

नन्हें को ख्वाब में भी खयाल न था कि यह अज़ीज रामचन्द्र को हस्ती बनने वाला है। इसको कौन सी ऐसी ताक़त थी जो रोक सकती। इस ताक़त को मैं ने इस्तेमाल करने के लिये इनको मुमानियत कर दी। सिर्फ उस काम में यह इस्तेमाल कर सकते हैं जिस के लिये यह आये हैं। अगर यह इस वक्त में चक्र का आवाहन कर दें तो वह ही चक्र घूमने लगेगा। मैं ने इन बातों से बहुत पेश्तर, चूंकि वाक़िफ-हालात था, इनको मना कर दिया था। यह कभी कृष्ण का काल रूप आवाहन न करें। नन्हें ने अपनी गपोड़ में किसी वक्त इस का तजकिरा किया था। यह अहसास उन का सही था कि हस्ती जहूर पजीरं हो गई, गो वो इस को जानते न थे। इस के बारे में जो कुछ बुजुर्गों ने लिखा है वो इश्तयारा है। एक बात इस में राज की और है कि कंवारी कन्या से इस की पैदायश बतलाई गई है। यह उनके खयालात का इज्हार था।

श्री कृष्ण जी महाराज = महाभारत का अंग काबिले-तरमीम है। मैं ने अर्जुन को कुबरा की कमाल की कैफियत दिखलाई थी। और वो मकाम दिखलाया था जहां कि वाकयात होने से पहले हो चुके हैं। और शर्णागत मार्ग समझाया था। जिस के लिये मेरा अवतार था। इस में जो पातंजली वग़ैरा के हवाले हैं वो गलत है। बस यही उपदेश था (नक्शा सामने आ गया)

हमारे हज़रत क़िब्ला= इस नक्शे में जो तुम ने अन्धेरी देखी थी और इस से पहले बेशुमार फौज। यह वही नक्शा है जो अर्जुन को दिखाया गया।

श्री कृष्ण जी महाराज= बस इतना ही वाअज़ था जो मैं ने अर्जुन को दिया था।

श्री कृष्ण जी महाराज= यह महाभारत का नक्शा तो दिखला दिया। गाण्डिव धनुष इस के बारे में तुम्हारे पीर फरमा चुके हैं। इलावा इस के उस का connection काल चक्र से था। दुर्योधन बड़ा कामी था और वो इस क़दर अन्धा हो गया था कि नेक व बद की तमीज़ उससे नहीं रही थी। उस के असरात सब में फैल चुके थे। कर्ण इत्यादि सब उस के जेर असर थे। जब मैं महाभारत बचाने के लिये पैगाम देने गया तो उस के अहंकार ने मुझ को क़ैद करना चाहा था। बस चूंकि खुद हथियार लेना मंजूर नहीं था, पांचों पान्डुओं को सामने कर दिया। यह मेरी शक्ति थी। द्रौपदी का अवतार महज महाभारत कराने के लिये हुआ था। लोगों ने यहां तक मुबाल्गे से काम लिया है कि ऐसी पतिव्रता स्त्री के पांच पति क़रार दे दिये गये हैं। वो फ़कत एक को व्याही थी और उसी की बीवी थी। उस से ख़ायफ़ सब रहते थे। धर्मराज (युधिष्ठिर) को यह मालूम था कि यह शक्ति का अवतार है। जिस तरह मेरे लिये लोगों ने बहुत सी बातें गढ़ ली है, ऐसी ही जुम्ला बातें जो द्रौपदी के लिये कही गई हैं, और जो उस के character पर धब्बा लगाती है, गलत है।

नियोग= कुन्ती के बारे में जो नियोग का ज़िक्र है, वह यह है कि उस ने अपने आत्मिक बल से मुख्तलिफ देव शक्तियां जाग्रत की हालत में अपने बतन में खींची थीं। उस वक्त में आत्मिक बल इस क़दर बढ़ा हुवा था कि हर कुदरत की ताकत को एक जिन्दा चीज में

तब्दील कर देते थे। कर्ण का पैदायश का क़िस्सा सही है। जिन औरतों ने नियोग किया है और उसके ज़रिये से औरलाद पैदा की है, वह आम तरीक़े से नहीं थी। औरत को किसी शक्ल में एक से दूसरा ख़ाविन्द करना जायज़ नहीं है। इस से वर्णशंकर औलाद पैदा होती है। उस वक्त में औरतें बेवा नहीं होती थी और जो लोग मैदाने-जंग में मारे जाते थे, किसी न किसी शक्ल में वो उन का साथ देती थीं। ब्रह्मचर्य दोनों का ठीक होता था। इसलिये ख़्वाहिश ज्यादा नहीं होती थी। इलावा इस के तालीम के स्कूल खुले हुये थे। बच्चों को शुरू ही से नेक तालीम और तरबीयत दी जाती थी और उन को नेक ख़याल बनाया जाता था। हर ऋषि का यह फ़र्ज था कि वो बच्चों की तालीम और तरबियत पर मुख़ातिब हो। खिलाफ़ क़ानून काम करने वालों को राजा की तरफ से सख्त दण्ड दिया जाता था। राजा का ख़जाना पब्लिक के लिये था और उसी के लिये ख़र्च होता था। ज़मीन में रुईदगी अच्छी थी। फ़सलें अच्छी पैदा होती थी। लोग फ़ारिगुलबाल थे। उन की जरूरतें बहुत कम थीं। उनकी ज़िन्दगी का ज्यादा हिस्सा यादे-इलाही में सर्फ होता था। जिस race में मैं पैदा हुवा था उस का फ़ारिगुल्बाल देखना चाहता हूं। वो काफ़ी गिर चुके हैं और इस के ज़िम्मेदार ब्राह्मण हैं। उन को दोज़ख नसीब होगी। इस में उन लोगों को छोड़ता हूं जिन्होंने अपने आप को ब्राह्मण होते हुये ब्राह्मण नहीं समझा। मेरा मतलब उन बेवकूफों से है जिन की हालत जानवरों से ज्यादा अच्छी नहीं है मगर पैर पुजाने के लिये तैयार हैं। जैसे जेल में ब्राह्मणों की तादाद पाई जाती है वैसे ही नरक में उनकी तादाद ज्यादा मिलेगी। नियोग से यह मतलब नहीं है कि मैथुन शक्ति से औलाद पैदा की जाती हो। मेरे सिर्फ आठ रानियाँ थीं। रुक्मिनि सब में श्रेष्ठ थी। राधा मेरी स्त्री नहीं थी,

वो मुझ से उम्र में बड़ी थी। मैं उस वक्त बालक था। उसने मुहब्बत जरूर मुझ से पति भाव से की थी मगर खयाल नेक था। महाभारतमें जो कुछ बढ़ाया गया है, यह ब्राह्मणों की तबाअ-आज़माई है। । इन को तलवार के घाट एक दूसरी शक्ति उतारेगी।

हमारे हज़रत क़िब्ला= कृष्ण जी महाराज ने जो कुछ फ़रमाया है, हरफ़-ब-हरफ़ सही है। द्रौपदी के पांच खाविन्द होना, यह बाम मार्गियों की ईज़ाद है।

वेद का इल्हाम ऐसे ही हुवा था जैसे कि इस वक्त तुम पर हो रहा है। सिर्फ़ ज़माने के मुताबिक शक्ल दूसरी थी। अगर तुम्हारा ताल्लुक उसी तरीके का कर दिया जाता तो तुम समझ नहीं सकते थे। ब्रह्मचर्य पुश्त दर पुश्त होने की वजह इन लोगों में कुदरती तौर पर नक्शा ऐसा मौजूद रहता था जो क़ुदरत की आवाज से मिलता जुलता हम-आहंग रहता था। उस को खोल देने की देर होती थी। यह ही वजह है कि अब श्रुति ने दूसरी शक्ल अख्तियार की। आवाजे-गैब यह ही है।

बसवाल रामेश्वर प्रसाद फ़रमाया= आदमी का हर काम दिमाग में नक़्श बनाता है और वो कारण शरीर में in touch रहता है। जब एक जगह से रुख़सत हो कर दूसरी जगह जन्म लेता है तो वो मसाला मौजूद होता है और अपने साथ लाता है। अगर मौजूदा ज़िन्दगी में उस ने शुभ करम (कर्म) नहीं किये हैं तो वो नक़्श जो पिछले जन्म में बना कर लाया है, जब आब व हवा मुवाक़िफ मिलेगी, भोगना शुरु हो

जायेगा। और इस जन्म में जो कुछ भी कर्म किये हैं, उस में से अक्सर कर्मों की सज़ा और जज़ा फौरन मिलेगी। और बहुत से भोगने के लिये आगे जायेंगे। यह सिलसिला मुसलसल ता क़यामत चलता रहेगा। एक के बाद दूसरी चीज़ भोगने को आजावेगी। और जब तक इस का ताता ख़त्म न कर लेगा, यह बात मुसलसल जारी रहेगी। अब सवाल यह पैदा होता है कि इन भोगों को कैसे ख़त्म किया जाये।

इस की तरकीब यह है, जो सब से आला है वो अपने आप को क़िसी के सुपुर्द कर दें और उनसे (भोगों से) ताल्लुक न रक्खे क़ुदरत में कोई वही खाता नहीं है। इन्सान अपना खुद fate बनाता है और ख़ुद उसके भोग की शक्ल पैदा कर लेता है। मुकर्रर सवाल पर फ़रमाया= इस का जवाब मैं ऊपर दे चुका हूं कि जब आब व हवा मुवाफ़िक मिलती है, भोग की शक्ल पैदा हो जाती है। सूद दर सूद का सवाल नहीं। तिहाई और चौथाई इस में नहीं है। हर चीज गरमी से नशवोनुमा पाती है। समझ लेना चाहिये, अगर संस्कार जो अपने साथ लाया है, इश्क-हक़ीकी की गरमी से जितनी ज्यादा in touch रहेंगे, उतनी ही जल्दी भोग की शक्ल पैदा होगी। और जितनी ही अभ्यासी में भोग की ताकत है, उतना ही वो आगे जायेंगे। हमारे यहां मौज़ूदा कर्म का नक्श बनना, अगर इश्क सादिक है, बन्द हो जाता है। पिछला कर्म सिर्फ भोगना रह जाता है। यह भी एक फ़ल्सफ़ा है और बताया जा सकता है। मगर इस में वर्क के वर्क रंग जायेंगे। और जिस शख्स के जरिये से यह बातें उतर रही हैं उसका दिमाग मुसलसल इन बातों को इन्कशाफ करने में इतने वक्त तक काम न दे सकेगा। और इस के समझने की ज्यादा ज़रूरत भी नहीं मालूम होती। मैं ने थोडे से

अल्फ़ाज़ में बहुत कुछ समझा दिया। अगर practically देखना चाहो तो मुमकिन है और वक्त भी कम सर्फ़ होगा। मगर उस में एक बात ज़रूर है कि अगर वो संस्कार नीचे उतारे गये तो उस के भोग की शक्ल फ़ौरन शुरू हो जायेगी, जो मसलेहत नहीं। अज़ीज रामचन्द्र ने अपनी डायरी में संस्कार के एक ज़खीरे का उतरना अपने दिल पर बतलाया है, इस को भोगते हुये उनको तेरह साल हो गये।

15-X-44

मुझ से ऊपर के connection सब काट दो। इस के सिवा न कोई हुक्म हो सकता है और न कोई तदबीर समझ में आती है। हुक्म खुदा से मजबूरी है। जो हज़रत मौलाना साहब के हाथ पर बैअत हैं उनको मेरे हाथ पर बैअत करना होगी। दूसरे मायनों में यह है कि जो मेरे हाथ पर बैअत नहीं है उनकी बैअत शिकस्त हो जायेगी। मजबूरी है। जिस को मैं ने मौलाना साहब के हाथ पर ख़ुद बैअत किया है, उनका ताल्लुक मुझ से रहेगा। उन को अज़ सरे नौ बैअत करने की ज़रूरत नहीं। मैं वो ताकत या असर अपने ही में खेंच लूंगा। मगर मुसीबत उन लोगों की है जिन को हमारे मौलाना साहब ने हज़रत खलीफ़ा जी के हाथ पर बैअत किया है। और यह ही हाल उन लोगों का होगा जिन को ज़नाब ख़लीफ़ा जी साहब ने अपने बुज़ुर्ग के हाथ पर बैअत किया है। जयपुर वाले डाक्टर को रोशनी दो कि इस सिलसिले ने अब यह रुख़ बदला है। और जुमला सिलसिले जो इस से (मुसलमानों से) ताल्लुक रखते हैं, खत्म हो गये हैं।

यह काम इशारतन तो किया जा सकता है मगर वाक़ई तौर पर भण्डारे के बाद करना। तुम अपनी चची साहिबा (बुआ साहिबा) को जब इजाज़त दो तो मुझ से connection क़ायम कर देना। उस के बाद इजाज़त देना। इस में जो मुश्किलात पड़े उन की बाबत मुझ से consult कर लेना।

5.00 pm श्री कृष्ण जी महाराज= भीष्म पितामह ने जो शान्ति पर्व में तहरीर किया है और गोश्त के बारे में जो ज़िक्र है, वो बढ़ाया हुवा है। गोश्त तन्द्रुस्ती के लिये ज़रूर मुफ़ीद है। भीम खता था। ईश्वर मार्ग में चलने वालों को गोश्त की तरफ़ रुख़ नहीं करना चाहिये। उनके लिये मुज़िर है। तुम्हारे पीर साहब भी इस (असूल) के मुवाफ़िक थे। तुम को बलिहाज तन्द्रुस्ती इजाज़त दी गई है। राधा से ज्यादा मुझ को किसी ने प्रेम नहीं किया। दूसरे नम्बर पर गोपियों का था। रास का मामला बढ़ाया हुआ है। श्रन्गार रस के शैक़ीन कवियों (शायरों) ने तबा-आज़माई की है। छत्रियों को शिकार खेलने की इजाज़त थी और अब भी है, मगर उन जानवरों की जो खूंखार हैं। भीष्म पितामह के मुक़ाबिले का कोई वीर (बहादुर) नहीं हुवा। अर्जुन उन से मुक़ाबिले में तिफ़्ल-मक्तब था। जूए का रिवाज उस वक्त में ज्यादा था। कोई कानून इस के मानाअ न था। भीम की will इस मामले में बहुत जबरदस्त थी। वो जैसा चाहता था, वैसा ही पासा पड़ता था। इसलिये उस को हटा दिया गया था। अर्जुन की जितनी तकलीफ़ का जिक्र है वो सब सही है। कीचक को भीम ने मारा था।

सवाल= गंगा जी से भीष्म पितामह की पैदायश का क्या वाक़या है? फ़रमाया= गंगा कोई देवी नहीं है महज पानी की धार है

और पानी में दवाओं की ख़ासियत मौजूद है। यह बात गंगा की प्रतिष्ठा क़ायम करने के लिये की गई है। भीष्म पितामह जी एक राज कुमारी के पुत्र थे। वो पान्द देश की रहने वाली थी। बहुत बहादुर थी। उसका ख़याल था और अभ्यास भी की बलवान पुत्र पैदा करना चाहिये, जिस का कोई सानी न हो। इसी ख़याल को ले कर वो अपने पति के साथ रही थी। बाक़ी इस के मुताल्लिक सब मुबालगा है। मल्लाह की लडकी का किस्सा गलत है। वो एक छत्रानी (क्षत्रानी)थी। जो चन्द अहद (इकरार) के साथ शादी करने पर राजी हुई थी। छत्री (क्षत्री) धर्म का पालन भीष्म पितामह जी से अच्छा किसी ने नहीं किया। राजा रामचन्द्र जी के बाद यह ही मिसाल है। मैं चाहता हूं कि तुम्हारे ज़रिये से इन मुत्फ़र्रिक किताबों की आमेज़िश दुरस्त हो जायें। महाभारत ख़त्म होने पर रामायन का हाल मुझ से पूछ लेना। वेदों में भी बहुत कुछ बढ़ाया गया है। वेदों की जख़ामत इतनी नहीं थी जितनी कि अब है। अफ़सोस यह है कि तुम संस्कृत नहीं जानते। वेद की सही व्याख्या मुख्तसर अल्फ़ाज़ में, जो लब्बे-लुबाब होगा अपने पीर से समझ लेना। बैअत करते वक्त वो असूल होंगे जो मेरे, मेरी जिन्दगी में थे। इस में तुम्हारे पीर भी मदद करेंगे। इस लिये कि ज़माने के लिहाज से उन में रद्दो बदल करना पड़ेगा। ब्राह्मण जाति अब रह नहीं सकती। इस का वक्त आगया है। तुम्हारी ज़िन्दगी काम करते ही गुजरेगी। तुम्हें मेरी प्रतिष्ठा क़ायम करना पडेगी। और तुम्हारे पीर तुम्हारे साथ रहेंगे। जो मेरा हुक्म होगा, वही हुक्म वो देंगे। तुम्हारी निस्बत मुझ से बराह-रास्त भी है और जरिये से भी। जैसा मौक़ा पड़े वैसा काम ले लेना। मेरी ताक़तें तुम्हारे पीर के ज़रिये तुम में पहुंचेगी। हुक्म बराह-रास्त भी हो सकता है।

हमारे हज़रत क़िब्ला= श्री कृष्ण जी महाराज ने एक बहुत बड़ा ज़खीरा तुम्हारे लिये reserved कर दिया है। तुम्हारे विसाल के बाद मैं ही काम पर तैनात किया गया हूं। यह हुक्म ख़ुदा है, इसलिये मजबूरी है। इसका इशारा मैं पहले भी दे चुका हूं कि इस की तहरीक हो रही है। तुम्हारी मुकम्मिल फ़नाइयत किसी में नहीं होगी।

बन्दरयाफ़्त मदन मोहन फ़रमाया= मुरीदैन तुम में फ़ना नबुवत की हद से नीचे तक हो सकेंगे। मकामे-नबुवत से किसी को तवज्जोह न देना। यह किसी और के लिये reserved की गई है। इस का उक्दा बाद में खुलेगा। तुम को किसी ने समझा नहीं। जो इस दरजे को पहुंचे उन से घर में रुकावटें पहले ज़रूर पैदा हुई है।

16-X-44 वक्त after 5.00 PM

श्री कृष्ण जी महाराज= महाभारत की लड़ाई 18 दिन तक रही। उस में दीगर विलायतों के शख्स भी शामिल थे। उन्होंने कुलियों का काम किया था। बब्रुवाहन का किस्सा सही है। ऐसा बहादुर अब तक पैदा ही नहीं हुवा। गुरु द्रौन में बहुत क़ाबलियत थी। बाण विद्या के उस्ताद थे। सब ने विद्या करीब-करीब उन्हीं से सीखी। मगर उन के कैरेक्टर (character) में एक बहुत बड़ी ख़ामी रही और वो क़िस्सा भील से निस्बत रखता है। उस की मुहब्बत और एत्क़ाद की उन्होंने दाद नहीं दी। यह क्षत्रीयपन के असूल के ख़िलाफ था। ब्राह्मण को हथियार चलाने की मुमानियत थी। यह दोनों उनके काम ख़िलाफ़े असूल रहे।

परसुराम और भीष्म पितामह जी का क़िस्सा सही है। इनकी बहुत उम्र हुई। शिखण्डी ही जडा था। यह क़िस्सा सही है। भीष्म पितामह जी अपने क्षत्री असूल से कभी नहीं हटे। मुझे महाभारत के ख़त्म करने के लिये बहुत सी चालें चलना पड़ीं। हाथी का नाम (अश्वत्थामा) वाक़ई यह रखा गया था। युधिष्ठर फिर भी झूठ नहीं बोले। समझाने से पहले मैं ने दूसरी आवाज़ जो इस वाक़ये को समझा सकती थी, द्रौन के कान में बाजे के जोश से आने ही नहीं दी। यह क़िस्सा कि झूठ की बदोलत राजा युधिष्ठर को नरक से निकाला गया था गलत है। दुर्योधन को एक अरसे तक नरक गामी होना पड़ा था इसलिये कि उस ने द्रौपदी की बेइज्जती में कोई कसर उठा नहीं रखी थी। मैदाने जंग में जो मारे जाते हैं, सब को बैकुण्ठ नसीब नहीं होता। जिन लोगों ने हक पर जान दी है और उनका कैरेक्टर ठीक रहा है, वो उम्मीद कर सकते हैं।

हज़रत क़िब्ला= कृष्ण जी महाराज ने दुर्योधन के बारे में जो कुछ कहा है, सही है। ऐसा शख्स बैकुण्ठ में नहीं पहुंच सकता। लड़ाई में मारे जाने के बारे में जो कुछ फ़रमाया है और जो शरायत दी हैं, सब सही है। द्रौण के बारे में जो कुछ कहा है,सही है।

श्री कृष्ण महाराज= अश्वमेध यज्ञ सही है। एक घोडा छोडा जाता था, जो कोई उस को पकड़ता था उस से लड़ाई होती थी। जब घोड़े को अपने स्थान पर वापस ले आते थे, तब जग विजय का डंका बजता था और हवन होता था। उस हवन में यह घोड़ा चढ़ाया जाता था। गोमेध यज्ञ बढ़ाया हुआ है और उस के ज़िम्मेदार दूसरे लोग हैं। बैल का क़िस्सा जिसका ज़िक्र था, गलत है।

नोट= इस में ज़िक्र यह था कि एक जगह पर महाभारत में यह तहरीर है कि एक राजा नरसुद बैल रोज़ मार कर खाया और खिलाया करता था। महाभारत में बहुत से क़िस्से ऐसे लिखे गये हैं जो हिन्दुओं के रस्म व रिवाज पर खराब असर डालते हैं। यह सब घडन्त है। बहुत सी बातें ऐसी लिखी गई हैं कि जो क़ाबले-क़यास नहीं और अक़्लमन्द आदमी इस को यक़ीन नहीं करते। हिन्दुओं के ज़वाल के जो महाभारत के बाद हुआ, बहुत सी बातें ब्रह्मणों ने खुद बढ़ाई और बहुत सी उन से बढ़वाई गई ताकि इस धर्म को छोड़ कर लोग दूसरा धर्म अख्तियार करें। मगर अन्धों ने अपनी क़ौम की गुलु तराशी ख़ुद की। ब्रह्मण लोग सत बात पर जान देना जानते ही न थे। यह बिगड़े हुये ज़माने का हाल है। यह क्षत्रियों का हिस्सा था। मेरे ही ज़माने से ब्रह्मणों की नीयत ख़राब हो चुकी थी।

हज़रत मोहम्मद साहब(स०)= मैंने सिलसिले टूट जाने के अहकाम जारी कर दिये हैं। यह अलामतें जरूर पैदा हो गई है। कोशिश करने की ज़रूरत है। बुजुर्ग जो वाक़ई बुज़ुर्ग हैं, वो ज़ात में शामिल हो चुके हैं। उन्होंने अपना ताल्लुक छोड दिया है। दस बजे रात को नक्शबन्दिया सिलसिला भी शिकस्त हो गया और जदीद शुरू हो गया।

17-X-44

हज़रत मोहम्मद साहब (स०) कल रात तुम ने अच्छा काम किया।

जबरईल= सब कौमी सिलसिलें टूट गये। इन लोगों ने बड़े ज़ुल्म किये हैं। अरब का ख़ित्ता उलट दो। 16 अकतूबर की सुबह से रामेश्वर की क़ुतुब की हालत खोलने का आग़ाज हुवा। 17 अकतूबर को भी बवक्ते सुबह उसी मक़ाम की तवज्जोह दी गई। रामेश्वर से कह दो कि अगर मेरे हुक्म के ख़िलाफ चले तो मैं सलब कर लूंगा। जिन लोगों कि बेअतें मेरे हाथ पर की हैं और जिन का ताल्लुक मुझ से बराह-रास्त नहीं है यानी वो जो मुझ से बैअत नहीं हैं, वो मन्सूख़। नन्हें ने यह काम बहुत किया है यानी मेरे हाथ पर बैअतें की हैं, वो मन्सूख।

आयन्दा से जो बैअतें की जायेंगी वो नये सिलसिलें में की जावेंगी। जो इस नये सिलसिले यानी सन्त मत में दाख़िल होगा उसको गायत्री जपना लाजमी होगा।

श्री कृष्ण जी महाराज = अर्जुन की जो कुछ भी बहादुरी मशहूर है, यह मेरा ही हाथ था। भीम (Bhim) कभी और किसी वक्त लडाई से नहीं झिझका। उसमें बहुत अक्ल न थी। अक़्लमन्दी की मिसाल राजा युधिष्टर से ज्यादा नहीं मिलती। नीयत की मिसाल भीष्म पितामह से ज़्यादा नहीं मिलती। राम अवतार के बाद इस मद में भी उन का दूसरा नम्बर था। बाप की इताअत उनं से ज्यादा नहीं मिलेगी।

18-X-44 8.30 pm

हज़रत किब्ला= अगस्त मुनि को आज ही पोलिटिकल चेंज (political change) करने के लिये तहरीक कर दो। इस के बाद

मदन मोहन लाल के सुपुर्द काम करूंगा। बाबू ब्रज मोहन लाल पर इस वक्त मेरी निगाह बदल गई। यह शख़्स मामले में पेंच डाल रहा है। तुम रियाअत कर रहे हो। अगर मुझ में यह क़ाबलियत न होती तो उन लोगों ने मेरा सतसंग ख़त्म कर दिया होता। पेंच मैं ने दूर कर दिया। मैं मौलवी अब्दुल गनी खाँ साहब की वजह से रियाअत कर रहा हूं।

अर्ज़ मदन मोहन= मौलवी साहब ने हम लोगों की कोई रियाअत नहीं की।

फरमाया= नेकी नेकाँरा। बदी बदाँरा ।।

वक्त 9 1/2 बजे शब = अज़ीज पण्डित रामेश्वर प्रसाद को दरगाह-इलाही से क़ुतुब का दरजा बख़्शा गया। खुदा मुबारक करे।

मिस्रा= ऐ बिरादरे निहायत दरगाह अस्त।

अगस्त मुनि= अंग्रेजों का सितारा गरदिश में आ गया। देखकर ख़ुशी हुई और दाद दी। मुझे पता चल गया था कि तुम ख़ास ड्यूटी पर तैनात किये गये हो। मैं ने तुम्हारे लिये दुआ भी की। ईश्वर ने मन्जूर कर लिया। मेरे तुम्हारे ताल्लुक़ात दोस्ताना तरीक़े में रहेंगे और एक दूसरे के मददगार। ज़माना बहुत बदल गया। हिन्दुओं में यह बात जो तुम्हें हासिल है बहुत मुश्किल से किसी को नसीब होगी। रामचन्द्र जी के वक्त से ऐसी हस्ती जहूर पज़ीर नहीं हुई। यह सब तुम्हारे पीर का करिश्मा है। ऐसा समर्थ गुरु भी आज तक पैदा नहीं हुआ। मैं तुम को दुआ देता हूं। और काम पर लगता हूं। हिन्दुस्तान की किताबें

कहीं नहीं गई। एक ख़ज़ाना मेरे पास जमा है। वक्त पर मिलेगा। ईश्वर के हुक्म की देर है। इत्मीनान रखो। बाण विद्या भी कहीं नहीं गई। उसका भी ज़खीरा मेरे पास मौजूद है। अत्री ऋषि को मैं ने हिदायत कर दी है। उन के मुत्तालिक़ जो काम हो उनके सुपुर्द कर दो।

हज़रत किब्ला= बाबू मदन मोहन लाल। मुझें आज किस क़दर खुशी है कि मुझ से एक ऐसा शख्स (अज़ीज राम चन्द्र) बना। आगर मैं इस शख्स को पूरी ताक़त apply करने की इज़ाजत दे दूं तो मुख़ाल्फैन की क्या ताक़त है, ज़मीन लौट सकता है। मगर मैं ने इस की तबियत इस हद तक बनाई ही नहीं कि इस को ऐसा ख्याल पैदा हो। ऐसी हस्ती अब नहीं आयेगी। इस की (RC) अगर शुरु की जिन्दगी और हालात कोई study करे तो उस में बहुत सी बातें ऐसी मिलेंगी जो किसी बड़ी हस्ती की किसी न किसी शक्ल में जीविनी में दर्ज है। इसको ख्याली तौर पर वो नुक्सान पहुंचाये गये जो बडी हस्तियों को ज़ाहिरी तौर पर पहुंचाये जाते हैं। इस की शुरु की कैफ़ियत जो अक्सर इस को याद आती है और अपनी हालत का उस से मुक़ाबला भी किया है, वो थी जो फ़ुकरा को कुल stages तय करने के बाद नसीब होती है। मगर ज़माने ने वो हालत कायम नहीं रखी। यह शख्स है जिस की जीविनी लिखने की जरूरत है। मैं ने destruction के काम से इस को कसदन हटा लिया है और जो दिया गया है वो क़ुदरती हुक्म है कि कही अपनी रमक में ऐसी जल्दी न कर जाये जो क़ुदरत के ख़िलाफ हो। पं० रामेश्वर प्रसाद से कह दो कि यह बड़ी हालत है। बड़ी एहतियात रखें।

19-X-44

मेरी तबियत इस वक्त जोश पर थी। रामेश्वर प्रसाद के लिये मैं ने अजीज रामचन्द्र को कुत्बुल अक्ताब की हालत फौरन खोलने के लिये हुक्म दिया था। मगर इस की राय ठीक बैठी। बुला कर मैं ने देखा, वाक़ई अभी इस क़ाबिल न थे। उम्मीद रखें। मैं मुहब्बत में अन्दाज़ न कर सका। मेरी तबीयत ने आज इस क़दर जोश मारा कि मुझ से रहा न गया। रामेश्वर प्रसाद को कुत्बुल अक़्ताब कर दिया और बाबू मदन मोहन लाल को ग़ोस बना दिया। मेरा नाम जिन्दा करें। मजबूरन जब कोई शक्स और न मिला तो अज़ीज राम चन्द्र से जोश बुझा लिया। अब मैं शान्त हूं। अज़ीज राम चन्द्र के दरज़ात का हाल सुनिये। वहम व गुमान क़ासिर है कि उसका अन्दाजा लगा सके। इस का दरजा रात और बढ़ा दिया गया। इस में विष्णु शक्ति पैवस्त कर दी गई। और उस की मातहत ताक़त का हुक्म दे दिया गया कि इस के हस्बे-हिदायत काम करे। यह ही बात कल रात ऋषि अगस्त ने इन (RC) से कही थी। जोश की वजह अज़ीज रामचन्द्र समझ गया। वजह यह थी कि मैं अज़ीज रामचन्द्र का दरजा देख कर जोश में हो गया। मेरी कल रात से यह हालत है। बिशन (विश्वनाथ टण्डन) ने ग़लती की जो चला गया।

कृष्ण जी महाराज = छटा श्लोक = असूलाते ज़िन्दगी निहायत सादा होना चाहिये। सच बोलने की आदत डालना चाहिये। नाच तमाशे से परहेज। बच्चों से मुहब्बत। बड़ों का आदब। माँ बाप की खिदमत। ईमानदारी से गुज़र। नेक नीयत रहना। दूसरों के माल पर निगाह न करना। ग़ज़ब की आंख दूसरों को न दिखाना । तबीयत

शान्त रखने की कोशिश करना। किसी से ऐसी बात न कहना जिस से उनका दिल दुःखे। इन सब बातों के होते हुये दुश्मन के सामने तलवार खींचना मना नहीं। मगर यह याद रहे कि वो किसी की हिफ़ाज़त के लिये हो। संध्या की पाबंदी दो वक्त होना चाहिये। ज़माने के लिहाज से मैं ने तीसरे वक्त की सन्ध्या का हुक्म नहीं दिया। गायत्री लाज़मी है। यह मामूली असूल है जिन की हर शख़्स को पाबन्दी करना चाहिऐ।

मैं ने अपने वक्त में अमलियात का ख़ात्मा कर दिया था। खयाल पर चढ़ाई रखी थी। मुहब्बत इस का ख़ास जुज था। शर्णागति मार्ग पर ज्यादा जोर दिया क्योंकि ज़माना कल युग का आरहा था। दिमागी ताकतें रुखसत होने लगी थी। ब्रह्मचर्य नष्ट होने लगा था। मेरे बनाये हुये असूल अब भी क़ायम हैं। मेरा अवतार इस मामले को और सहल बनाने के लिये हुआ था। सन्ध्या से मेरा मतलब यह है कि ईश्वर से मिलने की जो कुछ भी तदाबीर हो सकती है या जो कुछ गुरु बताये, इस क़िस्म की सन्ध्या की। सन्ध्या कर्मकाण्डी यानी मन्त्र जपना वग़ैरा इस की भी मुमानियत नहीं। (मुराद इस सन्ध्या से जिसे समाजी लोग करते हैं।)

हज़रत किब्ला = शिज्रे में पहले ओम तत् सत् लिखा जायेगा।

20-X-44

21-X-44

हज़रत किब्ला = असूलात मजकूरा बाला अमल से ताल्लुक रखते हैं। ईश्वर की हस्ती एक मानना चाहिये। बेकार पूजाओं से परहेज़। तास्सुब से नफ़रत। सिर्फ उसी की पूजा होना चाहिये जो इस लायक है। मतलब ईश्वर से है। गुरु की बुक़अत और ऐसे इख़लाकी असूल की पाबन्दी करना चाहिये जिस से दूसरों को फ़ायदा पहुंचे। रहन सहन ऐसा सादा बनाना चाहिये कि जिस के देखने से लोगों को नेक ख़यालो का गुमान हो जावे। मूर्ति पूजन के मैं हमेश ख़िलाफ रहा और अब भी हूं। यह ठोसता दिल को ख़राब कर देती है। यह इक़रार बैअत करते वक्त लेलेना चाहिये। और वैसे भी इन की पाबन्दी लाज़मी है। यह सब अखलाकी असूल है। मूर्ति पूजन की सख्त मुमानियत है। गौस साहब नजदी भी यह ही इक़रार लिये जावेंगे। तब सिलसिले में शमिल हो सकते हैं। मैं मुनासिब समझता हूं कि इस सिलसिले का नाम अगर सहज मार्ग रख दिया जावे तो अच्छा है। मैं इस में कोई मायावी मिलावट करना नहीं चाहता जिस से आगे चल कर इस में कोई फ़तूर वाक़या हो और सम्प्रदाओं की जंग शुरू हो जाये। उर्फ़ियत में बाबू मदन मोहनलाल का suggest किया हुवा नाम हो सकता है। यानी सत पद पन्थ। अब इस को बदलने की जरूरत नहीं। यह जैसा का तैसा रहेगा।

तवज्जोह का तरीक़ा वैसा ही रहेगा। अम्लियात (जाप वगैरा) दूसरे की तबियत के मुवाफ़िक हिन्दुओं के मुताबिक तब्दीली हो सकती है। और यह वक्त पर मालूम हो जायेगा। मैं इस किस्म के जदीद तरीके भी अजीज रामचन्द्र को बताता रहूंगा। जिस किसी को

किसी अमल (जाप) की किसी ख़ास बात के दफ़िये के लिये जरूरत पड जाये, इनसे पूछ ले। ऐसी ज़बरदस्त हस्ती की अगर निगरानी न की जाये तो जाने क्या से क्या हो जाये। कल रात का वाक्या तुम्हें (मदन मोहन) सुनाता हूं। चूंकि अज़ीज़ रामचन्द्र की तबियत ईजाद पसन्द है, उनको कल खयाल पैदा हुवा कि अगर एक कसीर तादाद फ़ुक़रा की सलब कराई जाये तो कौन सा ऐसा तरीक़ा हो सकता है कि कम महनत में यह काम बन जावे। चुनाँये कल ख़्वाब में इन के तरीक़ा समझ में आगया और यह वहीं अमल कर बैठे। मैं ने फ़ौरन उसका antidote बना दिया और कमी पूरी कर दी। तरीक़ा लिखने के लायक है और अछूता है।

तारीख़ 20 अकतूबर सन 44ई० वक्त 8 बज कर 20 मिनट पर रात को ठाकुर मुनेशर सिंह को बाबू मदन मोहन लाल ने शर्तिया इजाज़त दी और बाबू रामचन्द्र साहब ने तस्दीक की।

ह० मदन मोहन लाल

ह० राम चन्द्र

वक्त बाद 8 बजे रात = हज़रत क़िब्ला= ब्रज मोहन लाल ने एक शग्ल शुरु कर दिया था। तुम्हारी तहरीरात में ग़ज़ब ढ़ाया। उनकी ज़रूरत पर ताक़त सलब कर ली गई।

22-X-1944

आज क़ब्ल 12 बजे दिन के अज़ीज़ी विश्व नाथ टण्डन को हस्ब उल हुक्म हज़रत क़िब्ला, मदन मोहन लाल ने बैअत किया।

ह० मदन मोहन लाल

24-X-1944

आज विश्व नाथ अण्डन कुब्रा के मैदान में डाल दिये गये। वक्त 10 बजे दिन के। सुग़्रा को पिण्ड देश कहते हैं। कुब्रा को ब्रह्माण्ड। उलिया को पार ब्रह्म मण्डल। इस से आगे सत्-पद शुरू हो जाता है। कुद्स सतपद की उंची हालत है। ग़ोस साहब नज्दी के जवाब की बाबत तीन दिन इन्तज़ार किया जावे। सलब करने के तरीक़ा तुम्हारा बेहतरीन है।

उसूल बराये जिज्ञासू = 1. हमारे यहां एत्क़ाद पर बहुत ज़ोर दिया जाता है। और यह पहली सीढ़ी है। इस का पुख़्ता करना हर शख़्स का फ़र्ज है। बगैर इस के अच्छा फ़ायदा नहीं होता।

2. हर शख़्स को चाहिये कि पहले अपने दिल में यह तस्फिदा कर ले कि आया इस तरीक़े से उस को फ़ायदा होगा और यह बात तजुर्बे से साबित हो जायेगी। उस के बाद एत्क़ाद पुख़्ता करने पर रुजूअ हो और तामीले - हुक्म अपने सिखाने वाले का अपना फर्ज समझे।

3. उन को समझा दिया जाये कि जो कुछ भी उनके साथ में किया जा रहा है यह मैस्मरेज़म नहीं है। बल्कि ज़ात से सम्बन्ध जोड़ने का तरीक़ा है। और यह ही असल (मुख्य) चीज़ है। जब तक कि अपने दिल में अच्छी तरह से तस्फ़ीया न कर ले और सिखाने वाले पर विश्वास न हो जाये, शुरू करने की जरूरत नहीं।

4. Character का लिहाज बहुत ख़ास चीज है। और ब्रह्मचर्य की भी सख्त ज़रूरत है। यह तरीक़ा भगती का है और इस के साथ-साथ जो कुछ भी हासिल हो जाये।

25-X-44

मैं ने तुम में जैसी फ़नाईयत की है, आज तक किसी बुजुर्ग ने अपने सज्जादा नशीन में नहीं की। तुम्हारी तहरीक कुछ और आगे शुरू हो गई है। मुआम्ला तय हो गया। तहरीक यह है कि उन को **संस्कारों से क़तई सुबुकदोश कर दिया जाये और जिन्दगी क़ायम** रखने के लिये विश्व समझ लिया जाये। मगर यह बात मेरे ऊपर छोड दी गई है। मुझे सबसे ज्यादा अपने काम की फ़िक्र है।

तुम्हारी उम्र अभी कुछ नहीं है मगर मैं एक बात आगे आने वालों के लिये तहरीर कराता हूं कि यह सब मुहब्बत-पीर का करिश्मा है। मैं समझता हूं कि ऐसी मिसाल दुनिया में आज तक नहीं हुई। बाबू मदन मोहन लाल! तुम को अपनी हालत की ख़बर नहीं। बाबू रामचन्द्र को छोड कर एक तुम्हारी भी मिसाल है। इसका उक्दा, खुदा ज़िन्दगी दराज़ करे, इस के बाद खुलेगा। मैं एक मुज्दा बड़ी खुशी . तुम्हारे लिये लाया हूं। आज से जिस को यह जवज्जह देंगे उस में कृष्ण जी महाराज की निस्बत जायेगी। यह पहली ही निस्बत है जिस की इन से जिसकी शुरुआत होगी। इस कैफियत में श्याम बरण **मौजूद था। मैं ने चाहा कि तुम दोनों मुस्तफ़ीज हो जाओ, इस लिये हुक्म दिया था।**

Confidential (श्री कृष्ण जी महाराज ख़ुद तशरीफ़ लाये थे) और अज़ीज़ राम चन्द्र को तवज्जह दी। अब उनकी हालत कुछ और है मगर अभी इन्तहा नहीं समझना चाहिये। इन में कृष्ण जी से और मुझ से मिलती जुलती तवज्जह शुरु हो गई। तश्रीफ़ आवरी को confidential रखना।

मैं अपनी ज़िन्दगी में अक्सर ख़लीफ़ों से बग़लगीर होता रहा हूँ मगर आज अज़ीज रामचन्द्र से बगलगीर हुवा। और यह किसी में ताक़त भी नहीं थी कि मेरा बग़लगीर होना इस आज़ाद हालत में कोई बरदाश्त कर लेता। मेरा बग़लगीर होना कुछ मानी रखता है। **इस के मानी यह है कि मैं ने कोई दौलत नहीं छोड़ी जो इनको बख़्श** न दी हो। अज सर ता पा यह दौलत से पूरे है। मैं ने एक दफ़ा यह कहा था कि इस की ख़ाक-ए-पा में असर है। अब मैं यह कहूंगा कि वो ख़ाक जिस पर इस का क़दम पड़े, कोह-तूर की, जैसी कि मसल है, सुरमें की ख़ासियत रखेगी। इस से बसीरत खुल जायेगी। मगर इस के मानी यह न समझ लिये जायें कि जिस ख़ाक पर इस का पैर पड़े वो धूल आँखों में झोंक लें। पाकीज़गी के ख्याल से यह इबारत रहरीर की है। तुम से एक नये तरीक़े की तवज्जह शुरू होगी। इस को मैं ने गंगा-जमनी तवज्जह के नाम से मन्सूब किया है। यानी मेरी और श्री कृष्ण जी महाराज की तवज्जह मिली जुली होगी।

26-X-44

इन्हों (RC) ने एक बहुत ग़ज़ब की ईजाद की है और मुआम्ला

निहायत आसान कर दिया है। मगर यह काम उन्हीं से हो सकता है। तरीक़ा सही है और लोगों को बेहतरीन फ़ायदा होगा। और इस के करने में भी कोई हर्ज नहीं है।

तरीक़ा = पहले अपनी क़ूवते-इरादी से पिण्ड के स्थान सब साफ कर लिये जाये। उस के बाद ब्रह्माण्ड के स्थान, जहां तक उसे पहुंचाना है, साफ कर दिये जायें। उस के बाद सुग्रा के मक़ाम क़ुदरती तरीके में खोले जायें और इसी तरीक़े से उस के आगे के मुक़ामात क़ुदरती तरीके में खोले जायें। दोनों जगह की तवज्जह एक साथ दी जायें तो सुग्रा की भी तकमील होती चलेगी और इससे ऊपर के दरजात भी साथ - साथ तकमील होते चलेंगे। मगर इस तरीक़े में ब्रह्मचर्य की ज़रूरत ज़रूर है। दिमाग काफ़ी मज़बूत होना चाहिये।

2 यह दूसरी तरकीब है जो की जा सकती है। वो यह है कि जिस दरजे की अभ्यासी के दिल व दिमाग में ताक़त हो, उसी हद तक उस को खोलता चले। मगर यह अन्दाज़ हर शख़्स में नहीं हो सकता। इस लिये हर शख़्स को यह तरीका करना भी नहीं चाहिये। यह बात उन्हीं (RC) के हिस्से में रहेगी। बाबू मदनमोहन लाल ! क्या ऐसी मिसाल कहीं और भी मिल सकती है? और इस से आगे भी इन के ख़्याल में है। और वो यह है कि जुम्ला stages साथ ही साथ चलें मगर ऐसा सीखनेवाला कोई नहीं मिलेगा। इन सब बातों के लिये यह हिदायत है। अभ्यासी में मुहब्बत शर्त है। क्योंकि वो बन तो ज़रूर जायेगा मगर ऐसा न हो कि मुनेहरफ हो जाये।

तुम्हारा (RC) रूत्बा मैं ही जानता हूं और तुम्हारी तालीम शुरु से ऐसी ही रही है कि हर बात तुम grasp करते रहे और अन्दाजा हमेशा सही रहा। और मैं ने भी कोई बात तुम से नहीं छुपाई और न छुपाऊंगा। इस लिये मैं यह बात भी बताये देता हूं, ख्वाह कितनी ही तकलीफ़ पड जावें। वो आंख अपनी मत खोलना जो श्री कृष्ण जी महाराज ने महाभारत में खोली थी। यह ताक़त किसी हद तक खुद बख़ुद काम कर रही है और यह कृष्ण जी का अतिया है। अगर किसी काम के लिये श्री कृष्ण जी हुक्म दें तो खोल देना। मगर यह उसी काम के लिये होगी। दूसरा काम इस से मत लेना। Destruction के लिये मैं तुम को बेशुमार ताक़त दे चुका हूं, उस से काम ले सकते हो।

वक्त 9 बजे रात। खिताब बाबू मदन मोहन लाल को = तुम बहुत ग़ल्ताँ और पेचाँ थे कि कोई ऐसी बात ईजाद हो जाती कि जिस को सलब किया जाये उस को फ़ौरन पता लग जाये। इन्होंने (RC) अभी एक बात ऐसी ही ईजाद कर दी कि सलब करने की ज़रूरत ही न पड़े और मतलब वो ही बन जाये। वो यह है कि अपनी will से जहाँ जहाँ रूहानियत का असर है यहाँ तक कि शब्द भी, उस को stop कर दे और ठस कर दे। ऐसा करने से उस की अन्दरूनी हालत पत्थर कैसी हो जायेगी और उस को जितना चाहे मज़बूत कर दे। यह तरीक़ा सबक़ देने के लिये है। मगर इसको, जब तक मजबूरी ही न हो, करना नहीं चाहिये। इस वक्त इन्हों (RC) ने जो तरमीम की है, मैं उछल पड़ा। ख़ुदा इन का रुत्बा और आली करे और मेरा नाम ज़िन्दा हो। वो यह है और यह बिल्कुल क़ुदरती बात है और किसी शक्ल में

मैंने पीछे ज़िक्र भी किया है। वो यह है कि अपनी बाईं जानिब से उस को मुब्जमिद करे और दाहिने जानिब की ताक़त इस को खोलने के लिये रखें। अब यह तरीक़ा मुकम्मिल हो गया। इन्होंने इस तरीक़े (तरीक़ा मुताल्लिक सहज मार्ग) को इस क़दर आसान कर दिया है कि मुद्दतों की मेहनत बचा ली। मगर अफ़सोस यह है कि ऐसे सीखने वाले कहां। अगर किसी शख्स को बिला पात्र बनाये हुये इन तरीक़ों से तालीम दी जाये तो वो (तालिब) इस की बुकअत नहीं कर सकता। और न अपने सिखाने वाले की strength पर चल सकता है।

मेरे विसाल को 12 साल से ज़ायद हो गये, इस दौरान में हमारे ब्राद्रान (मतलब मुरीदैन से है) को जो जो नुक्सान पहुँचे, उस को ख़ुदा जानता है या मेरा दिल। वजह यह है कि उस वक्त (जिन्दगी में) में मेरे जिस्म लतीफ सब में मौजूद थे। इस से उन का तहफ्फ़ुज़ भी रहता था और रूहानी तरक्की भी होती जाती थी। मेरे विसाल के बाद यह सब अजसाम मेरे साथ चले गये। और वो लोग इस नेमत से ख़ाली हो गये। लिहाज़ा इस दौरान में जिस ने चाहा उसको नुक्सान पहुँचाया और किसी न किसी शक्ल में वग़लाया और मुझ से दूर रखने की कोशिश की गई। जब यह ज़माना खता हो गया और क़ुदरत कामिला जोश पर आगई तो फिर ऐसी हस्ती पैदा हो गई जिस के जिस्म लतीफ़ इन लोगों में अब मैजूद हैं और हर तरीक़े का तहफ्फुज है। इसीलिये गुरु की controlling agency की हर वक्त ज़रूरत है और सज्जादा नशीन का भी यह ही मतलब है। अगर कोई मारके की स्पेशल बात हो जाये तो फ़ौरन controlling agency से रुजूअ हो जायें।

एक बात बड़े मारेक की मैं बताता हूं कि अगर कोई साब्क़ा सख्त पड़जावे और मुठ भेड ऐसे शख्स से हो जावे जो अक्मल हो तो उस वक्त controlling agency में अपने आप को फ़ना कर दे तो मेरी ही ताक़त दौड़ने लगेगी। पीर में और सज्जादानशीन में कोई फ़र्क नहीं होता। मैंने एक रोज तुम्हारे लिये किसी शक्ल में वसू के लिये कहा था। ये क़ुदरत की ताकते हैं। और जुम्ला निजामें - शम्शी व आरजी का इन्हीं पर इन्हेसार है। वसू 8(आठ) हैं। अब मैं एक बात इनकी निस्बत बताता हूं। ये वसू को control कर रहे हैं। आग़ाजे-आलम से अब तक सिवाये इन के किसी को यह दरजा नसीब नहीं हुवा। ये बड़े राज़ की बात थी जो मैंने बतलाई। मैं भी हैरत में हूं कि इन का जाये-कयाम कहीं नहीं है। जो कदम है वो आगे को है। तुम्हें (RC) जगह नबियों में मिली है। जबराइल यही पैग़ाम देने आये थे। कृष्ण जी महाराज के बाद तुम्हारा ही नम्बर है। ये शुरुआत है। इन्तहा अभी दूर है। इन्शाअल्लाह आँअज़ीज इस से आगे की दौलत से भी सरफराज होंगे। तुम्हारे लफ्ज हुक्म का काम करेंगे। नबी का दरजा अमामत से शुरू होता है। कैफियत इस से पहले शुरू हो जाती है। इस को भी नबुवत की हालत कहते हैं। मैं नबुवत की हालत में था और अपनी जिन्दगी में तुम्हें यहां तक मुन्तकिल कर चुका था।

ख़िताब मदन मोहन लाल। मुझे ज़िन्दगी में किसी ने समझा नहीं। अगर लोग मुझे दाद देते और मुझ से काम लेते तो मैं और survive (रहता) कर जाता। मैं ने समझ लिया था कि लोगों को

मेरी जरूरत नहीं है। मैं ने तुम्हारी (RC) जोन और अतिये जो मुझे अपने पीर से मिले थे, सब तुम्हें मुन्तकिल कर के ख़ाबीदा हालत में कर दिये थे। देखिये अज़ीज राम चन्द्र के दिमाग की खूबी कि तरकीब फौरन समझ गया।

~

श्री कृष्ण जी महाराज मेरे साथ ख़ुद तशरीफ लाये थे और अज़ीज़ रामचन्द्र को तवज्जह दी। मदन मोहन लाल भी किसी हद तक मुस्तफ़ीज़ हुये। अज़ीज़ राम चन्द्र को दुआ दे गये कि रूहानियत में भरपूर हो जाये और उनके लिये माखन और मिश्री का भी इन्तज़ाम कर गये। इन से जिस को पहुंच जाये। कंगाली नहीं रहेगी। अज़ीज़ राम चन्द्र को ख़याल मेरा ही रहा। ये किसी हद तक बेअदबी थी, मैं ने मुआफ कर दिया। आयंदा से एहतियात रखे। इन के बारे में कुछ तहरीक और हुई है। कुबरे को श्री कृष्ण जी महाराज ने इन के चार्ज में दिया है। और दौलत इन से आगे सिलसिले में बढ़ेगी। नक्शा सामने आ गया।

मदन मोहन लाल ने अर्ज किया कि जब गुरु एक शिष्य में locate हो गये तो दूसरे महरूम रहे, वगैरा।

वक्त 9 बजे रातः फरमायाः तुमने जुग़राफ़िया पढ़ा होगा। खत्ते इस्तवा पर सूरज की किरण सीधी और तेज़ पड़ती हैं। कुछ angle के बाद उस की किरणें फासले की दूरी की वजह से वो गरमी पैदा नहीं करतीं मगर उस ख़ित्ते पर किरण पड़ती ही रहती है। बस यह ही इस बात का जवाब है कि मेरी धार किसी पर क्यों locate हो गई है और सीधी जा रही है। दूसरे लफ्ज़ों में यह हो सकता है कि जिस ने मुझ से

जिस क़दर नज़दीकी हासिल की है उसी क़दर मेरी किरण उस पर तेज़ पड़ती है। चमकने की ताकत एक सी है यानी मेरी निगाह सब पर एक सी रहती है और सब को अपना समझता हूं।

28-X-44

यह बात अब बहुत मुश्किल हो गई कि अज़ीज राम चन्द्र को ज़ात में चढ़ने से, जहाँ कि उन का असल मक़ाम है, रोका जाये। एक तदबीर समझ में यह आती है कि जब ऐसी हालत पैदा हो जाये तो मुझ को जवज्जह देना शुरु कर दिया करें, मैं फौरन सम्भाल दिया करूँगा। इन्होंने अपनी काफ़ी स्थिति वहां कर ली है और ज़बरदस्त फैलाव शुरु हो गया।

मैंने तुम दोनों (मदन मोहन, रामेशर) को इस वक्त राम चन्द्र की पैदायशी हालत इन्कशाफ कराई। ये वो ही तवज्जह थी जो कैफ़ियत इन के साथ आई। ये कैफियत ख़ालिस ज़ात की थी, इस में माया का लेशमात्र भी लगाव न था। मैं भी पैदायशी तौर पर एक हालत ले कर उतरा था जो इस से मिलती जुलती थी।

वक्त 6.15 PM

श्री कृष्ण जी महाराजः मथुरा के बाद नीमसार जाने का मेरा ही हुक्म है। अजुध्या की अब जरूरत नहीं। अजुयध्या में पण्डों ने बहुत खराबियाँ डाल रखी हैं। ऐसी जगह के अब रखने की ज़रूरत नहीं।

काशी को तबाह कर दो। जगन्नाथ जी का मन्दिर बाम मार्गियों ने मुझे बदनाम करने के लिये बनाया है। फौरन मिस्मार कर दो। एक स्थान उसी के क़रीब है जो पूजनीय है।

हज़रत क़िब्लाः काशी के destruction के वक्त घेरा कर लेना, कोई निकलने न पावे। शहीदाने-काशी कराट का लहू अब तक उस जगह की बरबादी को पुकार रहा है। उनकी रूहो के कलत्थने(बेक़रारी, तड़प)मन्जर मेरी निगाह के सामने हैं। ऐसी मुत्बर्रक जगहों पर खून बरसाये गये। इस में राजाओं का भी खून हुवा है। उनसे ऐसे लोगों का खून हुवा है जिन से एक दुनियाँ परवरिश होती थी।

हनूमान गढ़ी का मन्ज़र मेरी निगाह में अब तक फिर रहा है। माँओं की आब्रूरेजी ने मुझ को आज़ाद होने पर ख़ून रुलाया है। ऐसे निर्दइयों से पाला पड़ा जिस की मिसाल जालिमों में भी पाई नहीं जाती। ऐसी क़ौम जिस में ऐसे अन्सर मौजूद हो जो सिवाये ख़ून चूसने के अपने ज़िम्मे कोई काम न रखें, तबाह व बरबाद कर देने के क़ाबिल हैं। ये वो क़ौम थी जिसका झन्डा तमाम दुनिया में लहरा चुका है। जिस ने बड़े बड़ों को और अच्छे अच्छों को अपनी रुहानी कमाई से सैराब किया है। पाकीज़गी का यह हाल था कि हर परमाणु इस की खुश्बू से महक रहा था। आज यह दिन है। अगर तुम अपनी चश्में-बसीरत खोल कर देख़े तो इन का ज़र्रा उस कैफ़ियत से भरा हुवा मिलेगा जिसकी attraction दोज़ख़ की तरफ हो रही है।

एक बात बड़े राज़ की मैं तुम को बताता हूँ कि जिस के समभलने की कोई कैफियत नज़र नहीं आती। जिस के ऐमाल उस को दोजख में ड़ालने वाले होते हैं, उस की ज़िन्दगी में उस का नक्शा दीज़ख़ में पहले से खिंच जाता है।

बनारस का काम मदन मोहन लाल के सुपुर्द कर दिया जावे। उसको पूरी कुवत से करें। रामेशर का यह काम होगा कि सब की life खींचते रहे। उनका मुस्तसना कर दें जो ख़ुदा परस्त और नेक हैं।

जगन्नाथ पुरी का काम तुम (RC) और मदन मोहन लाल मिलकर करें।

श्रीकृष्ण जी महाराज : ब्रिन्दावन में एक लाला बाबू का मन्दिर है, उस में corruption शुरु हो गया है। इस को दूर करने की कोशिश करना। अगर नाकामयाबी नज़र आये तो मिस्मार कर देना। तुम को इस मन्दिर में जाना होगा। और वहां की आब व हवा का मुताल्ला करना होगा। उस के बाद राय क़ायम करना। वाक़ई मुझे जमुना से बहुत मुहब्बत थी। मैं उस के किनारे बहुत खेला कूदा हूं। हालाँकि उसकी हैसियत सिवाये दरिया के और कुछ नहीं। मगर यह मन्ज़र ऐसा है कि मथुरा में रहना चाहिये। उस के रुख को फेरने की कोशिश करो। मैं समझता हूं कि तुम्हारी मन्दिरों में क़दर नहीं होगी। सूखे-साखे आदमी तस्ववर किये जाओगे। रोशनी का पता लगा लेना हर एक का काम नहीं। मेरी कुल ताक़त वहां तुम्हारे साथ होगी, क्योंकि यह एक बहुत बड़ा काम है जिस को तुम्हारे सुपुर्द किया गया है।

मथुरा में कई मस्ज़िद हैं जो मुत्बर्रिक मक़ामात पर बनी हुई हैं, यह सब मिस्मार होगी। जमना के क़रीब एक मस्जिद है, वो मुसलमानों ने हिन्दुओं की मुत्बर्रिक जगाहों पर क़ब्ज़ा जमाने के लिये और औरतों की बेहुरमती करने केलिये बनाई थी। जामा मस्जिद में सैकड़ों बुत दफ्न है। जो सुर्ख़ मस्जिद तुम्हारे ख्याल में आ रही है उसी के क़रीब मेरी पैदायश का मक़ाम है। यह कन्स के वक्त में ज़िन्दाखाना था। मेरी माँ इस में क़ैद रही है। नन्द गाँव में एक मक़ाम है जहाँ धोबियों का घाट है। तुम्हारी ससुराल के क़रीब एक टीला है। कुब्जा का कुआँ ज़मीन दोज़ हो चुका है। सेठानी की औलाद जो मुतबन्ना की जाती है, नहीं जीती। अगर तुम्हारे कहने के बन्मूज़िब यह सब मक़ामात खोल दें तो उस का घर बेचराग़ नहीं रहेगा। और मैं यह भी वायदा करता हूँ कि अगर सेठानी या उस की बहुएं, जो बेवा हो चुकी हैं, अगर तुम्हारी खिदमत, तुम्हारे शान व शायाँ करें तो इन सब का बेड़ा पार कर दूंगा। बहुत से साधुओं के उस ने हाथ धुलाये, चर्णामृत लिये, मगर कुछ फायदा बजुज नामवरी के न हुवा। अब मौक़ा है। अगर वाक़ई उस को देखना है तो मेरी मूर्ति तुम में झलकती हुई मिलेगी। यह पैगाम जहां तक हो सके, खुम ठोक कर उस के पास पहुँचा देना। किस शक्ल में पहुँचाया जाये, यह तुम्हारे पीर साहब बतला देंगे। इन सब बातों के लिये तुम को तुम्हारे पीर से रोशनी मिलेगी।

हज़रत क़िब्ला - जो कृष्ण भगवान फ़रमाया करें, वो मुझ से verify कर लिया करो ताकि miss हो जाने का शुबह न रहे।

श्री कृष्ण जी : मथुरा में जो pollution हो रहा है, एक दम से रोक दो। एक मक़ाम ऐसा भी है जहाँ औरातों की इस्मत दरी होती है। इस में मुसलमानों की एजन्सी (agency) औरतों को निकालने के लिये चोबों के ज़रिये से काम कर रही है। इस खानदान को जिस ने ऐसे रुपये से परवरिश पाई है, बेचराग़ कर दो। वहाँ पहुंचने पर बहुत से वाक़यात तुम्हारे सामने आवेंगे।

द्वाराकाधीश के मन्दिर के पिछवोड एक अड्डा बन रक्खा है। इन बातों के बारे में जो तुम्हारे पीर का हुक्म हो, वैसा ही करना। उन से अच्छा रहनुमा नहीं मिल सकता। महाबन में एक मुत्बर्रिक मक़ाम है जो मिट्टी के ढ़ेर से दबा पड़ा है।

हज़रत क़िब्ला- हनुमान गढ़ी आज ही तबाह कर दो।अभी एक वाकया होते-होते बच गया। एक सतित औरत (सतीत्व) वहां पर पहुंच गई। उस की इस्मतदरी की कोशिश की गई। उस ने फौरन ईश्वर से अपनी आब्रू बचाने के लिये प्रार्थना की। फ़ौरन कुद्रत मौजजन हो गई और उस का बाल बीका न हुवा। वो स्त्री एक लंगड़े आदमी की औरत थी जो उस का कोई बचाव नहीं कर सकता था। यह काम सब से ज्यादा ज़रूरी है। उस में (हनूमान गढ़ी) शोले उठते हुये दिखई दें। तुम अपनी मौजूदा हालत की स्पेशल पावर्स से काम लेना। ख्वाह रात भर बैठना पड़े, जब तक मैं न कह दूं यह काम ख़त्म यानी बन्द न किया जाये, (बल्कि जारी बराबर रहे) और यह काम सिर्फ तुम्हारे सुपुर्द है। और सब काम छोड दिये जावें। एक बात और ज़रूरी है। वो यह कि यह सब जो उस की इस्मतदरी में शमिल थे, सुबह तक बेचराग हो जायें।

29-X-44

मैंने तुम्हें ताकतें इस लिये नहीं दी हैं कि उन को जज्ब किये बैठे रहो, बल्कि इस लिये है कि ज़रूरत पर काम लो। आदमी आजाद उस वक्त होता है जब अपनी ज़िन्दगी, द्वेष और यगान्गत का सवाल खत्म हो जाये। इस बात के पैदा करने में बड़ा वक्त सर्फ होता है। अगर ख़याल किया जाये तो सब में एक ही की ताक़त मौजूद है जो उसको मुतर्हरिक कर रही है।

वक्त वक्त का व्यौहार बरतना चाहिये। मुझ में यह बात दरजाए कमाल पर थी।

तारीफ़ कृष्ण भगवान : फ़रमाया - कृष्ण भगवान असल जात की धार है।

गंगा-जमनी तवज्जह कहने से मेरी यह भी मुराद है कि यह दोनों बातें साथ-साथ चलेंगी या यूं कहलो कि मेरी और उनकी धार मिली जुली रहेंगी और तुमसे जहान रोशन होगा। इस की क़द्र तुम्हारे बाद लोगों तक पहुंचेगी।

अगर मथुरा में किसी जगह का जमना का सोत खत्म करना मन्जूर हो तो ऋषि अगस्त से मदद ले लेना।

मुहब्बत के मानी यह है, कि सिखाने वाला जो हुक्म दे, वैसे ही तबियत बन जाये यानी तामील में क़तई पसोपेश न हो।

अगर मथुरा में तुम्हारा secret चौबों को किसी तरीक़े में out हो जाये और वो मुखाल्फ़त करने लगें तो कृष्ण जी महाराज को सुदर्शन चक्र के आवाहन कर देना। मैं तुम को इजाज़त देता हूँ। उनके पसे-पुश्त मेरी ताक़त हमेशा मौजूद मिलेगी, इस के आवाहन करने की ज़रूरत नहीं।

कृष्ण भगवान - मैं ने बहुत बड़ी duty तुम्हारे सुपुर्द की है, जो इस में तुम्हारी मदद करेगा, वो ख़ाली न रहेगा। घबराने की ज़रूरत नहीं। मेरी कुल ताक़त, जरूरत पर तुम्हारे साथ होगी। और तुम्हारे पीर साहब तो तुम्हारा किसी वक्त साथ नहीं छोड़ते। समर्थ गुरु इस को कहते हैं। ये अपने वक्त की खुद मिसाल है। तुम ने जो मुहब्बत अपने पीर से की, उस का समरा मैंने आज दे दिया। तुम्हारा रौम-रौम महक उठा है। आगे की उम्मीद रखो।

हज़रत क़िब्ला - मदन मोहन लाल । कहो मैं ने कैसी होशियारी की कि अपनों (तुम, रामेशर) को शामिल कर लिया।

30-X-44

आज बत्तारीख ३० अक्तूबर सन् ४४ ई०, वक्त 9 बजकर 45 मिनट पर, सुबह को करुणा शंकर की कुबरा में मुकम्मिल कर दिया और अज़ीज राम चन्द्र ने उस को उलिया में डाल दिया। अब इन की सैरगाह विलायत उलिया है। ज़र्फ़ मैं ने तुम से (अज़ीज रामचन्द्र से) अच्छा नहीं देखा। इतने बड़े बुज़ुर्ग की तवज्जह जो रात दी गई थी और जिस हालत की तवज्जह थी, इस का बरदाश्त करना इन्हीं का

काम था। बमिस्दाक कि सब हज्म कर गये और डकार तक न आई। ऐसी पैवस्त हुई कि पता भी नहीं लगता। बाबू मदन मोहन लाल । इस वक्त मेरी तबियत यह चाही कि अज़ीज़ राम चन्द्र के ज़र्फ़ का अन्दाजा लगाऊँ। मैं करीब १५ मिनट तक बराबर भरता रहा, मगर पात्र में कुछ भराव मालूम न हुवा। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि अगर और किसी को इस की आधी देर भी तवज्जह दी जाती तो क़ल्ब फट गया होता। इन को मेरी इस कदर ज़बरदस्त जवज्जह का पता भी न चला। बल्कि हल्की बात मालूम हुई जैसा कि रोज़ाना सतसंग में होता है। इस पात्र को भरना मेरे क़ाबू के बाहर है। ख़ुदा और रुत्बा आली करे।

10 बज कर 35 मिनट, वक्त सुबह.

मैं ने श्री कृष्ण जी महाराज से इस को क़रीब 7 मिनट के तवज्जह दिलवाई। ज़र्फ़ अब भी नहीं भरा।

नोट : वक्ते - तवज्जह श्री कृष्ण जी महाराज ने यह फरमाया कि यह ज़र्फ़ तुम्हारे पीर का बनाया हुवा है, इसका भरना मुश्किल है।

हज़रत क़िब्ला - जिन-जिन को इन्होंने सलब किया, सब अपने पास रख लिया।जिस किसी को (उसकी) वापसी होगी तो मेरे पास से होगी। मतलब यह है कि मुझे अज़ सरे नौ उसकी हालत की हद तक भरना होगा।

पात्र बढ़ाने का तरीक़ा यह है कि पहले जितना अहल है, उस से कुछ ज्यादा तवज्जह दे। फिर उस को हज़म करा दें। और यह तरीका बराबर जारी रक्खें तो जर्फ़ आली हो जायेगा। बाज औकात

जब कैफियत ज्यादा बढ़ जाती है तो भी हज़म कराने की ज़रूरत पड़ती है। दिल पर किसी तौर पर ज्यादा ज़ारे नहीं आना चाहिये वरना अभ्यासी की हिम्मत पर असर पड़ेगा ।

मथुरा में जमना के किनारे चार-चार छह-छह मील जगह को मुनव्वर कर देना। और बेहतर तो यह होगा कि तुम्हारे कदम उस जगह पर पड़ जायें। ब्रिन्दावन में भी तुम्हारा यह ही काम होगा। यह जगह बड़ी मुतबर्रिक है। ब्राह्मनों ने इस को ख़राब कर दिया है, इन का total destruction शुरु कर देना। वहां से जो काम लाओ, उस को घर पर ही करना होगा। ब्रिन्दावन का जमना का मन्ज़र मेरे सामने है। उस में फिर भी असर बाक़ी है। वजह यह है कि वो गुजरगाह आम नहीं रही। मुमकिन है कि जिस जगह पर हर नरायन के भाई ने अपने जिस्म को छोड़ा है, उस के लिये कोई हुक्म सादर हो। उस ने कृष्ण जी के जज्बे में अपनी जान दी है।

कृष्ण भगवान - मैं ने उस शख्स को जिस का तुम्हारे पीर साब जिक्र कर चुके हैं, बराहे-रास्त रोशनी दी थी। वो मेरे पास मौजूद है। उस का नाम अपने सिलसिले में ज़र्री क़लम से तहरीर कर देना।

ताज्जुब खेज ईजाद - दिल का ताल्लुक हर मकाम से है। यह ऐसा रास्ता है जो धुर तक पहुंचा देता है। इस ख़याल को मद्दे नज़र रखते हुये अज़ीज राम चन्द्र ने एक बडे गज़ब की ईजाद कर दी है। तमाम मुश्किलें आसान हो गई। गिरने का अन्देशा कम हो गया। क़ब्ज व रब्त से निजात मिल गई।

तरीका : दिल पर तवज्जह दे और यह ख़याल बांधे कि मैं कुबरा या उलिया खोल रहा हूँ। जिस मक़ाम का (दिल की दौड़ आखिर हद होने की वजह से) खयाल बांधा जायेगा, वो ही लतीफा खुल जायेगा। और रास्ता साफ रहेगा) मसलन् कुबरा के खोलने का ख़याल बांधा गया तो जितने मक़ामात उस के नीचे हैं, उन सब पर रोशनी डालता हुवा ख़याल उस हद पर पहुँचेगा और इस से रास्ता हर वक्त साफ रहेगा। यह ऐसा तरीक़ा है कि जिस को हर मोअल्लम को सुफ़े-अव्वल पर लिखना चाहिये। यह तरीक़ा धुर तक पहुँचा सकता है और इस से आगे का जो तरीक़ा है और जो मेरी ईजाद है, confidential रहेगा। इन की समझ में वो आ गया है, मगर पूरा खुलने नहीं दिया, ताकि यह इज्हार न कर सकें। यह ऐसा तरीक़ा है कि हर मक़ाम को पूरे तौर से खोलने से मददगार हो सकता है। इस का करने वाला खुछ बाख्याल मयार अपने दिल में क़ायम कर ले ताकि उस हद से ज्यादा न खुल जाये। सिखाने वाले की जहां तक पहुंच है, वहां तक काम देगा। अज़ीज राम चन्द्र को जैसा कुछ भी बनाया गया है, यह मेरी ही मेहनत का नहीं है बल्कि बाबू मदन मोहन लाल की मेहनत का समरा है। मुझ में एक मल्का था कि मैं ख्वाब में जागृत से काम ले जाकर किया करता था (यानी जो काम जागृत में नहीं कर पाता था, वो सुपन में कर लिया करता था ।)

31-X-44

आज 9 बज कर 25 मिनट पर वक़्त सुबह करुणा शंकर को मक़ाम उलिया तय करा कर इब्द का मक़ाम खोल दिया गया।

10 बज कर 35 मिनट पर उस के ऊपर के मक़ाम की रोशनी डाली गई। और 10 बज कर 50 मिनट पर इजाज़त दे दी गई। और 11 बज कर 55 मिनट पर क़ुतुब का दर्जा बख़्शा गया। अल्लाह मुबारक करें।

ग़ौस नज्दी क़तई सलब हो गये। इन को कल रात सलब किया गया था। यह तास्सुब का नतीजा था जो उन को यह दिन देखना पड़ा। बाबू करुणा शंकर को हिदायत की जाये कि औरतों की सोहबत से परहेज करें। अगर कोई शख़्स उन से सीखने वाला उन्हें मिल जाये तो मुझ से tally कर लें कि आया उस को तालीम देना चाहिये या नहीं। अगर मेरे अल्फ़ाज उन तक न पहुंच सकें तो अज़ीज़ राम चन्द्र से दरियाफ़्त कर लें। हर कस व नाकस को भरने की ज़रूरत नहीं। यह ही हिदायत रामेशर प्रशाद के लिये भी है। हर एक ज़ी-एख़्तियार शख़्स के लिये कहता हूं।

वक्त 5 बजे शाम : कल जब मैं ने कहा था कि मैं, जो काम जागृत में करना चाहिये था, उस को ख़्वाब में करने के लिये ले जाता था। यह वाक़ई मल्का मुझ में था मगर उस वक्त मेरी तबियत अज़ीज रामचन्द्र को आज़माने के लिये चाही। और यह पहला ही मौक़ा था। देखना यह था कि इस में कितना होश बाक़ी है मगर यह आजमाइश में पूरा उतर गया। और लुत्फ़ यह है कि यह समझ भी गया कि मेरी आजमाइश केलिये फ़रमाया गया है। मेरा राज ऐसे शख़्स से छुपना मुश्किल है।

मदन मोहन लाल- यह बात बड़ी मुश्किल थी, मगर इस के

सामने पानी पर तैरते जैसे आ गई। यह इस की जाती क़ाबलियत है और खुदादाद है। देखने में सीधा सादा है। मदन मोहन लाल, यह क्या बात है और ऐसा क्यों है ?

जवाब अर्ज़ करने पर फ़रमाया - यह बात सही है, मगर इस में एक बात बड़े राज की है, कि इस ने तरक्की करते-करते यह मल्का हासिल कर लिया है कि हर वक्त मेरे खयाल में चिपके रहते हैं। यह ही वजह है कि इस से कोई बात miss नहीं होती। दिमागी कमज़ोरी की वजह से मुमकिन है कि कुछ भूल जाये। यह पंज लतायफ जो सीने में कहे जाते हैं, यह हर उस से ऊपर के stage में शामिल रहते हैं। गति बदलती जाती है। कुद्स (आलमे - कुद्स) के बाद यह साथ छोड देते हैं। वहाँ से ख़लूस शुरू हो जाता है।

मैंने आज इस वक़्त 5 बज कर 35 मिनट पर अज़ीज राम चन्द्र का आखरी बन्द तोड दिया मगर यह बताना अभी नहीं चाहता कि वो क्या है। मरहबा इस समझ पर, वो समझ गया। यह ही बात थी। इन में आज वो ताक़त पैदा हो गई कि अपना जिस्म छोड़ कर जात तक पहुँच सकते हैं।

बाबू मदन मोहन लाल - मैंने चाहा कि इस में देर की जावे मगर तबियत ने मजबूर किया। यह इस की क़िस्मत है। मगर यह जिस्म नहीं छोड सकता। इतनी बात अब भी अपने काबू में रखी। यह आखरी वक्त बताऊँगा। तबियत ने मजबूर किया तो दूसरी बात है। मगर इस हालत के होने पर यह वक्त से पहले जिस्म भी नहीं छोड़ेंगे।

1st November, 1944

11बज कर 35 मिनट दिन

मुझ से अभी श्री कृष्णजी महाराज ने फरमाया है कि मथुरा के काम के लिये इसे (RC) आजाद कर दो। लिहाजा, जुमला ताकतें जो इस काम के लिये ज़रूरी हैं, मैं अज़ीज राम चन्द्र में मुन्तक़िल करता हूँ।

शंकराचार्य ने जो जुल्म मण्डन मिश्र की बीवी के साथ में किया है, उस की मिसाल नहीं। इतना बड़ा यह खून उन की गरदन पर सवार है कि जिस के अजाब से छुटकारा नहीं मिला। सतित स्त्री थी और धर्म पर अपने क़ायम थी। उस से बहस के बाद औरतों की तालीम की मुमानियत कर दी थी। जिस का नतीजा यह हुवा कि उनकी औलाद भी गुमराह होने लगी। ठीक तौर से माताएं तालीम नहीं दे सकी। यह कुल बार उन की गरदन पर अब तक सवार है। उन्होंने क़ौम का खून किया है और आयन्दा की तरक्की का दरवाज़ा बन्द कर दिया। यह प्रतिष्ठा यानी सन्यस्त क़ायम की, यह उन की खुदसाख्ता थी। कुदरत में इस का कहीं हुक्म नहीं है बल्कि रंगीनी कुदरत की सिफ्त के खिलाफ़ है। इस का परतौ अपने जिस्म पर रंगीन पड़ता है जो बेरंगी के लिये मुजेर है। उस को (यानी मण्डन मिश्र की स्त्री) degrade करने में अपनी will power इस्तेमाल की थी मगर उस का कुछ न कर सके। यह हालत हिन्दू क़ौम के सरताज की है कि जिस के ख़िलाफ अगर ज़बान खोली जाये तो लोगों की निगाहें पलट जायेंगी। गेरुवापोशी सिर्फ अपने मायनों में

अच्छी है। यह (शंकराचार्य) ब्रह्मचारी ज़रूर थे और आलिम भी। मगर रूहानी दौलत से महरूम थे। मण्डन मिश्र की बीवी को मोक्ष फिर नसीब हुवा और उस से बेबहरा रहे। ज्यादा मत खुलवाओ।

असल ख़िदमत स्वामी दयानन्द ने की है मगर उन की उम्र ने वफ़ा नहीं की और और वो कुल स्कीम अपने सीने में ले गया। उस की स्कीम खुलने भी नहीं पाई थी कि मौत हो गई। आमेजिश इन हज़रत (शंकराचार्य) ने भी मुतबर्रिक किताबों में की है। मगर एक बात तुम्हारी मालूमात बढ़ाने के लिये बताता हूँ कि जितना क़ाबिल तिलक (बाल गंगाधर तिलक) था, स्वामी शंकराचार्य नहीं थे। न उन से अच्छी इबारत स्वामी शंकराचार्य को समझने की क़ाबलियत थी। उन्होंने ऐसी बातें इज़ाफा की ताकि उन की कौम की प्रतिष्ठा हो। कौम से मेरा मतलब हिन्दु जाति से नहीं है बल्कि उस जाति से है जिसे में यह पैदा हुये।

सन्यासी बहुत कम क़ाबिल मिलेंगे और अगर मिलेंगे तो यह उनकी ज़ाती क़ाबलियत और संस्कार का नतीजा होगा। वजह यह है कि जिस foundation के ऊपर इमारत बनाई गई है वो कमजोर थी। मिसाल यह हो सकती है, जैसे रेत के ऊपर ब्लाटिंग पेपर बिछा कर कोई इमारत ख़डी की जावे। और बादी-उल-नज़र में इस ब्लॉटिंग की वजह से उस का ऐब छुपा रहे। मैं तुम को हुक्म देता हूँ कि शंकराचार्य के किसी लेख पर एत्बार न करना ख्वाह वो सही क्यों न हों। इस लिये कि संस्कृत न जानने की वजह से सही और ग़लत का तुम अन्दाज़ा नहीं कर सकते।

ब्रम्ह विद्या के लिये संस्कृत जानना कोई लाज़मी भी नहीं है। मेरी मिसाल मौजूद है। इस के यह मानी नहीं है कि संस्कृत न पढ़ी जाये। इस कुल ऊपर वाले जुमले का मतलब यह है कि संस्कृत न पढ़ने की वजह से कोई शख्स ब्रह्म विद्या से महरूम नहीं रह जाता। रही प्रार्थना, यह रायजुलवक्त ज़बान में भी हो सकती है। बस जज़्बा चाहिये ताकि मुस्तजाब हो।

कुदरत के दो असूल है। एक positive और एक negative यानी नफ़ी और इस्बात। नफ़ी खारिज करने को कहते हैं। जो मवाद बढ़ जाता है वो इस शक्ति से ख़त्म कर दिया जाता है। इस्बात कमी के पूरा कर देने को कहते हैं। आग़ाजे -आलम से अब तक यह ही असूल चला जा रहा है। जिस चीज में कमी वाकई हुई, भगतों द्वारा वो पूरी हो जाती है। और जिस में ज्यादती हुई वो भी उन्हीं के ज़रिये से एत्दाल पर लाई जाती है। कुदरत के हाथ पैर नहीं होते। एक मशीन है जो हर वक्त हरकत में रहती है। कुदरत की मशीन को कमज़ोर करने वाले भी तुम हो और मजबूत करने वाले भी तुम्ही हो। जब कुदरत की मशीन खूब मजबूत होती है, तब उसको अच्छा ज़माना कहते हैं। जितनी कमजोरी आती जाती है उतना ही गिराव का जमाना कहा जाता है। सत जुग त्रेता, द्वापर, कलयुग यह सब इसी लिहाज़ से तकसीमें हैं। मौजूदा वक्त में यह मशीन बहुत ढ़ीली हो रही है। इस के पुरजे कमजोर पड़ गये हैं। लिहाजा कुदरत की तवज्जह इस तरफ मब्जूल हो रही है। नतीजा ज़ाहिर है। कुदरत में वाक़ई तौर पर कोई राज़ नहीं है। यह एक सीधी सादी चीज़ है जो मालिक की कुल्लियत का सबूत है। बन्द में देखने की क़ाबलियत शर्त है।

अपने हर कुतुब को हिदायत कर दो कि असनाए-सत संग में जो मुश्किलात पेश आवें, यहाँ से, यानी अजीज राम चन्द्र से हल कर ले। और जो हुक्म दिया जावे, उस को हुक्में खुदा समझ कर कारबन्द हो। एक तरीक़ा अजीज राम चन्द्र ने मुझ को बहतरीन suggest किया है। इस से बहुत सी मुश्किलात, तवज्जह की निस्बत कभी बेशी के हल हो गईं। हर कुतुब या उस से ऊँची हालत वाला जब किसी को तवज्जह दे तो उस के बाद यह ख़याल बांधे कि जो पात्र से ज्यादा पहुंच गया है वो अज़ीज राम चन्द्र की तरफ मुन्तकिल हो गया है। और अगर ठीक पहुंचा है तो उस में रफ्ता-रफ्ता जज्ब हो रहा है। यह दोनों खयाल साथ-साथ होना चाहिये। हर कुतुब एहसास बढ़ाने की कोशिश करें। मैं इस समझ पर उछल पड़ा, वाक़ई यह भी तरीक़ा हो सकता है जो अजीज़ राम चन्द्र ने suggest किया। सलब करते वक्त जिस बड़ी चीज से उनका (ग़ौस) connection क़ायम किया गया, उस में कुब्बते-जाज्बा ही है। जो बात उन्होंने suggest की उसी को improve भी कर दिया। और यह बात बिल्कुल सही और ठीक है यानी उन के गुरु का connection जहां पर कि ग़ौस की हालत खुलती है, कायम कर दे। नतीजा मतलूब बरामद होगा।

2-XI-44

अपना काम मथुरा में इस तरीके से तक़सीम करना कि जो सब से हल्का काम हो, वो रामेश्वर से ले लेना। और किसी भरी काम में अगर मदद की ज़रूरत समझो तो उस में power दे देना और काम कराने के बाद खींच लेना। जामा मस्जिद का काम बाबू मदन मोहन

लान के सुपुर्द कर दो। और हिदायत कर दो कि जैसा मैं मथुरा के काम में मसरूफ रहूँगा, ऐसे ही अपने आप को इस काम में मसरूफ़ समझें। बाक़ी जो बातें पेश आवेंगी, बताता रहूँगा।

कुल मथुरा को मुनव्वर कर देना। ब्रिन्दावन में ज्यादा काम नहीं है। सब से बड़ा काम मथुरा ख़ास में करना है। नन्द गाँव वग़ैरा की याद-दाश्तें लिये जाना और जो हिदायतें हो, नोट कर लेना। जमना का कोर्स (course) तब्दील करना ज़रूरी है। रेलवे पुल के क़रीब एक जगह पर जमना से गिरा पानी का सौता निकलता है। एक काम को जब ख़त्म कर दो तब दूसरा काम हाथ में लेना। तन्दुरुस्ती का ख़याल रखना। इस की ज़रूरत नहीं है कि सब काम एक ही दिन में खत्म किया जाये। और जिस्म को तकलीफ़ पहुंचाई जाये। तुम्हारे पास वक्त बहुत है। खुश मैं तब हूंगा जब एक-आध building मिस्मार कर के वापसी हो। इस में रामेशर भी काम कर सकता है। जरा तेज कर देना। अगर छह घंटे एक इमारत पर यकसू हो जाओ, तो वो इमारत रह नहीं सकती। क़दम-क़दम पर तुम को रोशनी मिलेगी। यह ख़याल तुम्हारा ठीक है कि इतराफ का दौरा खत्म कर के, यानी वहां का काम ख़त्म करके फिर मथुरा में घुसा जाये।

मैं ने इस वक्त गुदा चक्र का मक़ाम अज़ीज राम चन्द्र का जगा दिया, जो सिद्धि-शक्तियों का स्थान है। रुहानियत से इस का कोई वास्ता नहीं। यह मैं ने जरूरत के लिये छोड़ रखा था। मगर इस के खयाल में कई रोज से यह मक़ाम घूम रहा था और इसे मालूम था कि यह मक़ाम इस का खुला हुवा नहीं है। यह रूहानी नुक्तए-निगाह से इसे तोल रहा था और जानना चाहता था कि इस मक़ाम का किस

मन्ज़िल से वास्ता है। इस के चन्दा जगाने की ज़रूरत नहीं। सहस्त्रदल कमल खुल कर अपनी असली हालत पर आ गया है। यह मक़ाम सिर में है और इस का गुदा चक्र से ताल्लुक है। सुखमना एक नाड़ी है जो गुदा चक्र से रीढ़ की हड्डी में हो कर ऊपर सिर की तरफ जाती है। इस को मैं ने सीधा कर दिया। अब दोनों रास्ताऐं साफ हैं। जिधर से चाहे तालीम दें इस बात के लिये बरसों लोंगों ने रियाजतें की हैं। मगर मक्सूद हासिल नहीं हुआ। यह बन्द गुरु किसी का नहीं तोड़ता और तुम को मैं हिदायत करता हूँ कि तुम भी ऐसा न करना। मदन मोहन लाल मक़ामात से सब तवज्जह दिया करते हैं, मगर अज़ीज राम चन्द्र को मैं ने ये मल्का दिया है कि जिस्म के किसी हिस्से के इशारे से नतीजा मतलूब पैदा कर सकते हैं, यानी जिस्म के जिस मसाम से चाहें, चक्रों को छोड कर तवज्जह दे सकते हैं और वो ही असर होगा, जो मक़ामात से तवज्जह देने का होता है। इस की वजह यह है कि अज सर-तापा मख़ज़न बन गये हैं। और दिल रग-रग में फैल चुका है। ये बहुत ख़ास बात है जो इन में मौजूद है। अगर ये सिर्फ उंगली का इशारा कर दें तो तवज्जह बह जायेगी। गरजेके कहां तक कहा जाये। इन के हालात खोलने का मक्सद है, इस लिये कह गुज़रता हूं। और यह इस लिये है कि आगे आने वाले इनको Ideal समझें और नाज करें।

शंकराचार्य ने ऐसे ख़ार बो दिये हैं कि जिन की शक्त अब तब्दील हो कर भाले की तरह सख्त हो गई है। ब्राह्मणों को ख़राब करने वाला यह ही शख्स था। इस ने ठोसता की बुनियाद डाली। मूर्ति पूजन की तरक्की इसी के वक्त में हुई और यह बात उन्होंने

बोधों से ली। हिन्दुओं की एक जाति (ब्राह्मणों) को अरूज देने के लिये हर मुमकिन कोशिश की। नतीजा यह हुवा कि उन को अपनी पाकीज़गी का गुमान हो गया और अकलमन्द लोग उन को बेवकूफ़ समझने लगे। पाकीज़गी अपने खशल में इस कंदर फर्जी तौर पर क़ायम कर ली कि उन को सब नीच दिखाई देने लगे। नतीजा यह हुवा कि उन का दिमाग इस बात की मज़ावलत करते-करते ठस पड़ गया और वो माद्दा जो ईशर की तरफ ले जाने वाला था, बेकार हो गया। गोस साहब की तुम क्या शिकायत करते हो जब उन से, तुम्हारी कौम में कई गुना ज्यादा आदमी मौजूद था। उन्होंने ब्राह्मणों को ऐसी जगाहों पर क़ायम कर दिया जहां कि उन की बिला मुश्क्कत पेट पूजा हो सके। और दीगर लोगों के खयालों में उन्होंने उनकी अहमियत उतार दी। वेदमन्त्र जो तुम्हारा पण्डित अकसर बका करता है, यह श्लोक उन्हीं के वक्त में था क़रीब उसके, यानी मुख से ब्राह्मण। इतनी हिमाकत की बात वेद में नहीं उतर सकती। वेद में एक मन्त्र था, उस को घुमा कर यूं लाया गया है। अगर कोई मुझ से सच पूछे तो मौजूदा हिन्दुईज्म से बोध मज़हब हज़ार गुना बेहतर था। उन्होंने नई बात कर के सत्यानाश कर दिया। यह प्रणाली सब उलटना पड़ेगी।

मथुरा फ़िलहाल जाना मुल्तवी है। वजह यह है कि काम करने के लिये फ़ील्ड तैयार नहीं हो सकी। जामा मस्जिद का काम बदस्तूर मदन मोहन लाल के सुपुर्द रहेगा। मगर ज्यादा अर्सा शाहजहांपुर न ठहर सकोगे। रामेशर और अज़ीज़ राम चन्द्र हर वक्त जाने के लिये तैयार रहे। इस काम पर बड़ी अहमियत दी गई है और मुत्बर्रिक

ड्यूटी में से सब से ज्यादा ज़रूरी है। फिलहाल चोबो का destruction शुरू कर दो। और यह काम रामेश्वर के सुपुर्द कर दो। इस लिये कि अज़ीज़ राम चन्द्र के ताल्लुक कई अहम काम है और आदमियों की कमी पड़ रही है। कोई permanent ड्यूटी जो कम ज़रूरी हो, करुणा शंकर को दी जा सकती है। यह काम यानी अपने कुतुब को ड्यूटी देना असल में रामेश्वर का है। कृष्णजी महाराज मथुरा की situation देखते हुये चले गये।

3-11-44

इस वक्त मैंने वो काम किया है कि बड़े-बड़े ऊँचे दरजों के बुजुर्गों की इस को पढ़ कर अक्ल हैरान रहेगी, और नामुमकिन समझ में आवेगा। यह वो तरीक़ा है जो आज तक किसी ने अपने शिष्य के साथ नहीं किया और न कर सकने की क़ाबलियत थी। यह आख़री बात है। मैं ने-नामुमकिन को मुमकिन कर दिखाया। जात से सब रुजूअ होते हैं। मैं ने जात को full force से इन पर (RC) रुजूअ कर दिया। फ़ायदा बाबू मदन मोहन लाल ने भी उठाया। यह बात कहीं सुनने में नहीं आयेगी। यह एक अछूता तरीक़ा है जिस से मैं ही वाक़िफ हूं। मैं अपने दिल की कैफ़ियत और उस बेचैनी को जो मेरे दिल पर राम चन्द्र की मुहब्बत की वजह से गुज़रती है, आज़ाद होता हुवा एहसास करता हूँ। न मेरी मिसाल मिलेगी, न इन की। मथुरा में काम करने के लिये फ़ील्ड तैयार हो गयी, कल कूच।

वक़्त 8बजे रात : मथुरा में फ़ील्ड क़तई तौर पर तैयार हो गयी। अब देर करने की ज़रूरत नहीं। कल के कुच के लिये कृष्ण जी खुद फ़रमा गये हैं। और RC को अपनी स्पेशल पावर्स दे गये हैं।

4-XI-44

5-XI-44

बाबत यात्रा मथुरा जी

हज़रत क़िब्ला : ब्रिन्दाबन की हर जगह मुनव्वर होगी। राधा कुण्ड ब्रिन्दावन में एक मक़ाम है। वहां ज़रूर जाना और जगह को पवित्र कर देना। रामेश्वर से भी यह काम लेते जाना।

श्री कृष्ण जी : तुम ने मेरी जन्म भूमि में क़दम रखा। इलावा तुम्हारे पीर के मैं ने भी कोई कसर बाक़ी नहीं रखी। कामयाबी यक़ीनी समझो। आज तुम्हारे आराम का दिन है। दिमाग जगाहट से परेशान है। तुम जो कुछ Research करो और मुत्बर्रिक मक़ामात निकालो उन में जो तुम्हारे पीर साहब हुक्म दें, वही करना। कुब्जा का कुआँ ठीक Research किया गया।

जिन्दाँखाना का फ़ाटक कन्स के वक़्त में वहीं पर था, जहाँ पर बताया गया।

हज़रत क़िब्लाः तुम्हारे दरजे का कुछ ठिकाना नहीं। इस दौरान में किसी को तवज्जह न देना। जब तक मैं हुक्म न दूं, जब्त से काम लेना। तुम जब तक कि काम खत्म न कर लो, यहाँ से हट नहीं सकते।

कैफ़ियत कुब्जा के कुएँ पर जो गुज़री। जब तुम दोनों आदमी कुब्जा के कुएँ पर बैठे थे, और जो कैफ़ियत की एहसास हुई थी। उस मुक़ाम का असर है और ठीक मक़ाम के दरियाफ़्त होने की रोशनी देता है।

नोटः कैफ़ियत जज़बाती थी और खयाल यकसू हो कर रह गये थे। और मुहब्बत से दिल लबरेज था। यह जगह मराक़बा करने के लिये अच्छी है। ऐसे बहुत से मक़ामात हैं जिन का लोगों को अब तक पता नहीं। यहां कदम-कदम पर श्री कृष्ण जी महाराज का फ़ैज भरा है। इस को ज़मीन ने उगलना शुरु कर दिया है।

हज़रत क़िब्लाः पंडित रामेशर प्रशाद । इस वक्त तुम्हारे भाई (RC) ने इतनी अच्छी ईजाद की, कि तबियत खुश हो गई। रहा न गया, फौरन भागा। वो यह है कि अगर किसी शख़्स की किसी खाने की चीज पर ख़ास तौर पर रग़बत हो तो उस का असर यानी मिठास का जोहर जबान को touch करता हुवा उस में इल्क़ा कर दे। इस को बार-बार करने से यह बात उस से चली जायेगी। इस ने कई एक आदमी इस दौरान में बनाये, मगर कोई आदमी इस वक्त तक ऐसा न दुवा कि मैं अज़जी राम चन्द्र को चन्द उन कामों से जो उस से नीचे वालों की duty है, relieve कर सकता। किसी न किसी

शक्त में उन को अज़ीज राम चन्द्र की ज़रूरत है। अभी तक यह क़ाबलियत पैदा नहीं हुई कि गायवाना बराहे-रास्त, मेरे या राम चन्द्र के ज़रिये से orders को catch कर के कारबन्द होते। मैं उन को उन कामों के लिये रखना चाहता था जिस के लिये उसी का हिस्सा है। और उन को इस सिलसिले की गुत्थियाँ सुलआने के लिये और

नक्शा - कुब्जा के कुएं का -

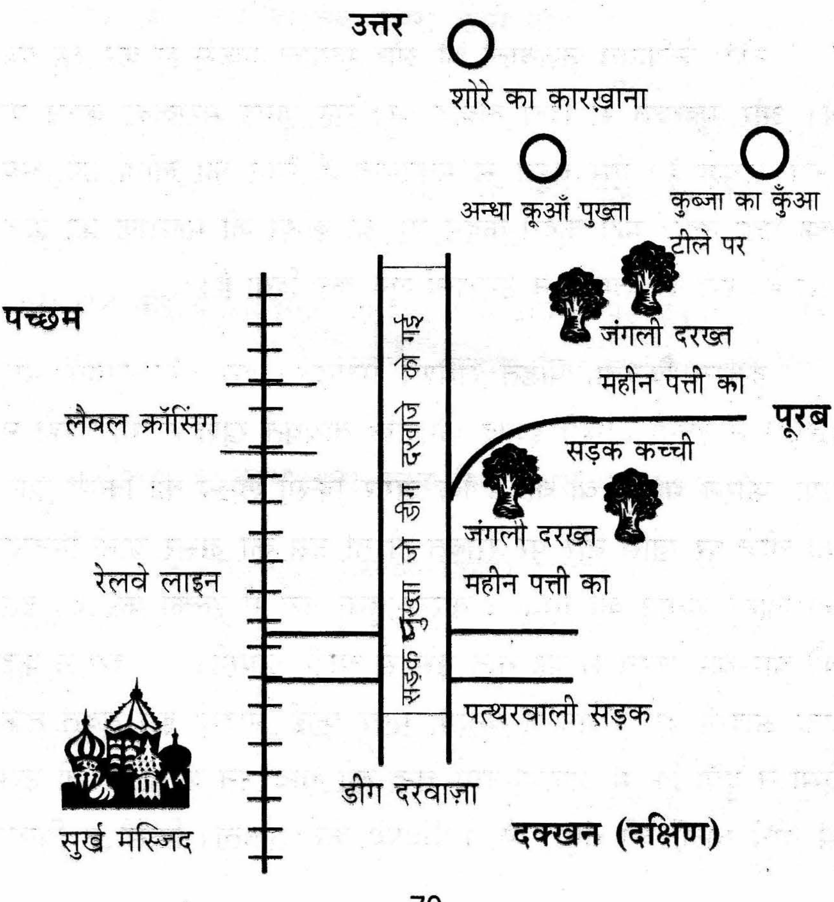

सहल बनाने के लिये आज़ाद रखना चाहता था। फिर भी ग़नीमत है, जो कुछ हो जाये।

6-11-44

द्वारकाधीश के मन्दिर के पीछे एक जगह है। उस का destruction अभी से शुरू कर दो। इस को श्री कृष्ण जी

नक्शा

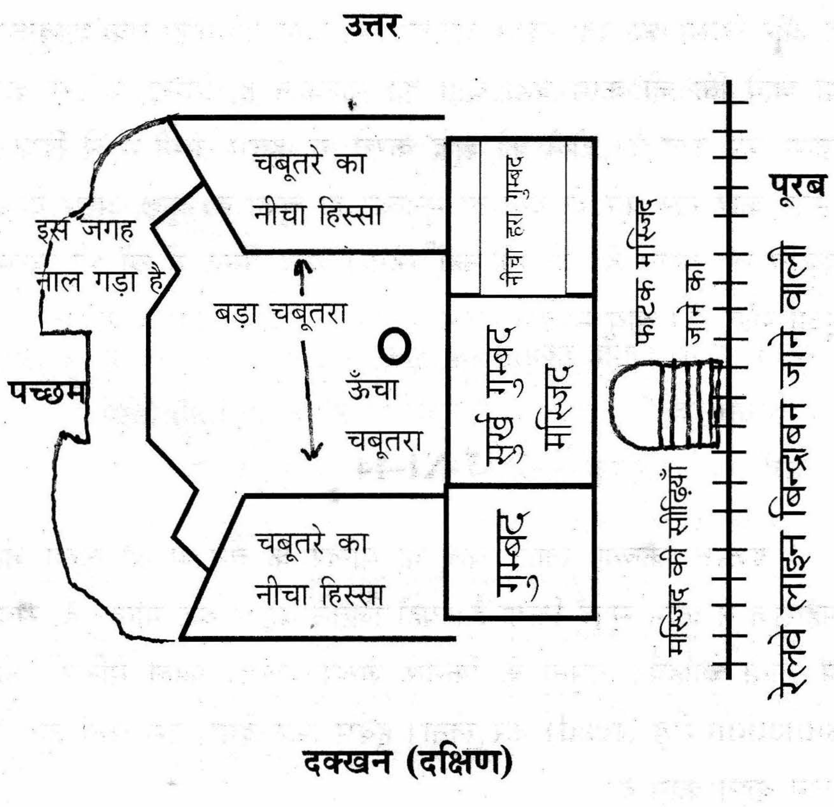

महाराज ने अड्डा बताया है। पहले इस जगह को देख लो। तुम ने जगह सही दरियाफ़्त की। जहाँ पर तुम बैठे हो, इस से थोड़ी दूर आगे क़रीब एक हाथ पच्छम को मेरा नाल गड़ा था। तुम्हारे पीर साहब ने अच्छा गाइड किया। और तुम ठीक स्थान पर बैठे हो।

हज़रत क़िब्ला : तुमने जगह की ठीक research की। जो point तुम ने अपने डन्डे से बनाया था उसी के क़रीब श्री कृष्ण जी महाराज का नाल गड़ा है। और बिल्कुल क़रीब उसके ख़जाना है। अगर कोई बहस का point (मौका) आ जाये तो मैं तुम्हें बता दूंगा कि यहां पर खज़ाना है। मथुरा में ऐसी बहुत सी जगहें हैं जहाँ दफ़ीना है और किसी को पता नहीं। अज़ीज राम चन्द्र को कहाँ तक शाबाशी दी जाये कि जो काम बड़ों बड़ों को मुश्किल है, मिन्टों में उस को खत्म कर देता है। टीले को शुद्ध करने का हुक्म अभी मैं ने दिया। अगर कोई गौर कर के देखे तो मुनव्वर हो चुका है। कुछ असर दैत्य प्रकृति का बाकी है, वो भी नहीं रहेगा। चन्द मिन्ट में वो भी ख़त्म हुआ जाता है। वायू मण्डल गूंजने लगा। यह काम खत्म हो गया।

7-XI-44

हज़रत क़िब्लाः लाला बाबू के मन्दिर के बारे में श्री कृष्ण जी महाराज ने काम सुपुर्द किया है। यहाँ जितने बड़े - बड़े मन्दिर हैं, सब में जाना चाहिये। जमुना के किनारे ज़रूर जाना। पहले मन्दिरों की situation रीड (read) कर लेना। हुक्म फिर दूँगा। इस वक्त तुम्हारे लिये बहुत काम है।

मुशाहिदा मन्दिर रंग जी

मशरक़ी हिस्सा अन्धेरा था जहाँ कि पुजारियों के क्वार्टर्स हैं। दरमियान में जो मन्दिर है उस में कदरे, भायें-भायें में था। मन्दिर के

नक्शा

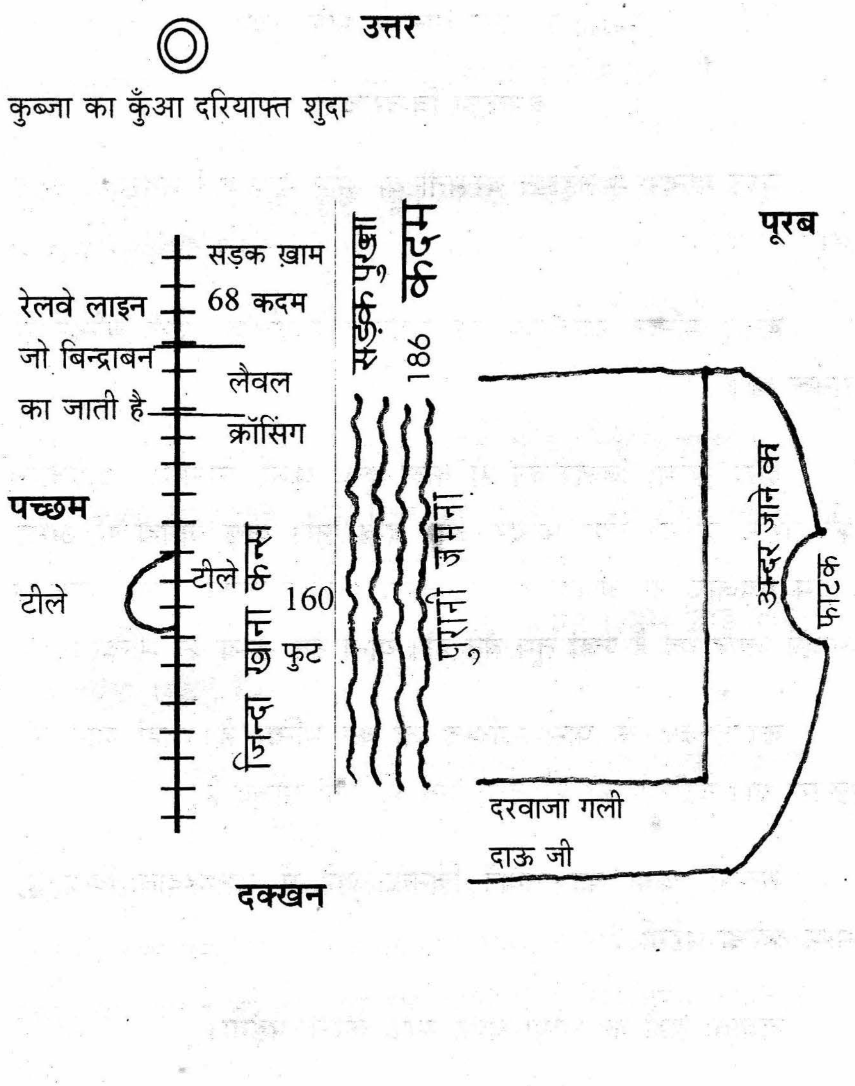

उत्तर में छोटा मन्दिर है उसके पीछे परिक्रमा (तवाफ़) की जगह है। वो बहुत अन्धेरी थी। मन्दिर का पच्छमी हिस्सा जहां कि गज और ग्राह का तालाब है, वहां अच्छी रौनक थी। मूर्तियाँ सब की सब बेरौनक थीं।

मुशाहिदा लाला बाबू के मन्दिर का

बमकाम बिन्दराबन

कुल मन्दिर में नहूसत बरसती थी और खयालात नफ़सानी आते थे।

ईजन् मन्दिर ग्वालियर जी महाराज ग्वालियर वाले मन्दिर में रौनक थी।

दौरा ख़त्मः बिन्दराबन से कल कूच यानी रवानगी। ग्वालियर की तरफ़ के दो तीन मन्दिर और देख लो। कुछ जगहों में अगर क़दम पड़जाये तो अच्छा है। वो जगह मुनव्वर करनी होगी। सब से अच्छी जगह यह है जहां तुम बैठे हो। यानी टेढ़े खम्बे का मन्दिर।

काली दाह के पास गोबिन्द जी का मन्दिर है। जहां जान का ख़तरा था। यात्रियों की हड्डियां अब भी वहां मौजूद है।

सवालः क्या यह जगाहें जिनके बारे में मुशाहिदात किये हैं, साफ करना पड़ेगी ?

जवाबः यहाँ का चप्पा-चप्पा साफ करना पड़ेगा।

8-XI-44

हज़रत क़िब्ला: जितने बड़े-बड़े मन्दिर हैं, सबका अपने आप को incharge समझो। इन में फ़ैज भरते रहो। Corruption दूर करने की कोशिश करो। अगर इस में कामयाबी न हो तो उन लोगों का destruction शुरु कर दो। बिन्दराबन में जहां-जहां जा सको, अच्छा है। जमीन भी असर लेलेगी। वो हिस्सा जहां कि यात्रियों की हड्डियां अब तक मौजूद हैं, मिस्मार करना होगा। उन लोगों को जो वहां पर मौजूद हैं, यानी गोबिन्दजी का मन्दिर, और उन का चिराग गुल कर दो। गोबिन्द जी के मन्दिर से ले कर पच्छम तक पुरानी जमुना के किनारे-किनारे, कुल रास्ता ख़राब है और सब क़ाबिले destruction है। जमुना की बड़ी धार के किनारे जब तुम बैठे थे तो तुम को बतलाया था कि इस जगह पर लोगों के कत्ल किये गये हैं।

कृष्ण जी महाराज: मैं तुम्हारे काम से खुश रहा। कुछ जगाहें ऐसी रह गई हैं जिन को तुम अभी देख नहीं सके। गरजे कि कुल जगह को पुर असर करना है। ख्वाह घूम करो ख्वाह ऐसे ही।

हज़रत क़िब्ला: अज़ीज राम चन्द्र की हिम्मत पर शाबाश। इस वक्त कुल मथुरा फ़कीरी अवस्था में है, मगर अफ़सोस इस क़ीमती चीज़ को देखने के लिये मादूदे चन्द होंगे।

अब्दाल मथुरा: इस वक्त आप ने कुल मथुरा को फ़ैज से भर दिया। एक मरतब दयानन्द शताब्दी के दौरान में ऐसा दौर हुआ था। यह कैफ़ियत किसी के शान व गुमान में नहीं आ सकती।

हज़रत क़िब्लाः अभी रामचन्द्र ने तुम को (अज़ीज रामेशर) को कृष्ण सरूप का लतीफ और ठोस हालत में दर्शन कराया था। वजह साफ़ है। पिछला नोट देखलो। इन में वो ताकतें भरी हुई है जिन का लोगों को वहमो-गुमाँ भी नहीं हो सकता। मगर ये सब पी कर बैठ गये हैं। जज्बा उन्होंने अपने बस भर क़ायम ही नहीं रखा। अगर कुछ है तो मेरा ही जज्बा है। एक ख़ास बात जो उन की जीवनी में है वो यह है कि जो ताक़तें उन को अता हुई है, सब को लय कर दिया है। यह बात ऐसी है जो किसी के आज तक हिस्सेमें नहीं आई। यह पैदायशी कैफ़ियत है यानी उन में ग्रहन करने का माद्दा एक आला पैमाने पर मौजूद है। इस माद्दे को मैं ने इन्तिहा को पहुंचा दिया। जिन्दाबाद।

क़दम्ब का बृच्छ (वृक्ष) वहां पर ज़रूर था और काली दाह की जगह यह पुरानी है। जमना के किनारे बमक़ाम बिन्द्राबन जहां पर कि तुम बैठे हो, पन्डों ने एक मारवाड़ी का क़त्ल किया जो बड़ा सीधा-सादा आदमी था। तन्हा सफ़र कर रहा था। मन्दिर वालों की साज़िश थी। जिन का destruction करना है।

अब्दाल मथुराः मेरे पास दूसरी ड्यूटी आ गई। अपना काम बन्द करता हूँ।

हज़रत क़िब्लाः अब्दाल को हुक्म दे दो कि तीन महीने तक तुम्हारी हिफ़ाजत करे, ख्वाह कहीं हो। अगर इस के खिलाफ़ होगा तो कह दो कि मैं सब सलब कर लूंगा। उस की रुकावटें हटा कर शाहजहांपुर तक रास्ता साफ़ कर दो। मगर ये आरज़ी रहेगा। अभी हुक्म जारी करो, मैं मौज़ूद हूं।

अब्दाल : कुछ ठहरो।

हज़रत क़िब्लाः मैं अभी कान उमेठे देता हूं।

अब्दालः मैं ने बहुत बड़ी गलती की। मैं ने अपने पीर से consult किया । मैं मुआफ़ी चाहता हूँ।

हज़रत क़िब्लाः जो हुक्म दे दिया, वो दे दिया।

नोटः यह सज़ा अब्दाल को इस वजह से दी गई कि उस को दो रोज़ की duty मुक़र्रर की गई थी। उस ने कब्ल अज वक्त छोड दी। ड्यूटी यह थी कि दोनों की हैज़े से हिफ़ाज़त की जावे।

हज़रत क़िब्लाः अब्दाल को मैं ने ठीक कर दिया। अगर ज़रा भी गुरेज करता तो मैं तुम को सलब करने का हुक्म देता। मथुरा का काम क़रीब-क़रीब ख़त्म हो चुका है। बहुत थोड़ा सा बाकी है। बिन्द्राबन के destruction का नक्शा मैं तुम को ख्याल से बता दूँगा। बहुत सी ख़तरनाक जगहों पर मैं ने तुम को जाने नहीं दिया। बरसाना जाने की ज़रूरत नहीं । मुनव्वर हर जगह करनी पड़ेगी। बाक़ी जगहें जो बताई हैं, वहां हो आओ। वो जगह जो तुम्हारे खयाल में है (श्री नाथ जी वाली) उस का destruction होगा। मौक़ा मिले तो हो आना। नन्द गांव जाना ज़रूरी है। वो ख़ास चन्द जगाहें जिन की कोई research नहीं कर सकता, वो तुम्हारे सुपुर्द की गईं। एक बात मैं तुम्हें राज़ की बताता हूँ कि श्री कृष्ण जी महाराज जब अन्तर्ध्यान हुये तो कोई शख्स उस वक्त ऐसा नहीं था जो उनके अहकाम की पाबन्दी करा सकता। अब ईश्वरी लहर जब घूमी तो

उस का आगाज़ होना ज़रूरी है। इस लिये तुम (RC) अपने आप को उन के नुमायन्दे की शक्ल में समझो। जो मौजूदा सूरत में सज्जादा - नशीनी की हालत तक पहुंचती है। दूसरे मायनों में अपने आप को ऐसा ही समझो और इस मुवाजे में तुम उन से रोशनी भी ले सकते हो। मेरे शामिल होने से तुम को बहुत आसानी हो गई, वरना बड़ी दिक्कत का सामना होता। तुम को क़दम-कदम पर रोशनी मिलेगी और श्री कृष्ण जी महाराज की निस्बत तुम से शुरू होगी। मैं तुम्हारे काम से खुश हुआ। आख़िर में कहता हूं कि अपने आप को मथुरा का इन्चार्ज समझो। सेठानी के बारे में जो कुछ उन हज़रत ने फ़रमाया है उस से कछ मक़सद बरारी मालूक नहीं होती। इसलिये बेकार है। अगर कुदरती रूझान और मेलान - तबाअ जो बहुत मुश्किल है, तुम्हारी तरफ़ हो जाये तो उन की सब मुश्किलें आसान हो जायें और घर बेचराग न रहे। इस काम में जिसने तुम्हारा साथ दिया वो श्री कृष्ण जी महाराज के, अपनी तौफ़ीक के मुताबिक मन्जूर नज़र हो जावेगा।

जमुना को कोर्स (खान्गी, बहाव) तब्दील करने के बारे में जो नोट था उस की बाबत अब मेरी राय नहीं पड़ती, इस लिये कि वो जगह destruction में आगई और वहां के लोग (यानी पन्डे) सब बेचराग़ कर दिये जायेंगे। ऐसी जगाहों को मुनव्वर करने की ज़रूरत नहीं । उन को बचा जाना। मथुरा में तुम जमना का कोर्स (बहाव) तब्दील करने के लिये मौजूदा हालत शुरू होने से पहले ही कर चुके हो।

जगमोहनः आज तक ऐसी हस्ती पैदा नहीं हुई। दुकानदार को तो तुम ने ले ही डाला था। उस का होना भी ऐसा ही था। वो इस ही क़ाबिल था।

9-XI-44

हज़रत क़िब्लाः मैं तुम्हें सब जगाहों पर इस लिये घुमाना चाहता हूँ कि अगर वहां का कोई काम आ जावे तो वो जगह फौरन निगाह में आ जाये। तुम गोबरधन जा रहे हो। वहां के मक़ामात जो ज़रूरी हों, देख कर मुनव्वर कर देना। पहाड़ का नीचे जाना अज़ख़ुद बन्द हो जावेगा। जगाहें उभर रही हैं। तुम लोगों ने बड़ी ग़लती की, इतना वक्त ख़राब कर दिया। गोबरधन घूमना है। राधा कुण्ड के जाने में बहुत वक्त लगेगा। अगर वक्त है तो कोई हर्ज नहीं। तुम्हारी मरज़ी पर छोड़ता हूँ। जगह ज़रूर अच्छी है। जिस जगह से गुज़रो, पुर असर करते चलो। बेहतर तो यह था कि गोबरधन पहाड पर चढ़कर कहीं बैठ जाते और उस में अपना असर भरना शुरू कर देते।

रामेश्वर को राधा कुण्ड के पुर असर करने का हुक्म दे दो। जो जगाहें अब तक तुम ने देखी हैं, यह सब बनी हुई जगाहें हैं। इन में कोई असलियत नहीं। हर देव का मन्दिर अब भी बेहतर हालत में है और जो यहां के मन्दिर तुम ने देखे हैं, उन में ज्यादा बे रौनकी नहीं है। अगर जगह देखना है तो इस जगह से जहां कि तुम बैठे हो, तीन मील आगे बढ़ जाओ तो कुदरत का नज़ारा नज़र पड़ेगा। वो जगह मुत्बर्रिक मिलेगी मगर वहां जंगल ही जंगल है।

नक्शा

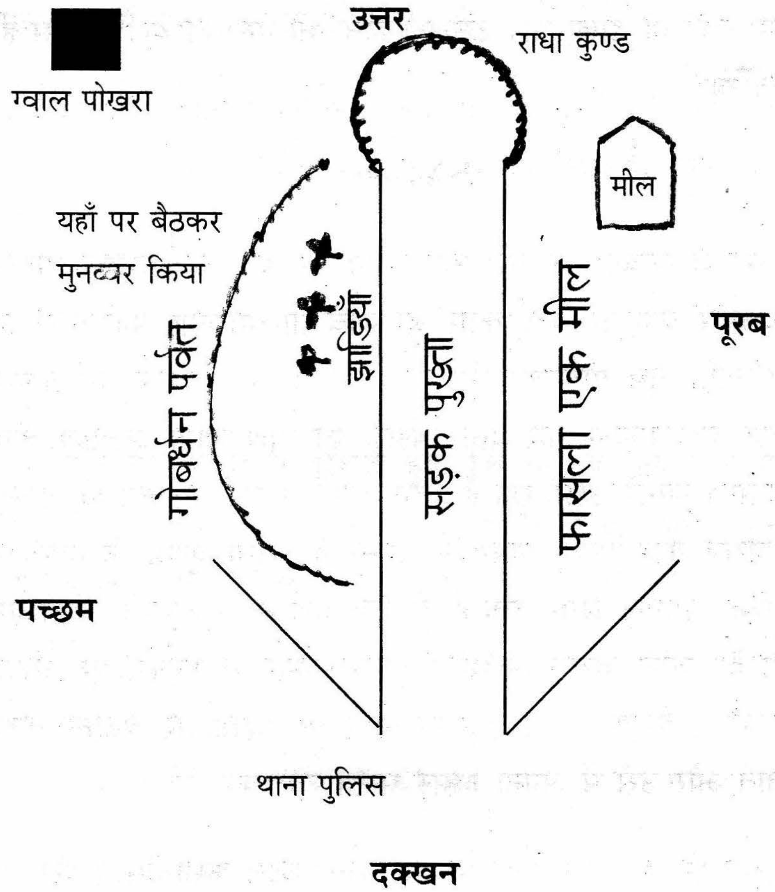

इस वक्त राम चन्द्र ने वो काम किया है कि मिसाल नहीं मिलेगी। इस का असर खत्म नहीं हो सकता। देखने के लिये आँखें चाहिये। रामेशर से भी मैं खुश हुआ। अब जूता पहन कर इस पहाड़ (गोबरधन) पर जाना बे-अदबी है। अगर कोई ग़ौर कर के देखे तो कोहे-तूर का जलवा नजर आयेगा। जिस का जी चाहे....... जिस किसी को कोहे तूर का जल्वा देखना हो, इस पहाड (गोबरधन) की

सैर कर ले। इस में से अब असर जा नहीं सकता। अगर सच पूछो तो इस पहाड़ में वो बिजली भरी है जो ज़ात से निस्बत दी जा सकती है। खुशी में फूल उठा। यह नबुवत थी जो हर एक के हिस्से में नहीं है।

नोट रामेशर : श्रीमान बाबू रामचन्द्र साहब के गोबरधन पहाड़ को तवज्जह देने और पुर असर करने के बाद मुझ से पूछा। मैं ने कहा कि एक बहुत जबरदस्त धार प्रकाश की ग़ैब से बाबू राम चन्द्र साहब के पास आ रही थी। और उन से निकल कर तमाम पहाड़ में सब जगह फैल रही थी और बहुत सी रुहें ज़मीन से निकल कर महवियत और सकून के आलम में आ कर उस रोशनी के समन्दर में जो उमड़ रहा था, गौता लगा रही थी। गोबरधन पर्वत के जिस पत्थर था जिस हिस्से पर निगाह जमाओ तो बेहोशी सी होती थी।

हज़रत क़िब्लाः बलदाऊजी ज़रूर जाना। वहां के अजायबात जिनके जात्री दिलदादा हैं, सब रोशन हो जायेंगे। वो जगह औरतों के जाने के क़ाबिल नहीं । तुम्हारे साथ में चन्दॉ हर्ज नहीं। मजबूरन हुक्म दिया है। मगर हो आने के बाद ताकीद कर देना कि फिर किसी तरीक़े पर वहां न जावे। ये ख़ित्ते का ख़ित्ता तुम्हे उलटना होगा। बहुत से घर बेचराग़ करने होंगे। वक्त जरूर लगेगा। बहुत बड़ा काम तुम यहां से लिये जा रहे हो। अपनों में तकसीम करलेना। Construction वर्क (काम) तुम्हारे ही पास रहेगा। इस ड्यूटी को मुन्तक़ल नहीं कर सकते। जमना का पुल फिलहाल रहने दो। आगे देखा जायेगा।

अब्दाल मथुरा से अहतियातन दोबारा कह दो कि अगर अपनी

duty से क़ासिर रहा तो जो सज़ा तजवीज है वही दी जावेगी। मथुरा में जमना का किनारा उस रोज तुम बहुत कुछ पुर असर कर चुके हो। कही जमना का किनारा ऐसा पुर असर न कर देना जैसा आज गोबरधन पर्बत किया है। राधा कुण्ड को मुनव्वर करने का हुक्म था। मैं ने (RC) रुजूअ होना चाहा। इरशाद हुवा रामेशर से काम लो। रामेशर रुजूअ हुये, जगह मुनव्वर हो गई । इरशाद हुवा कि तुम इस में पैर धो लो। मुँह वगैर: धोने की ज़रूरत नहीं है। पैर इसलिये धुलवाये कि पैरों की बिजली का असर पानी लेले। बमूजिब हुक्म अब्दाल मथुरा को आगाही दी गई कि काम क्यों बन्द किया। उस ने मुआफ़ी मांगी और हिफ़ाज़त शुरू कर दी।

10-XI-44

हज़रत क़िब्लाः मैं ने तुम्हारे काम का मुआयना गोबरधन पर किया। बहुत Hypnotise कर दिया है और जिस जगह पर तुम बैठे हो, वो जगह भी मुनव्वर हो गई है। तुम्हारे काम की, जो अब तक किया है, तारीफ़ है। जो काम और रह गये हैं, उनको खत्म कर के वापिस होना। दो रोज़ आराम करो। अगर इस से ज्यादा और रुजूअ हो जाते तो लोग वहां पर जाते ही गश खा खा कर गिरने लगते। इस लिये मैं ने रोक दिया था। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि यह काम तुम्हारा ही था। अगर निगाह उठा के देखो तो यह बात किसी में नहीं मिलेगी। एक-एक पत्थर पर असर हो चुका है। वहां पर लजल्ली जाती गिर कर गई है। यह बात तुम्हारी यादगार रहेगी।

11-XI-44

मथुरा में सुहावनापन शुरू हो गया है।तुम ने यहां पर कई कमाल कर दिखाये। जमना का किनारा अच्छा रोशन हुवा। वायुमण्डल शुद्ध हो चुका है। मथुरा की सरज़मीन में भीना-भीना फ़ैज आहिस्ता-आहिस्ता भरते रहो। कल का सफर मुल्तवी कर दो। तुम्हारी तबियत सफर के क़ाबिल नहीं है। कुछ हर्ज नहीं कि एक या दो रोज और मुल्तवी करना पडे। तन्द्रुस्ती का खयाल रखो।

13-XI-44

मुताल्लिका महाबन : यह वो मकाम है जहां कि कृष्ण जी महाराज मय अपने ग्वाल व सखाओं के बैठे थे। गायें उन के चारों तरफ अहाता कर लेती थीं।

तुम्हारा काम मैं ने श्री कृष्ण जी महाराज के सामने रख दिया, मेरी तारीफ़ हुई।

श्री कृष्ण जी : मथुरा मुनव्वर हो चुका है।

हज़रत क़िब्लाः कल महाबन का कूच। तुम को बहुत तीर्थ स्थानों पर जाना होगा और मक़ामातमुनव्वर करने होंगे। यहां के बाद नीमसार का दौरा है। अजुध्या (अयोध्या) की क़तई ज़िन्दगी खींच लो।

वाक़याः आज शाम के वक्त किसी साहब ने जांच करने को तवज्जह दी। झुलसी हुई कैफ़ियत थी। जब उन का दौर ख़त्म हो गया

तो हुकमन मैं ने शुरुआत की। उनको क़ल्ब में बहुत से चक्कर दिये और मक़ामे सिर्र से उन के दिल में हस्बे ईमाए-हज़रत क़िब्ला आग पैदा की गई। आख़िर मुआफी मांगी और हाथ जोड़ कर ख़डा हो गया। तवज्जह देते वक़्त यह आवाज आ रही थी कि मैं मरा।

हज़रत क़िब्लाः यह साहब एक गृहस्थ हैं जिन्होंने गेरुआ कपड़ा पहनना शुरू कर दिया है। मथुरा में जब चमत्कार देखा तो आप को भी जुकाम शुरू हुवा और जांच करने की ग़रज से झुलसी हुई तवज्जह दी।

नोट : इस के बाद अब्दाल मथुरा जो हुकमन मेरी हिफ़ाज़त कर रहा था। इस वाक़ये को जान कर मुझ से हुक्म मांगा कि उसकी जिसने बदतमीज़ी की क्या हुक्म है। मैंने कहा कि उसंको जांच करवा दी गई। और उन्होंने माफी मांग ली है।

14-XI-44

यह वो टीला है जहां कि कृष्ण भगवान मए ग्वाल़ बाल बैठे थे। यह टीला उस वक़्त बहुत बड़ा था। इस के दक्खन जानिब क़रीब चार बिस्वे के जो खेत हैं वो इस में शामिल था।

हदूदर्बा

मशरिक	मग़रिब	शुमाल	जनूब
सड़क	खेत बादा जमना	खेत	खेत

जिस वक्त मैं इस टीले पर गया तो अहसास हुवा कि श्री कृष्ण जी टीले के बीच में जो सब से ऊँचा है, रौन्नक अफरोज हैं और बंसी बजा रहे हैं और ग्वाल बाल चारों तरफ बैठे है और नीचे के हिस्से में गायें थी ज़ो निहायत तन्द्रुस्त थी। यहां का दृश्य बहुत सुहावना था। यह मन्ज़र देख रही थी।

नक्शा मौक़ा महाबन

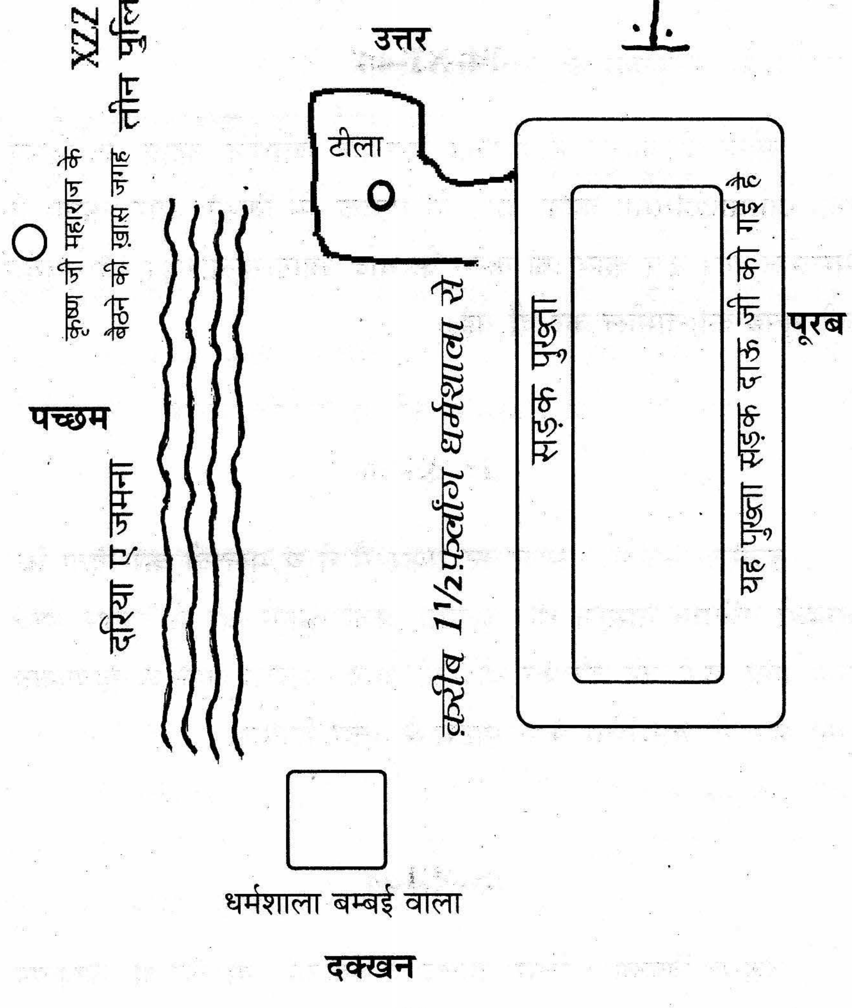

श्री कृष्ण जी : मक़ाम ठीक मालूम किया। यह मेरा रोज़ाना का शग्ल था। मैं बरसों इस टीले पर बैठा हूँ।

ख्यालात साकत हो कर रह गये थे। कोशिश करने पर भी खयालात नहीं आते थे। बीच का हिस्सा जो ऊँचा है, बहुत मोडसर था।

14-XI-44

सोने की हालत में इरशाद हुवा कि चतुर्भुज सहाय के शिष्यों का connection काट दो। मैं ख्वाब में किसी और काम में मसरूफ था। उस काम को करने के बाद आँख खुल गई।. 15 नवंबर की सुबह को तामील कर दी गई।

15-XI-44

हज़रत क़िब्ला : आज का सफ़र मैं ने यूं मुल्तवी कर दिया कि तुम्हारी तबियत नासाज थी। इलावा अंजी तुम्हारे घर में तुम्हारे साथ नन्द गाँव जाने की तबियत थी। वो अन्दर-अन्दर जाने के ख़यालात बना रही थी, इस लिये मैं ने मोटर से उतार लिया।

16-XI-44

हज़रत क़िब्ला : जिस तालाब के किनारे तुम बैठे थे, श्रीकृष्ण

जी महाराज का इसी तालाब से मतलब था। यह बड़ा मुतबर्रिक मक़ाम है। यहां पर कृष्ण और राधा की पहली मर्तबा भेंट हुई थी। इस के क़रीब में एक जंगल है जहां कि यह दोनों खेला करते थे।

नक्शा नन्द गाँव

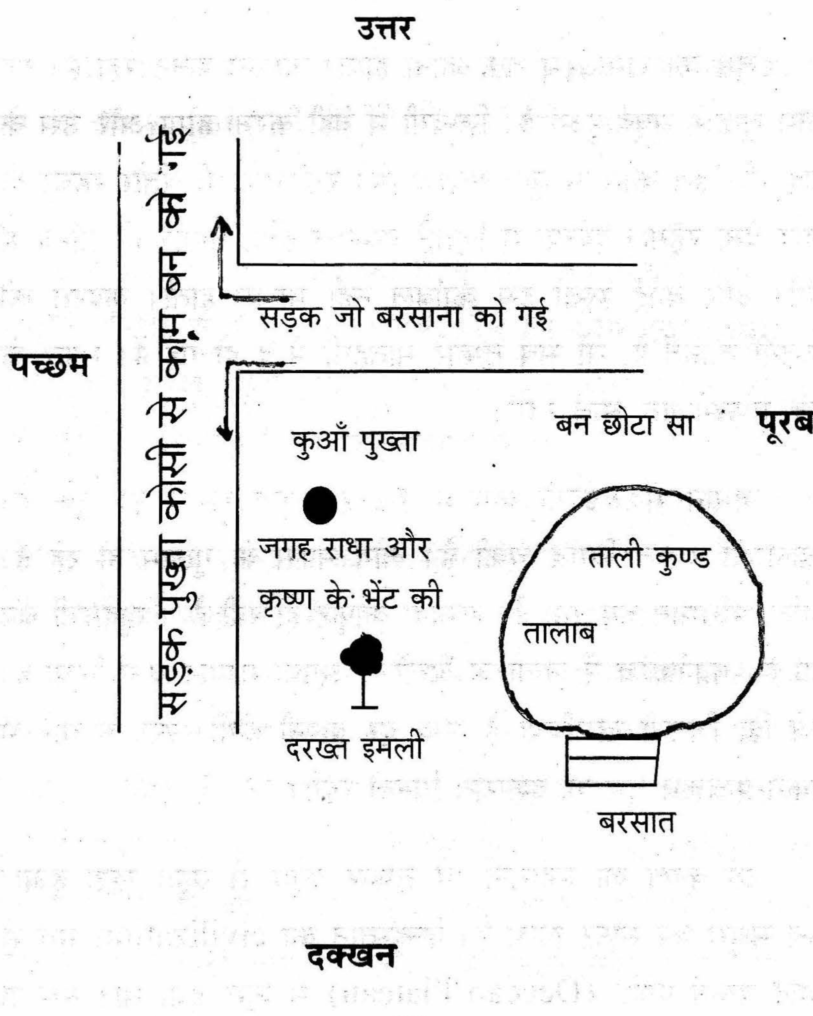

श्री कृष्ण जी महाराज : मक़ाम ठीक मालूम किया। जिस कुएँ पर तुम बैठे हो, उस वक्त यह कुआँ नहीं था।

हज़रत क़िब्ला : किसी ने तुम को बहका दिया। मेरा मतलब इसी कुण्ड से है, जहाँ से अभी वापिस हुये हो। धोबी का पोखरा जिस किसी में बतलाया है, वो सिवाये पोखरे के और कुछ नहीं है। शक न लाओ। जगह ठीक मालुम की।

तुम को रामेश्वरम तक जाना होगा। जमाना पलट रहा है। यह काम तुम्हारे सुपुर्द हुआ है। ज़िन्दगी में यही करना होगा और उस के बाद भी। इस काम से तुम आज़ाद नहीं रखे गये। मैं बतौर रहबर के मदद देता रहूँगा। दुनिया में जितने तबादलें होंगे, तुम्हारे ही ज़रिये से होंगे। और कोई हस्ती इस क़ाबिल नहीं मालूम होती। कुदरत की जितनी ताक़तें हैं, वो सब तुम्हारे मातहती में दे दी गई हैं। सफ़र के वक्त तफसीलात आते रहेंगे।

ज़मीन में रूईदगी कम हो गई है। तीर्थ खराब हो चुके हैं। इख़लाकी हालत बिगड़ चुकी है। लोग नफ़्स के गुलाम हो रहे हैं। जाति अभिमान बढ़ रहा है। हमर्ददी काफूर हो रही है । खुदग़र्जी बढ़ रही है। मक्रोफ़रेब ने लोगों के दिलों में अपना मस्कन बना लिया है। गर्जे कि जितनी ख़राबियाँ हैं, सब दूर करनी होंगी। इस के बारे में वक्तन-फवक्तन तुम को इशारात मिलते रहेंगे।

श्री कृष्ण जी महाराजः मैं तुम्हारे काम से बहुत खुश हुआ। अब मथुरा का सफ़र खत्म है। हिन्दुस्तान का civilization सब से पहले डकन प्लेटो (Deccan Plateau) से शुरू हुवा था। सब से

पहले यही ख़ित्ता समन्दर से बरामद हुवा था। लिहाजा यहीं से काम शुरू कर दो।

19-11-44

पुल के ऊपर मक़ाम P पर गुज़रने से सीधी पड़ जाती थी और कुछ अज़ीब लताफ़त पैदा हो जाती थी। पुल के नीचे उतरा तो एक अपने रशेतदार को जगह P पर भेजा तो उस की यह हालत हो गई कि ख्याल कोशिश से भी इधर उधर नहीं जाते थे। यह एक नावाक़िफ़ शख़्स का अहसास था। मुझ को इस मक़ाम पर जूता उतार कर केभी जाने की इज़ाजत न दी गई। यह इस कदर मुतबर्रिक जगह थी। सफ़र मथुरा खत्म हो गया।

21-XI-44

हज़रत क़िब्ला : मेरी कुल बातें हज़रत मौलाना साहब (रहम०) क़िब्ला से हुई और सब वाक़यात उनके सामने रख दिये गये। मैं मुरव्वत और बुर्जुगी से मजबूर हूँ। मगर यह बात मुझ में ज्यादा दिनों नहीं रहेगी। उनका (मौलाना अब्दुलग़नी खाँ साहब) connection (यानी सिलसिला नक़्शबन्दिया मुजद्दिया) टूट चुका है मगर उन को ख़बर नहीं।

नक्शा

Jamuna Bridge, Mathura **उत्तर**

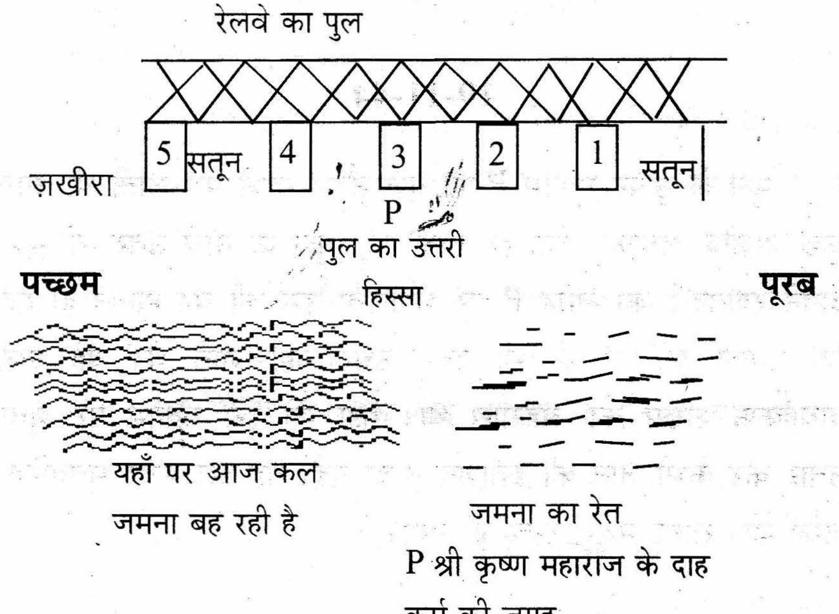

नोट- पूरब की तरफ़ से किनारे के सतून से शुमार करते हुये चौथे सूतन के पास वो जहग है

दक्खन

22-XI-44

बाबू मदन मोहन लाल । अज़ीज राम चन्द्र ने मथुरा में वो कारे-नुमायाँ किये हैं जो दूसरे के लिये नामुमकिन थे। हमारे मौलवी

साहब भौगाँवी के अब तक यह समझ में नहीं आया कि यह क्या गुल खिल चुका है। अगर मैं अज़ीज राम चन्द्र को इज़ाजत दे दूँ तो यह एक सैकिंड में उन को सलब कर सकता है। मुझे कहना पड़ा 'बुजुर्गी ब-अक्ल अस्त न ब-साल'। मैं अपनी ज़िन्दगी में उन को बड़ा समझता रहा हूँ। वजह यह थी कि जनाब मौलाना अहमद उली खाँ साहब रज़ीउल्ला उन्हीं के शिष्य थे। उन की निगरानी मेरे सुपुर्द थी मगर मैं ने उस का इज्हार नहीं होने दिया। इसी लिहाज से अब उन की निगरानी जनाब मौलाना साहब ने अज़ीज़ राम चन्द्र के सुपुर्द की है। यह ही एक खयाल जो अपनी ज़िन्दगी में, मैं ने उन के लिये बनाया था। उन को बचा रहा हूँ, tolerate कर रहा हूँ। मगर आखिर हर बात का होना है। एक मौक़ा उन को सम्भालने का और दिया जाता है। जन्नत तो उन के हाथ से निकल ही चुकी है। हूर व गुल्माँ का अभी खयाल बाकी है। कल ज़नाब मौलाना साहब से उन के बारे में बहुत कुछ गुफ्तगू हुई। आखिर को यह तय हुआ कि फ़िल्हाल उन को उन्हीं के रहमोकरम पर छोड दिया जाये। उन की हालत बहुत गिर चुकी है। उनका होश में आना मुश्किल मालूम होता है। एक बहुत बड़ी गलत बात है जो आम तौर पर हो रही है। वो यह है कि अपने से छोटे से नसीहत लेना कस्रे-शान समझा जाता है। रुहानियत में उम्र का लिहाज नहीं होता। यह एक जज़्बा है कि जिस वक्त जिस में चाहे, भड़क उठे। और यह ज्यादातर संस्कार और मुहब्बत पर मब्नी है। उन्होंने गुलिस्तान की बहुत सी हिकायात पढ़ी और बहुत तर्जुबें हासिल किये। काम का distribution अज़ीज राम चन्द्र ने सही तौर पर किया है। मैं उस को दोहरायें देता हूँ। गोबिन्दजी के

मन्दिर का नक़्शा जो रामेशर खींच कर लाया है और वहां के साकिनान ने जो मज़ालिम जात्रियों पर किये हैं, उन सब का destruction रामेशर के ताल्लुक इलावा और ड्यूटियों के रहेगा। उन के काम में सुर्ख मस्जिद भी शामिल है। बाबू मदन मोहन लाल के इलावा और ड्यूटि के दोनों मस्जिदों का काम है। दाऊजी के मन्दिर की destruction करने की ज़रूरत नहीं। उसके मुताल्लिक जो काम है उस के बारे में जब मैं हुक्म दूं तब देखा जायेगा। ब्रह्मणों का destruction जिस में मथुरा भी शामिल है, रामेशर से ही ताल्लुक रहेगा। अगर मैं मथुरा के ब्राह्मणों के destruction में जल्दी करना चाहूँगा तो अज़ीज़ राम चन्द्र को भी शामिल कर दूंगा। पण्डित कन्हैया लाल को destruction से छोड़ देना। अज़ीज़ राम चन्द्र मथुरा की निस्बत सिर्फ़ constructive प्रोग्राम अपने ताल्लुक रक्खेगा। उसके पास दो बहुत बड़े काम हैं। जिसमें कुल हिन्दुओं का construction भी शामिल है। मैं उस को जगह ब जगह इसी प्रोग्राम की तकमील करने के लिये दौरा कर रहा हूँ। उस को बहुत बड़ा काम करना बाक़ी है, इसलिये वग़ैरा काम तुम लोगों (MM & RC) के सुपुर्द करता हूँ। जमाना बहुत जल्द अच्छा आने वाला है और इस की मुद्दत कम करना अज़ीज राम चन्द्र के हाथ में है। मैं यहां से जा कर अपने हज़रत की खिदमत में पहुंचा। कुल वाक़यात ख़त की निस्बत अर्ज़ कर दिये। हुक्म हुवा है कि उन को क़तन सलब कर लो यानी मौलवी अब्दुल ग़नी ख़ान को। मैं ने फ़िल्हाल इस को रोक रखा है।

23-XI-44

शंकराचार्य की गद्दी उलट दो। यह काम आज ही से शुरु कर दो। सन्यासी पतित हो चुके। सिर्फ़ ढ़ोंग रह गया है। उन के दिमाग़ महज गेरुआ पोशी की वजह से अर्शे-मोहल्ला पर रहते हैं। आदमी को आदमी नहीं समझते । नारायण रूप बने बैठे हुये हैं और समझते हैं कि कुल दौलत हमारी है।

श्री कृष्ण जी महाराज : मैं शारदा पीठ गया था। वो गद्दी उलट देने के क़ाबिल है।

24-XI-44

तुम्हें रामेश्वरम और जहाँ-जहाँ मैं बताऊँ जाना लाज़मी हो गया। और तुम ने इरादा भी कर लिया। इस का नतीजा किसी वक्त में बहुत अच्छा निकलेगा। और जिन्दगी के बाद इस काम में तुम को और भी आसानी हो जायेगी। तन्द्रुस्ती का मुझे ख़याल ज़रूर है। मगर मज़बूरी है। हुक्म कुदरत जिस के लिये तुम आये हो, करना ही पड़ेगा। मैं तुम्हारा एक मिनट भी साथ नहीं छोड़ूँगा। और मुमकिन है कि इस दौरान में यहां की हाज़री कम रहे। घर और बच्चों को ज़रूर देखता रहूँगा। अब मैं तन्द्रुस्ती की अहतियात बताता हूँ। जिस वक्त तुम को सफ़र की थकान ज्यादा मालूम हो और energy कम होती हुई मालूम हो तो फ़ौरन अपने जिस्म के जर्रात खोलकर ब्रह्माण्ड की ताकत में लय कर देना। यह काम एक या दो मिनट से ज्यादा करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। अगर तरीक़े में ग़लती होगी तो मैं बता दूँगा।

जो मर्ज़, खुदा न करे, अगर पैदा हो जाये, उस का इलाज मैं फ़ौरन ही करूँगा। पानी तैयार रखना। इलावा इस के जो तुम खुद कर सकते हो, वो बतलाता हूँ। अगर मेंदे में तकलीफ़ पैदा हो जाये या दस्त की हाजत बार बार होने लगे। खुदा न करे तो आफ़ताब का तसव्वुर बांध कर, ख्वाह तुम सोच में क्यों न बैठे हो, सुर्ख बिजली अपने मेदे में खींच लेना, और यह अमल 5 मिनट तक किया जा सकता है। इस से ज्यादा करने में ग़रमी महसूस होगी। अगर खुदा न ख़ास्ता खांसी की या बल्गम की शिकायत पैदा हो जाये तो आफ़ताब की नीलगूं किरन अपने सीने में ले लेना। और अमल 10 मिनट तक किया जा सकता है। अगर जिस्म में थकान ज्यादा मालूम हो तो अव्वल मैं खुद दूर कर दिया करूँगा। अगर खुद दूर करना चाहो तो उस की यह तकरीब होगी कि तुम तसव्वुर बांधोगे कि ब्रह्माण्ड से नन्ही-नन्ही फ़ुवार कुल जिस्म के हर ज़र्रे में गिर रही है और ताज़गी बढ़ रही है। अगर चलने का इत्तफ़ाक ज्यादा हो तो यह ख़याल बांध दो कि ज़मीन पीछे हट रही है और मेरा क़दम आगे को जा रहा है। इस में फ़ासले में कमी पड़ जायेगी। यह ख़याल जितनी ऊँची हालत में चढ़कर बाँधोगे उतनी ही जल्द फास्ला तय होगा। यह सिद्धियां हैं। हर शख्स को बताने की मुमानियत है। चलने की एक तरक़ीब और बताता हूं जो बेहतरीन है। वक्त पर बतला दूंगा। तुम्हारे लिय एक तरक़ीब यह भी है, मगर यह सिर्फ़ तुम्हारे ही लिये है। कि जिस शक्ति से काम लेना है उस के मवक्किल या देवता को तलब कर लो। वो ही काम वो करेगा जो उस की ड्यूटी है । और यह नुस्खा सहल है। रूहानियत के बहुत से तारीफ़े हो सकती हैं और इस की तारीफें लोगों ने मुख़्तलिफ़ stages पर मुख़्तलिफ़ बतलाई हैं। जिस की जैसी

हालत है उसी के मुताबिक उस ने उस की तारीफ़ गढ़ दी है। मगर यह एक ऐसा सरल रास्ता है कि जिस को तय करने के बाद तमाम खसोख़ाशाक, झाड़ झंकाड़ ख़याल को छोड़ देते हैं और ख़याल इस तरीक़े से क़ायम हो जाता है गोया उसे अब किसी बात का होश भी नहीं है। कोई नुक़्ता सामने नहीं रहता। न अपना होश न बच्चों का ख़याल, न जात की तमन्ना। यह एक आला पैमाने की बात है जो वाक़ई तौर पर शजोनादर मिलती है। और रुहानियत भी वाक़ई यह ही है। इस हालत पर पहुँचने पर जमीअ हवासे - खम्सा सब अपने स्थानों पर लय हो जाते हैं। और उस शख्स को मुर्दे कैसी हालत अपनी मालूम होने लगती है। दौलत होते हुये उस को एहसास भी नहीं होता। दूसरे लफ़्जों में यह कहा जा सकता है कि जैसे अज़ल उतरा है, वैसा ही हो जाता है।

25-XI-44

बिशन की सैरगाह अब विलाते उलिया है। बाबू मदन मोहन लाल को मुबारक बाद दो। रामेश्वरम में बुजुर्गों ने काम करना शुरू कर दिया है। यह मक़ाम ऐसा अन्धेरा हो रहा है कि किसी बड़ी हस्ती का जाना लाबुदी है। द्वारका भी बमन्शा श्री कृष्ण जी महाराज, अज़ीज़ राम चन्द्र को जाना होगा। द्वारका का काम इसी सफ़र में ख़त्म कर लेना। श्री कृष्ण जी महाराज इस में बहुत जल्दी कर रहे हैं। निज़ाम की डोमिनियन (रियासत) में कुछ अर्सा क़याम रहेगा। और वहीं से तुम्हारा काम हिन्दुस्तान की बेहतरी और बहबूदी के

लिये शुरु होगा। मुमकिन है निज़ाम की सल्तनत तुम्हें लौटना पड़े। यह बात तुम्हें मौक़े पर बता दूँगा। अगर मौक़ा मिल जाये तो द्वारका से सिन्ध होते हुये निकल आना। वहां फक़ीरों ने बड़ी गड़बड़ मचा रक्खी है। मुमकिन है कि destruction का हुकुम मिले। मैं तुम को इजाज़त देता हूँ कि दौराने - सफर में तुम नबुवत की हालत पर क़ायम रहो और हर जगह इसी से काम लो। अगर इत्तफाक से सतसंग का मौक़ा पड़ जाये तो उतनी देर के लिये उतर आना। जितनी spiritual societies हैं या जितने बुजुर्ग फ़ुकरा अस्नाए-सफर में मिलें या तुम्हारा मिलने को जी चाहे, मिलने की इजाज़त देता हूँ। जिस वक्त और जब चाहो, इस बात की तुम्हें हमेशा इजाज़त है। इन लोगों में मेरी सज्जादा नशीनी का राज़, अगर मौक़ा पड़ जाये, तो खोलने में कोई हर्ज नहीं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि बड़े-बड़े फ़क़ीर तुम को तिफ़्ले मकतब नज़र आयेंगे। रियासत हैदराबाद में नवाब की एजन्सी हिन्दुओं से मुसलमान बनाने का काम कर रही है। इस का destruction बाबू मदन मोहन लाल के सुपुर्द कर दो। मैं ने अज़ीज़ राम चन्द्र को कल भी काफ़ी देर तक तवज्जह दी और आज भी। मक़्सद तवज्जह का यह था कि इस के जिस्म के हर ज़र्रे में जात की पूरी ताक़त भर दी जाये और रामेश्वरम जाने तक मैं यह ही करता रहूँगा। ताकि जिस्म का हर जर्रा वहां पहुँचने से क़ब्ल जात का पूरा असर लेले। यह सब मेरी ईजादें हैं और इस से आगे जो इन के लिये होंगी, वो भी मेरी ईजाद होंगी। क्योंकि मैं ने जिस्म रखते हुये वो बात मुमकिन कर दिखाई जो छोड़ने के बाद नसीब होती है।

क़ायदा कुल्लिया बाबत तालीम निस्वाँ =

औरतों को तालीम देने का सब से बेहतर तरीक़ा यह है कि अव्वल तो अपने सामने न बिठाये, अगर इत्तफ़ाक हो तो तिरछा बैठे। परदे का लिहाज़ मुफ़ीद होगा। जिस वक्त तवज्जह शुरु करे, उस वक्त एक मर्तबा यह ख़याल करें कि खुदा ने प्रकृति भी पैदा की है। जो अन्सर कि उस में मौजूद हैं वो जात में तब्दील हो गये। फिर तवज्जह देना शुरु करें। तवज्जह निहायत हल्की, शान्त और भीनी-भीनी होना चाहिये। उस को दिल के मक़ाम पर मरदों की तरह ज्यादा नहीं ठहराना चाहिये। मगर उस का यह भी मतलब नहीं है कि जिस हद तक ज़रूरत है, उस हद तक ठहराया जाये। उस की तालीम जिस वक्त इज़ज़त दे फ़ौरन रूह के मक़ाम पर उस को ले आना चाहिये। तेज़ तवज्जह कभी नहीं देना चाहिये। ख्वाह किसी स्टेज की तवज्जह दी जावे, मगर इस का खयाल बराबर रहना चाहिये। उनको सबक घर गृहस्ती को बेहतर बनाने के लिये और शेहर अगर मौजूद है तो उस की मुहब्बत का देना चाहिये। अगर बेवा है तो ईशर से मुहब्बत करने की तल्क़ीन की जावे। अगर ज्यादा मोत्क़द है और सिखाने वाला भी बहुत ज़बरदस्त और आली ज़र्फ है (जिस की मैं आम पर मुमानियत करता हूँ) तो सिखाने वाले की रूह को ईशर का जिस्म समझ ले और तसव्वुर बांधे। शग्ले-राब्ता हरगिज़ नहीं बताना चाहिये और उस को (औरतों को) किसी तरीक़े से इस के करने की इजाजत न दी जावे बल्कि मुमानियत कर दी जावे। बी-बी अपने शौहर का शग़ले-राब्ता कर सकती है। इस के लिये इजाज़त है। सिखाने वाले को यह भी एहतियात रखना चाहिये कि ऐसा न हो कि वो उस की

मुहब्बत में परेशान हो। इसलिये उनकी तालीम बहुत मुश्किल है। यह ही वजह है कि कुदरत ने इन मामलात में उन का हिस्सा ज़रूरत से ज्यादा नहीं रखा। कंवारी लड़की को यह अमल बजुज़ किसी खास सूरत के नहीं बतलाना चाहिये बल्कि प्रार्थना और मामूली पूजा बताने में कोई हर्ज नहीं। मेरी समझ में अगर कँवारी लडकियों को कृष्ण उपासक बना दिया जाये तो बेहतर है मगर साथ ही साथ उन के दिमाग़ में यह भी बिठाल दिया जाये कि कृष्ण जी महाराज एक ऐसी बुजुर्ग और पाक हस्ती थे कि उन के बारे में, निस्बत चाल चलन जो कुछ भागवत वगैरह में लिखा है, वो ग़लत है। गायबाना तवज्जह देने में चन्दाँ हर्ज नहीं। नन्हें ने जो तरीक़ा औरतों को तवज्जह देने का बतलाया है वो भी किसी हद तक सही है और बेहतर है, मगर इस की एहतियात वो खुद न कर सके। और शग़ले राब्ता किसी को बता ही दिया। बिरजू को जब से इजाज़त मिली, उस वक्त से उन का दिमाग ख़राब हुवा। इस से पेश्तर यह बात न थी।

आपस में अस्नाए गुफ़्तगु में कुछ अहसास के मुताल्लिक ज़िक्र छिड़ गया। फ़रमाया = मैं इस का भी जवाब दिये देता हूँ। जब नन्हें को तर्जुबे से और अज़ीज राम चन्द्र की हिमाक़त से यह साबित हो गया कि यह अहसास में अपना सानी नहीं रखता तो नन्हें को यह फ़िक्र हुई कि यह कम होना चाहिये। तसव्वुर बांधा कि इस के ख़याल के आखरी नुक्ते पर एक मोटा पत्थर लगा हुवा है, और इस खयाल को वो अकसर बांधे रहते थे। और इस (RC) को अहसास भी होता था कि मेरे अहसास में कुछ रुकावट डाली गई है। मैं यह बात बराबर देखता रहता था और अकसर बल्कि कई मर्तबा इस पत्थर

को मैं ने पाश-पाश किया है। इस पत्थर लगाने का एक यह भी मतलब था कि इस की (RC) सुरत आगे बढ़ने से रोकी जावे। यह मेरी ही हिम्मत थी कि ऐसे ज़बरदस्त दुश्मन से बचा कर साफ निकाल लाया। अगर रामचन्द्र मेरी ज़िन्दगी में काफी अच्छी फ़नाईयत न पैदा कर लेता और मैं इस में समा न चुकता तो यह बात नामुमकिन नज़र आती। अभ्यास की वजह से उन में (नन्हें में) खयाली ज़ोर बहुत था और हमारे यहां कोई मेहनत ही करना नहीं चाहता था।

यह मुख़तलिफ ताकतें जो कुदरत की हैं, उन से काम लो। तुम में यह भी ताक़त मौजूद है कि अगर तुम्हारे हुक्म के ख़िलाफ काम करें तो उन को इस हालत से गिरा दो। मगर ऐसा करने से उन के बजाये तुम को खुद काम करना पड़ेगा।

कुदरत की ताकतें मुन्दर्जा जैल हैं।

1 इन्द्र : इन्द्रयों को दिन में सशक्त (शक्ति) प्रदान करता है। पूरब का मालिक।

2 यम् : दक्खन के मालिक हैं। नाश करना काम। दक्खन का मालिक।

3 बरुण : जल का राजा है। नदी व समन्दर वगैरह का इन्तजाम सुपुर्द है। पच्छम का मालिक।

4 सूरज (आदित्य) : प्रकाश प्रदान करता है और रंगों को चलाता है।

5	कुबेर :	धन का मालिक है। उत्तर का मालिक।
6	चन्द्रमा (नीरत):	गन्ध प्रदान करता है और शीतलता बढ़ाता और रात में इन्द्रियों में काम शक्ति पैदा करता है।
7	अग्नि :	संसार को स्थिर रखता है और खाना हजम करता है। पूरब और दक्खन कोने के मालिक।
8	वायु :	प्राण शक्ति है। चेतन्ता (चैतन्यता) देती है। पच्छम और उत्तर कोने के मालिक।
9	आकाशः	ऊपर का मालिक।
10	शेष नाग	पाताल के मालिक ।
11	राकशश	पच्छम व दक्खन के मालिक।
12	ईशर या शिव	उत्तर और पूरब कोने के मालिक।

सवाल मदन मोहन लाल : महाभारत में शहद खाना मना किया है?

श्री कृष्ण जी महाराज : शहद की मुमानियत इसलिये जैनियों ने की है कि उस में बहुत सी मक्खियों का खून होता है। अमृत के बाद वाक़ई तौर पर शहद का नम्बर है। महाभारत में हज़ारों का खून सत बात और फ़ायदा पहुँचाने के लिये किया गया। अगर एक़ इन्सान के फ़ायदा पहुँचाने के लिये चन्द मक्खियों का खून हो जाये तो हर्ज नहीं।

26-XI-44

हज़रत क़िब्ला : हरी बाबू को इत्तला दे दो कि अब तक उन्होंने लोगों (बिरजू वगैरह) से बहुत धोखा खाया। बिरजू की पहुंच इस वक्त कुबरा तक रह गई है और अपना सिक्का जमाने के लिये तुम को ऐसी तवज्जह दी गई है जिस के संभालने के लिये मामूली ताकत से काम नहीं चल सकता था। मैं ने इस वक्त वो जुम्ला गड़ बड़ बातें जो उन में ठूँसी गई थीं, सलब कर के उन को दिल के मक़ाम पर डाल दिया। इस की तारीफ़ अज़ीज राम चन्द्र या बाबू मदन मोहन लाल से तन्हाई में दरियाफत कर लेना। उन्हों (हरी बाबू) ने मुझ से बहुत प्रार्थना की है कि मुझ को जल्द से जल्द किसी ऐसी हस्ती के हवाले किया जाये जिस की निस्बत मुझी से हो। मैं ने इस का मन्जूर कर लिया और एक मर्तबा इस का साफ़-साफ़ जवाब भी दे दिया। मैं उन को आज उस हस्ती के हवालें करता हूं जिस के सामने बड़े बड़े धुरन्दर फ़क़ीर तिफ्ले मकतब नजर आयेंगे। अगर उस के हुक्म से मुँह न मोड़ा तो मैं वायदा करता हूँ कि तकमील कर दूंगा। अब तक सज्जादा-नशीन के धोके में वो (बिरजू) और दीगर साहिबान बहुत रहे। वक्त आ रहा है कि यह बात भी मालूम हो जावेगी और मैं बता भी सकता हूं, बशर्ते कि वो एक मर्तबा मेरे हज़ूर में आकर वायदा करें कि यह राज़ तावक़्ते कि मैं हुक्म न दूं किसी पर जाहिर न हो। अगर जाहिर कर दिया तो मैं किसी ख़ास शख्स को रूह क़ब्ज करने के लिये हुक्म दे दूंगा। तुम्हारे (हरी बाबू) पास तो भला मेरे सज्जादा-नशीनों की क्या जांचे हो सकती हैं। मैं कुल दुनिया को चेलेंज दे कर कह रहा हूँ कि कितने ही दिमाग दोडाये जायें, उस की

हालत की पहली ही सीढ़ी तक ख़याल पहुँचेगा। उस की आख़री हालत या आख़री दौड़ और तरक्की मैं ही जानता हूँ । जो हस्ती अज़ीज राम चन्द्र की है। अब सवाल यह पैदा होता है कि मैं ने अपने विसाल के 13 साल के बाद अब क्यों ऐलान वैलान करना चाहता हूँ। इस का जवाब यह है कि मसलहते-वक्त उस के छुपाने की थी। उस की जान जोखम का मामला था। और इस वक्त भी अगर उन चन्द अश्खास को (नन्हें वगैरा को) मालूम हो जाये तो अब भी उस को इस दुनियाँ में न रखने की कोशिश करेंगे। यह और बात है कि वो कामयाब न हों। ज़रा से शुबह पर उस को ज़हर देना चाहा था। मगर मैं ने इस ख़याल को उस मलऊन (मुन्शी) के दिल में क़ायम होने नहीं दिया। इस अहतियात की वजह से मैं आज तक छुपा रहा हूँ। जो शख्स उन से (सज्जादा नशीन) मुहब्बत करेगा, वो मेरी ही मुहब्बत होगी। इस लिये कि यह (RC) अपना ज़र्रा-ज़र्रा मुझ में लय कर चुका है और मैं पूरी ताकत से उस में फ़ना हो चुका हूँ।

अब मुझे ताब नहीं मौलवी साहब का destruction शुरू कर दो। चराग गुल हो जाना चाहिये। यह काम मैं तीनों के सुपुर्द करता हूँ। तुम तीनों अपने काम इस तरीक़े से तक़सीम करो कि बाबू मदन मोहन लाल उन को क़तई तौर पर ठस कर दें। दिमाग में सोचने की ताक़त न रहे। रामेश्वर उनके सब मुताल्लक़ीन के मए उनकी life खींच लें और तुम नबुवत की हालत में जा कर डिस्ट्रक्शन शुरु कर दो। उन्होंने एक बड़ा जबरदस्त अमल शुरु कर दिया है। अपने घर की और बच्चों की जहाँ-जहाँ मौजूद हैं, तीनों शख्स मिल कर हिफाजत करें। मैं इस वक्त मथुरा जा रहा हूं और खुदा गञ्ज

(स्टेशन) भी जाऊँगा। जहां तुम्हारी लड़कियां मौजूद हैं। (मौलवी अब्दुल ग़नी ने अमले-फ़नाईयत शुरु किया) ।

रामेश्वरम जाने से पहले मैं जो तैयारी जिस का कि इशारा कल किया है करना चाहता था: कर दी। बैल के दलाल अज़ीज़ राम चन्द्र से बात चीत करने आये थे, इस वजह से सफ़ाई बाकी रह गई, वो कल कर दूँगा। इस के (RC) हर ज़र्रे में ज़ात की ताकत पूर्ण रूप से मिलेगी। 10 दिसंबर तक कोशिश कर के या उसके दो एक रोज़ बाद तक चले जाना। यहां पर (रामेशरम) साधुओं ने कुछ शरारतें ऐसी करना शुरु कर दी हैं जिस से लाज़िम आया कि उन का डिस्ट्रक्शन कर दिया जावे। इस वक्त बादी उल नज़र में मैं ने यह बेहतर समझा मगर यह काम मौक़े पर पहुंच कर जैसा हुक्म दूं, वैसा शुरु करना। निज़ाम की सलतनत उलटना होगी। यह तय हो गया है। यहां (द्वारका) तो मुझे बड़ी अजीबो ग़रीब बातें मिल रही है। ब्राह्मणों ने ऐसी ढ़ोंग की शक़्लें पैदा कर दी हैं। यात्रियों की गोट खूब काटी जाती है। इस मुतबर्रिक जगह को बहुत अशुद्ध कर दिया है। जिनाकारी भी खूब हो रही है। इन सब का डिस्ट्रक्शन करना पड़ेगा।

मैं ने बाबू मदन मोहन लाल (लखनऊ) को कुबरा से खींच कर उलिया में डाल दिया और उलिया से इब्द पर। मगर शेर :

"तही दस्ताने किस्मत श च सूद अज़ रहबेर कामिल,

कि ख़िज्र अज़ आबे-हैवां, तिश्ना लब आरद सिकन्दर रा।"

(अर्थात : जो बदक़िस्मत हो उसे एक सम्पूर्ण मार्ग दर्शक से भी क्या लाभ हो सकता है। क्यों कि ख़िज्र (रास्ता दिखाने वाला पेगम्बर) के अमृत के पास ले जाने के बाद भी सिकन्दर प्यासा ही आ गया।)

उन्होंने तुम से ऐसी उखड़ी-उखड़ी बातें की कि मुझे तवज्जह देने पर अफ़सोस हुवा। यह नहीं मालूम कि उनकी क्या किस्मत थी जो इतना कर दिया गया। आगे अभी नहीं। इरादा कुतुब बनाने का था। कोई राज़ उन पर खोला न जाये।

27-XI-44

हज़रत क़िब्ला: मैं ने कल हरी बाबू को सुग़रा से निकाल दिया। अब आज उन की सैरगाह विलायेत कुबरा है। खुदा इन को और तौफ़ीक़ अता फ़रमावे। यह सफ़र की तैयारी है। वक्त 7 बज कर 2 मिनट शब : मौलवी अब्दुल ग़नी खाँ से जितने भी बैअत हों, ख्वाह हिन्दु हों ख्वाह मुसलमान, उन के connection इसी वक्त काट दिये गये। बिस्तस्ना बिरजू, सब का destruction होगा। अगर श्रीराम राहे रास्त पर न आवे तो 29 नवंबर सन् 44 ई० को सब को सलब कर लो।

हरी बाबू की अब सैरगाह बक्कत 9 बजे शब विलायते उलिया है।

28-11-44

इस वक्त बाबू मन मोहन लाल को वो तवज्जह दे दी गई जो कोई भी नहीं दे सकता था। सुगरा कुबरा और उलिया का काफ़ी तौर पर खुलाव हो गया। अब यह क़ाबिले-इज़ाजत हैं, मगर मजबूर ...।

रामेशर को एक मुराक्बा बहुत मुफ़ीद होगा। वो चारपाई या किसी चीज पर चित लेट जायें और थोड़ी देर सावधान हो कर बे-हरकत पडे रहें। उस के यह तसुव्वर बांधें कि मक़ामात रूहानी जो हमारे पीर ने इस वक्त तक खोले हैं, ख़ूब बढ़ रहे हैं। और उन में पीर क्री ताक़त समा रही है। ऐसा करते-करते जिस वक्त कि सम हालत पैदा हो जाये उस वक्त उस खयाल में स्थिर हो जायें और पड़े रहें। यह बहुत मुफ़ीद साबित होगा। बाबू मदन मोहन लाल को इस की ज़रूरत नहीं। करुणा शंकर को यह मराकबा बतलाया जा सकता है। जो लोग नन्हें से बैअत हैं, उन सब के connection तोड़ दो।

नोट : तोड दिये गये। वक्त 11 बज कर 44 मिनट दोपहर। बिरजू का connection मौलवी साहब से रात ही टूट चुका।

मौलवी अब्दुलग़नी खां साहब का connection भी इसी वक्त (11-49 दोपहर) हज़रत मौलाना फ़जल अहमद खां साहब (रहम०) ने तोड़ दिया। अब्दुल गफ़ार को सलब कर लो। जुमला ख़तूत जो यहां से मौलवी साहब को भेजे गये, और उन के जो कुछ इस वक्त तक आये हैं, नक़ल करके बिरजू को भेज दिये जावें। मैं ने तय कर लिया है कि बाबू मदन मोहन लाल से उन्हें (मन मोहन लाल) चतुर्भुज सहाय से ताल्लुक रखने को क़तअन मना कर दिया जाये । और उन

की तहरीर जो उन्होंने अज़ीज़ राम चन्द्र के लिये लिखी थी, दिखला दी जाये और कह दिया जाये कि उन को इस बात के लिखने का कहां तक हक़ हासिल था। मैं उन को आक़ कर चुका हूँ। इस काम को आज शाम तक ख़त्म कर लें। मैं शाम को आऊँगा तब मुझ को बता दें। जब मैं ने मौलवी साहब (अब्दुल ग़नी खॉ साहब) को नहीं छोडा तो चतुर्भुज सहाय क्या चीज़ थे। मैं बाबू मन मोहन लाल की सआदतमन्दी पर खुश हूँ। (उन्होंने ताल्लुक कताअ कर लिया, इस पर इरशाद हुवा था।) उन को तर्जुबे से साबित हुवा तो और तुक्का लड़ा लें, फिर मेरी बख़शिशें देख लें।

7 बज कर 45 मिनट, वक्ते शब

श्री कृष्ण जी महाराज = मेरा चक्र अब घूमने लगा है। मौलवी साहब की हिम्मत को देखना है। नहीं मालूम उन्होंने क्या समझ रक्खा है। अब इन यतीमों (orphans) का निगरान मुझे ही समझो। मैं मौलवी साहब की ताक़त को एक जर्रा बराबर भी नहीं समझता। उन की हक़ीक़त नहीं कि तुम में से किसी को नुकसान ज़रा भी पहुंचा सकें। connection सब टूट चुके हैं और वो मोरिज़े इताब हैं। उन के पास कोई ताकत ऐसी नहीं रही जिस से वो अपनी हिफाज़त कर सकें। एक बात मुझे कहना ज़रूरी है कि जितनी जल्द हो सके, घर छोड़ दो और रामेश्वरम जाओ। वहां की हक़ीकत जब तुम पहुंचोगे, मैं बता दूँगा । तुम इत्मीनान रखो कि तुम्हारे पीर साहब तुम्हारा किसी वक्त साथ नहीं छोड़ते और मुझ को ऐसा ही समझो। आज पाँच हज़ार बरस बाद जमाना फिर घूमा है और वो मैदाने जंग

का नक्शा जिस को महाभारत कहते हैं, अब भी मेरी निगाह के सामने है। हिन्दुओं का जवाल महाभारत के बाद से शुरु हुवा। अब वक्त अन्क़रीब है फिर उसी तरफ वापस हों, और यह बात बिल्कुल तुम्हारे अख्तियार में है कि जितनी जल्द चाहो उस ज़माने को जिस के लिये अब ईशरी हुक्म हो चुका है, वापस ले आओ। तुम्हारे पीर साहब ने इरशाद फ़रमाया है और बिल्कुल सही है कि दक्खन प्लैटो (Deccan Plateau) से तुम्हारा काम शुरु होगा। हर जगह मुनव्वर करोगे और साथ ही साथ destruction भी होगा। मैं सब वक्त-वक्त पर तुम को बताता जाऊँगा। निज़ाम की सल्तनत अब नहीं रह सकती। उस ने दर परदा हिन्दुओं का खून पिया है और एक ऐजन्सी ऐसी है जो उसके काम कर रही है। बहुत सी हिन्दु औरतों की उस ने इस्मत दरी की है । तुम को सफर में पूना होते हुये बम्बई ठहरना होगा। मुमकिन है वहां के लिये कोई पोलिटिकल काम दिया जावे। उसके बाद द्वारका जाना ज़रूरी है। सरहिन्द भी तुम को जाना होगा। काम अस्नाए-सफर में और मौकों पर मिलते जायेंगे। एक बात की बड़ी लिहाज की जरूरत पड़ेगी कि जहां तक हो सके रास्ते में या जाए-कयाम पर अपनी आँख किसी पर न बदल देना। क्योंकि तुम नबुंवत की हालत में होंगे। तुम्हारा गुस्सा न तुम्हारे पीर को बरदाश्त होगा और न मुझ को हो सकेगा। अगर इत्तफ़ाक से कोई साथी सफर के लिये तुम्हें मिल जावे तो उस को यह फ़ेल होगा कि तुम्हें शान्त रखने की कोशिश करे। किसी की ताक़त नहीं जो तुम से भिड़ सके। अपने काम जो ज़रूरी हो, अपने पीर भाई के जो सब से श्रेष्ठ हो, और उस के लिये इन कामों के करने की इजाज़त भी हो, उसी के सुपुर्द कर देना। जब तक सफर रहेगा, तुम्हारी यकसूई सिर्फ

उन्हीं कामों के लिये रहेगी जिनके लिये तुम भेजे जा रहे हो। मैं ने मथुरा में तुम्हारा तर्जुबा कर लिया। गोबरधन का वाक्या मेरी निगाह के सामने है । तुम्हारा इरादा कुल मथुरा को ऐसा ही बनाने का था। मगर आबादी की वजह से यह बात मुनासिब नहीं थी। तुम्हारा अन्दाज तुम्हारे पीर साहब ने तोड़ दिया है इस लिये ऐसे कामों में हर वक्त रहनुमाई की जरूरत पड़ती है। मक़ामात जो मथुरा में तुम ने मालूम किये हैं, किसी की ताक़त नहीं कि बिला तुम्हारे बतलाये हुये उनको मालूम कर सके। इस लिये इस बड़े दौरे के बाद उन के खोलने की कोशिश अगर हो सके, तो करना। या अगर तुम उन के खोलने की खुद कोशिश करो तो रुपया इस काम के लिये मथुरा ही में मौजूद है। जो तुम को बतलाया जा सकता है। कभी-कभी बिन्दराबन की तरफ़ और भी शुद्ध बनाने के लिये मुखातिब हो जाया करो। मुझे गोबिन्द जी का मन्दिर अब किसी तरीक़े से रखना मन्जूर नहीं और उस नक्शे से जिस को तुम्हारे पीर ने खयाल में दिखला दिया है, destruction शुरु कर दो। जिन लोगों की यह हरकात हैं, और जिस की सदाद तुम्हारे पास मौजूद है, बे-चराग कर दो।

जमना का फोर्स (खानी) तब्दील करना था। कदम्ब बृक्ष के पास जो मक़ाम तुम्हें मालूम है तब्दील करने की ज़रूरत नहीं। उस जगह नहूसत बरस रही है। उस के क़रीब चन्द खतरनाक मक़ामात हैं और जो इशारतन तुम्हारे पीर साहब ने तुम को बतला दिये हैं। मगर ब-वजह खतरा जान उधर जाने की इजाज़त नहीं दी। यह सब destruction में शमिल होंगे। गोबिन्द जी के मन्दिर के उत्तर और पूरब के कोने पर अगर खड़े हो तो एक मुसल्लस सा बन जायेगा।

यह सब destruction में है। जमना का किनारा बहुत अच्छा मुनव्वर किया। तुम्हारी सुसुराल के टीले पर जो दैत्य का असर था, क़तई दूर हो गया। वहां की हवा में रूहानियत की बू महकने लगी है। मगर उस को क़ायम रखने के लिये वक़्तन फ़वक़्तन ख़याल करना होगा। तुम ने नन्द गाँव में वो मक़ाम देखा होगा जहाँ कि सब से पहले मुझ से और राधा से मुलाक़ात हुई थी। जिस कुएँ पर तुम बैठे थे, वो ही मक़ाम भेंट का था। महाभारत में जो भी मेरे दाह कर्म की जगह लिखी गई है, वो बिल्कुल ग़लत है। मेरा वाक़ई तौर पर यह आख़री संस्कार उस जगह पर अदा हुवा है जहां पर रेल के पुल का तीसरा खम्बा (pillar) उत्तर की जानिब है और उस का नक्शा तुम ने सही बनाया है। जब बासदेव जी ने मुझ को रातों - रात में गोकुल पहुंचाया था, वो इस मक़ाम के क़रीब एक फ़र्लांग आगे हो कर निकले थे। गोकुल मथुरा से बहुत दूर नहीं है। अगर कभी फिर मथुरा जाना हो तो मैं तुम्हें वो मक़ाम भी बतला दूंगा जहां पर से बासदेव जी मुझ को लेकर गुज़रे थे।

29-XI-44

हज़रत क़िब्ला = मैं उन का एक-एक ज़र्रा मुनव्वर कर चुका हूँ, और हर ज़र्रे में ज़ात की पूरी ताक़त मौजूद है। बाबू मदन मोहन लाल को मुबारकबाद दो कि मैं ने उनके शिष्य मुनेशर सिंह को आज मुकम्मिल कर दिया और इजाज़त भी दे दी गई। गाँव के दौरे का काम उस के सुपुर्द कर दिया जाये। और यह इबारत मेरी नोट बुक में

तहरीर कर दी जावे कि मैं ने अपने सज्जादा नशीन बाबू राम चन्द्र के ज़रिये बतारीख 29.11.44 वक्त 8 बज कर 10 मिनट रात को इजाज़त दी और बाबू मदन मोहन लाल उनके पीर ने तस्दीक की। बाबू मदन मोहन लाल को चाहिये कि इन से काम लें।

sd/- Madan Mohan Lal

चूंकि मैं अज़ीज रामचन्द्र से बिल्कुल चिपका हुआ हूं और उस के मिजाज में बहुत जल्दी है। तवज्जह में मैं उसको रोके रहता हूँ। अब बहुत कुछ इस मामले में वो सही आ गया है। मगर ख़याल में जल्दी नहीं गई। यह ही वजह है कि मैं उस की मर्जी जो जल्द जल्द होती रहती है, पूरी करता रहता हूँ। मगर इस की जल्दी का यह नतीजा है कि कुतुब, कुतुबुल अक़्ताब और गोस बनाना पड़ा। एक दो मामलात में मुझे जल्दी करना पडी। इस का जो ख्याल पैदा हाता है, उस की टन्कोर ख्यालात में होती है। इस लिये मुझे मजबूरन वो ही करना पड़ता है। इस की यह मश्क शुरु से अब तक रही है। अपने मामलात में भी उस ने बहुत जल्दी की है। और वो ही बात वो दूसरों के साथ करना चाहता है। इस की ताक़त नहीं कि इतनी मुद्दत की मज़ावलत को जल्द दूर कर दे। अब उस अपना ईमान जाहिर किया है। मैं ने जितनी ज़रूरत समझी उतना ठीक कर दिया और, और ठीक कर दूँगा।*

1st December 1944

श्री राधा जी : मुझ से भगवान कृष्ण से भेंट उसी जगह पर हुई

थी जो जगह तुमने दरियाफ्त की है। और वो ही कूंए (well) का स्थान था। मैं कृष्ण जी महाराज की ख़ूबियाँ सुन चुकी थी और उन की मुहब्बत की बिजली भेंट (मुलाकात) होने से पहले दौड़ चुकी थी जिस वक्त मुझ से भेंट हुई, वो शामली सूरत मेरे दिल में समा गई और उन्हीं का ध्यान करने लगी। चौबीस घंटे में किसी वक्त उन के ध्यान से ग़ाफ़िल न होती। मेरी कैफ़ियत यह हो गई थी कि मैं हर काम काज में तस्व्वुर की वजह से बिल्कुल ग़ाफ़िल रहती थी। होते-होते नौबत यहां तक पहुंची (यह शुरुआत की बात है) कि दुनियाँ के कोई काम मुझ को अच्छे न मालूम होते थे, और तबियत उन की जानिब यकसू हो कर रह गई थी। इस का तस्व्वुर बराबर क़ायम रहा। जिसका नतीजा यह हुआ कि हर जगह मुझ को कृष्ण ही कृष्ण नज़र आते थे। मेरे जिस्म का जर्रा-जर्रा एक-एक मुर्ती बिठाये हुये मालूम होता था। उस के बाद नौबत यह हुई कि मैं ही अपने आप को कृष्ण समझती थी। और कृष्ण जी महाराज उस के असर से अपने आप को राधा समझने लगे। अगर तुम इस सिलसिले में रायज करना चाहते हो तो यह तरीक़ा जो मैं ने किया था, यह ही कुन्जी हो सकती है। फर्क सिर्फ इतना रहेगा कि मैं ने पति भाव से मुहब्बत की थी। तरीका यह ही है, जिस भाव में चाहे मुहब्बत को तब्दील कर दे। मैं तुम को इस बारे में, जब कभी पूछोगे बतलाती रहूंगी। श्री कृष्ण जी महाराज ने मुझ को तुम्हारे पास आने की इजाज़त दे दी है। एक बात तुम्हारी आसानी केलिए मैं और बतलाती हूँ। वो यह है कि मेरा तरीक़ा तुम से मिलता जुलता हुआ था। तुम ने अपने गुरु को जिस भाव से देखा, वो यह था कि प्रेमी तुम खुद बने और प्रेम की जगह उन को मान लिया।

हज़रत क़िब्लाः जो कोई शख्स आला तरक्की करना चाहे तो सिवाए इस तरीक़े के जो राधा जी ने फ़रमाया है हो ही नहीं सकता। और यह अपने यहां लाज्मी शर्त है। जिस किसी ने तरक़्की की, उस में मेरी भी मिसाल शामिल है, इसी से की। इसी को रायज कर दो। सब से पहले लोगों को चाहिये कि गुरु में अपना भाव बनायें। भाव से मेरा मतलब यह है कि वो (शिष्य) रिश्ता क़ायम करें जिस से उन को मुहब्बत पैदा हो सकती है। उस के बाद पैरवी शुरू कर दें। सब से अच्छा रिश्ता यह हो सकता है, जो तुम ने मेरे साथा बांधा है। मगर यह सब दूसरे के मैलाने-तबाअ पर मुनहसिर है। राधा जी ने यह ही रिश्ता दूसरी शकल में लिया था और मैं भी इस की एक मिसाल हूँ। मगर इस रिश्ते पर हर शख़्स को जोर नहीं देना चाहिये। मुमकिन है कि उस की रुची ऐसी न हो और उस को यह नुस्ख़ा मुफ़ीद न बैठे। यह बहुत दिल वाले का काम है। इस में हर एक का हिस्सा नहीं। इस के करने वाले शाजों-नादर मिलेंगे। इस पर सत संग में जोर दिया जावे। शक्ल कोई भी एख्तियार की जा सकती है।

नोट - अज़ीज रामचन्द्र साहब ने गुरु को प्रीतम यानी माशूक जान कर मुहब्बत की थी और यह ही भाव हज़रत क़िब्ला लाला जी साहब ने अपने गुरु महाराज से किया था। नतीजे ज़ाहिर है। बाबू मदन मोहन लान ने पिता भाव लिया था। यह भी अच्छा है।

स्वामी विवेकानन्द : मैं रामचन्द्र को देख कर बहुत ख़ुश हुआ। मैं उन के पीर की दाद देता हूं और यक़ीन दिलाता हूं कि ऐसा समर्थ गुरु ज़माने ने अभी तक नहीं देखा। मेरा मुहब्बत का तरीक़ा यह था कि सब धारें मिल कर अपने गुरु में locate हो गईं थीं। सिवाये

उन के और कोई चित्र दिखलाई नहीं पड़ता था। हर परमाणु में गुरु की बैठक मालूम होती थी। अब सवाल यह पैदा होता है कि यह बात कैसे नसीब हुई। इस का जवाब यह है कि जिस वक्त मैं ख़िदमत में पहुंचा, और नास्तिक से आस्तिक बना, मुझ को भरोसा हो गया था कि सिवाये इस हस्ती के और कोई इस वक्त मौजूद नहीं है जो मेरा बेड़ा पार कर सके। पस क़दे मेरी आदत अपने गुरु से लड़ने झगड़ने की ज़रूर थी, मैं ने अपने गुरु की शक्ल दिल में जमा ली और उस पर ध्यान रखा। जब यह हालत और बढ़ी और दिल से शक्ल ग़ायब होने लगी तो मैं ने शक्ल का बाहर ध्यान करना शुरू कर दिया। जब हालत और बढ़ी और पीर की शक्ल ग़ायब होने लगी (वो किसी तरह से ख़याल में न आती थी) तब मैं अपने आप को गुरु समझ कर ध्यान करने लगा। होते-होते यह हालत इस क़दर बढ़ी कि हर जर्रा मौजूदात में उन्हीं की शक्ल देखने लगा। मैं ने उन से मुहब्बत पीर समझ कर की थी और कोई भाव नहीं लिया था। मगर साथ ही साथ मुहब्बत का object समझ लिया था। जब निगाह जाती थी, उन्हीं पर जाती थी। दूसरे मायनों में मैं उन का प्रेमी बन गया था और वो मेरे object of love थे। जो कुदरती तौर पर वो ही मन्शा पूरी करते थे जो मन्शा पूरी करते थे जिस को तुम्हारे गुरु महाराज ने अभी फ़रमाया है। उस लफ़्ज को कहना नहीं चाहता। संस्कृत ज़बान इस के मानेअ है। यह ही तरक्की का ज़रिया है। अब मैं जा रहा हूँ। आता रहूँगा।

हज़रत क़िब्लाः मैं जिस बात को बचाता था, न बच सकी। मजबूरी है। हुक्म खुदा यह ही है। स्वामी विवेकानन्द ने अपने

सिलसिले की राम चन्द्र को बराहे-रास्त इजाजत दी मगर जब उस ने मेरा Reference दिया और ख़ुद-ब-ख़ुद मन्जूर न किया तब उन्होंने मुझ से कहा। लिहाजा मैं उन के सिलसिले की जो स्वामी राम किशन से चला आता है, इजाजत देता हूँ। अब इन से (RC) यह सिलसिला भी शुरू होगा। स्वामी विवेकानन्द ने अपने गुरु से इसका जिक्र अभी कर दिया। उन्होंने भी मन्जूर कर लिया।

स्वामी विवेकानन्द जीः मेरे सिलसिले में ख़राबियाँ पैदा होना शुरु हो गईं। रुहानियत जा रही है। लोगों का रुझान सिर्फ education पर हो रहा है। और उसी के जरिये से रुहानियत को मास्टर कर रहे हैं। रुहानी जिन्दगी में दिन ब दिन कमी हो रही है। इस वक्त तक कोई ऐसा शख्स मालूम नहीं होता जो इस को संभाल सके। लिहाजा मैं चाहता हूँ कि इस बार तुम अपने ही जिम्मे रखो। तुम ने जो मुझ से अभी सवाल किया है, अपने गुरु से दरियाफ़्त कर के जवाब दूँगा।

नोट : बहुक्म हज़रत क़िब्ला, बाबू राम चन्द्र साहब ने परम हंस राम किशन के सिलसिले की इजाज़त मदन मोहन लाल को बमुआजा पण्डित रामेशर प्रसाद वक्त एक बज कर १० मिनट पर दी।

स्वामी राम किशन परम हंस जी : मेरे सिलसिले की हालत बिल्कुल बदल गई। रुहानियत जा रही है। मत्लब फौत रहा है। लिहाज़ा तुम कलकत्ता जाओ। बिला ऐलान कह दो कि मुझ को इस सिलसिले से इजाज़त हो चुकी है। जिस का जी चाहे, अगर आंख रखता है, जांच ले। और सत संग कराओ। तुम अगर चाहो तो इसी

सिलसिले में बैअत कर सकते हो। तुम्हारे पीर से मैं इजाजत ले चुका हूँ। जब तुम काम करना शुरु करोगे, हिदायत देता रहूँगा।

हज़रत क़िब्ला : बाबू मदन मोहन लाल इस सिलसिले से जिस को चाहें इजाज़त दे सकते हैं।

स्वामी विवेकानन्द : मैं ने इस सिलसिले को बहुत ग़ौर से देखा तो एक नुक़्स बड़ा अजीब व ग़रीब मिला। वो यह है कि जिस को देखा, मुज्महल पाया। बाज़ों की आदत ऐसी बन गई है कि वो इस से अलेहदा ही होना नहीं चाहते। इस को दूर करना चाहिये। इस मार्ग में यह बड़ा ज़बरदस्त नुक्स है। इस का असर दूसरों पर पड़ता है। और रुहानियत जो ख़ुशी ही खुशी है, उस पर हल्का परदा पड़ जाता है। जितना ही ज़बरदस्त हस्ती का शख्स है, उतना ही गहरा परदा वो दूसरों पर डालेगा। तुम को कलकत्ता जाना पडेगा। यह मैं ने तुम्हारे गुरु महाराज पर छोड़ दिया है कि वो जब चाहें, भेजें। मुझ को जल्दी ज़रूर है।

हज़रत क़िब्लाः जब यह बात मुझ से कही गई तो मुझे एक तरीक़े की शर्म आई। पस इस को तवज्जह से दूर कर दें। इस tour में कलकत्ता नहीं भेजूंगा।

2-12-44

अब्दाल के सुपुर्द लोकल इन्तज़ाम होता है। अवतार का दर्जा कुछ उस से ज्यादा होता है। मैं यहां से आलमेंबाला की तरफ़ गया तो

स्वामी विवेकानन्द ने बड़ा जोर दिया कि मेरा काम भी अज़ीज़ रामचन्द्र के सुपुर्द किया जाये।

स्वामी विवेकानन्द : मैं इस वक्त में तुम से बेहतर आदमी कोई नहीं पाता जो मेरे मिशन को चला सके। प्रेसीडेन्ट को इत्तला कर दो कि स्वामी विवेकानन्द ने और उन के गुरु महाराज ने यह काम मिशन का मेरे सुपुर्द किया है। इस में जो अड़चनें हों, मुझ को इत्तला देते रहिये, मैं सुलझाता रहूँगा। इस के आजमाइश के लिये जितने भी test हो सकते हैं, कर लिये जावें।

Draft letter dictated by Swami Vivekanand

I have been bestowed by Swami Vivekanand and his Master to carry out the work of his Mission peacefully. The work bestowed upon me is of very important nature. I receive the hints directly from him and his Master. Anything which stands in his way to progress must be consulted from me. As many tests as human being can stand for may be experienced. Meditate and read the matter by going into the state of spiritual trance. That's all. Feel that the above is the dictation of Swami Vivekanand direct (send it as it is)

Your Master's

Very sincerely.

Drop this letter and see the result - To President, Ram Kishan Mission, Calcutta.

(Note: 2nd para of the draft letter was dictated on 3.12.44)

हज़रत क़िब्ला : If the reply comes when you are away from home, brother Madan Mohan Lal will please inform the President that my revered brother is on his way to Cape Comorin via Madras and will return after performing the sacred duties bestowed upon him by his own Master (Spiritual Guide)

दोबारा 5 बज कर 20 मिनट पर शाम को

स्वामी विवेकानन्द : I have been searching all along the man capable of carrying out the work of my Mission but could not find a man like you. I, therefore, entrusted to you the duty I have been conducting so far. I have taken permission from your Guru.

वक्त 9 बजे शब

कबीर साहब : मेरे सिलसिले का काम ख़राब हो रहा है। लोग लकीर पीटे चले जा रहे हैं। असलियत का पता नहीं रहा। गाने की शक्ल एख्तियार कर ली गई । मेरे नाम पर गालियां बनाई गईं। और सरे बाज़ार गाई जाती हैं। मेरा मक्सद ख़ालिस रुहानियत था। और मेरी निस्बत जांत से थी। मैं समझता हूँ कि जितना मामला मेरे सिलसिले का बिगड़ा, कहीं नहीं बिगड़ा। इस को संभालने की कोशिश करो। बड़ी मेहनत का काम है। मैं खुश हूँगा, अगर कामयाब हो।

हज़रत क़िब्ला : कबीर साहब ने अपने सिलसिले की इन को इजाजत दी, मगर चूंकि यह मेरी इजाजत के मोहताज हैं, इस लिये मैं

इन को इस सिलसिले की भी इजाजत देता हूँ। और यह इजाजत मुझ को भी थी।

कबीर साहब : तुम को काशी जाना होगा। वहां के सिलसिले के जो लोग हैं, उन से मिलना होगा और उनको राहे-रास्त पर लाने की कोशिश की जायेगी। मगर मुश्किल यह है कि सब के सब लठ्ठ हैं।

4-12-44

Swami Vivekanand : I have been to my Mission spread all over India and studied the situation. The glimpse of spirituality is being diminished throughout. This is the information given to you to keep yourself up to the mark. The rest will come after you take the work in your hand. If you go to Madras, have a glimpse over my missionaries. Better stay there. I will be with you there. Write a letter to Madras informing your arrival and my orders to the missionary conducting his duties so far.

Draft letter

"It is but my duty to inform you that I will reach Madras at such and such dates or near about. My Mission is sacred one, entrusted upon me by my own Master and Swami Vivekanand afterwards.

If you doubt my sincerity, you are at liberty to test me, before or after my arrival. Bear in mind that I will have to carry

out his orders and his Master's. The condition of Mission is going down and it is I who will beg to improve the same. The same information is given recently to the President, Calcutta Copy of letter sent to him is attached herewith."

If you leave Madras, take a letter from the Head of missionaries to some other place you move. Repeat this process in as many stations you cross. My opinion about you (RC). You are making the landmark in the spiritual world. This is all due to your Worthy Master. The world has never seen a man like HIM and so you are. I congratulate you and pray that your sacred duties be fulfilled by Almighty. I will be with you all along in the journey and be ready at your calls. Have a bid first and then see the result. Get a copy prepared (of) what I have dictated so far and keep it with you all along your journey and remember that my dictation will go side by side with that of your Guru, the revered one.

हजरत क़िब्ला : आज बतारीख़ 4 दिसंबर सन् 44 ई०, बवक्त 5 1/2 बजे शाम, बाबू मदन मोहन लाल को सिलसिला कबीर पन्थी में इजाज़त दी गई। इस का काम उन के सुपुर्द किया गया। हिदायत बराहे रास्त अज़ीज़ राम चन्द्र से मिलती रहेंगी।

स्वामी विवेकानन्द: Look here Ram Chandra, you will change the face of the world. The power bestowed upon me by my Guru, I have transferred it to you altogether in a state of trance at this very time, when your Guru was sitting before you. My Mission cannot stand without you and your Supreme Guide.

Think me as your lover. All the blessings of my Guru will be pouring upon you at times. Rest assured. I prophesy that freedom will reign over India in near future. The land has been cleared away to light out in the realm of spirituality for you. The various powers of Nature have been informed. Sum up these things in a book. I have been in Deccan Plateau and watched the situation myself. Here is my Guru before you giving you blessings. Praying for your success in journey.

Look here, Christ is before you giving you blessings.

हज़रत क़िब्ला : अज़ीज़ राम चन्द्र का यह वतीरा रहा है कि बजाये भरने के उसने अभ्यासी के मकाम की ताकत उभारी। यह तरीक़ा उस के (तालिब) कस्ब की हालत तक पहुँचता है। और बहतरीन तरीक़ा है। इस से अच्छा तरीक़ा अभ्यासी के फ़ायदे के लिये हो ही नहीं सकता।

स्वामी विवेकानन्द जी: I have issued orders to my missionaries. The difficulty arises in the way is that many of them could not catch. Proceed and have experience. Look here, Lord Krishna is sitting before you and telling something which your Guru has ordered not to be taken down.

परम हंस जी : मैं ने नरेन्द्र बाबू को बनाया था और तुम्हारे गुरु ने तुम को बनाया।

हज़रत क़िब्ला : मैं उस बात को जो कृष्ण जी महाराज ने इस वक़्त और स्वामी विवेकानन्द ने इस से पेशतर फ़रमाया है, किसी पर

खोलना नहीं चाहता। वो confidential रहेगी और तुम तक रहेगी। उस हालत में जा कर किसी को जवज्जह न देना। अज़ीज राम चन्द्र को मैं ने वो ताक़त बख़्शी है कि एक हफ़्ते में काया पलट कर सकता है। यानी he can change the face of the world in a week's time. He can do so in a minute but people don't survive in such a hurry.

अगस्त मुनिः मैं ने तुम्हारे लिये दक्खन दिशा में फ़ील्ड तैयार कर दिया। जल्द से जल्द खाना हो जावे। निज़ाम का ख़याल रखना।

5.12.44

Swami Vivekanand ji : I have obtained permission from your Guru that from this date you will work for me. I give you the authority what I have been given by my Guru. Remember again that you will work in place of me. Any change in the system of my MIssion shall be welcomed. So far I have been conducting the work myself. You will now be held responsible for it. Mandates will run into yourself directly. Show this to the missionaries. I am very thankful to your Guru to have given me a man like you. With best wishes I start and will come again at your calls. You will enjoy the same authority. (Again came) I forgot to tell you one thing. You will dominate throughout the length and breadth of India. Afterwards comes the turn of the world. That's all. Going back with best wishes to your brother Madan Mohan Lal.

हज़रत क़िब्ला : स्वामी विवेकानन्द ने तुम को (RC) अपना सज्जादा नशीन मुक़र्रर किया है।

S.V.: The condition of your "Sangh" is also in a ruinous state. Those who took up the change of work wilfully, lacked in duty for earthly paradise. Destruction has been ordered which you people (have) to carry it out. I am working side by side with your respected Guru. Measure for measure is my order. Fools are scattered in your satsang. They have but one idea- to dominate. Your satsang will be divided into circles with you at its head. There will be one man responsible for each circle, when time comes. I have merged into you with full powers - tip to toe. You digested the whole thing in such a short time.

हज़रत क़िब्ला: बड़ी खुशी का मक़ाम है कि आज स्वामी विवेकानन्द जी ने राम चन्द्र को अपना सा बना दिया यानी कुल ताक़त हलूल कर गई। हमारे सिलसिले में अब यह रंग भी जायेगा।

स्वामी विवेकानन्द जी: An idea just flashed that the report of today be sent to the President, Calcutta, with the request (giving reference to the previous letter) to see the matter going on with his own eyes; if he has power to do so. He should connect his magnet with you i.e. with your heart. Write as well that this may be done before 10th, as the person is leaving for Madras. Please drop this letter today. Add in the last. I am going to send for your perusal and information. The dictation coming after. I have been at Madras this very time. The missionary is giving an air of earthly paradise in his mind. Spirituality has been changed to matter. You will find its apex upon him. Photograph is the only object of worship. Photographs are garlanded. Heaps of books are read everywhere. This is the

information I give you. Break these things, altogether. My school of philosophy is akin to your Guru's. Let me have time to ponder over it. Don't bother yourself with money. It is in store for you. Service for humanity is better than what you do. Don't think yourself weak. My orders are godly ones.

6-12-44

(S.V.)स्वामी विवेकानन्द : Don't be disappointed. I have made for you a field sufficient to work on and your Supreme Guide is with me. We are working together to obtain the object moving on. With these words I depart. I have prepared a field for you. There a a few persons of my Mission here as well. Teach them after a line of your Guru. Success will attend (upon) you, rest assured. There is one thing more to be remembered. At any stage of life, a man should adhere to the principles of his Guru strictly. Success will dawn decidedly. You have not come to the work adopted for. You are something else than the people think of you. I have sweared to remain with you, throughout your life just as your Guru does. Think me as one of his disciples. I am measuring the coast of Madras at this very time. Your Guru has allowed you to remain at Madras for 3 days. The work is a sacred one. I shall take permission from your Guru to have a bit more time, but this will be decided there, when you actually reach the spot. I want to train my disciples after the line of your Guru. The same method should be adopted. You are at liberty to enunciate (initiate) them either in the hands of your

Guru or in myself. The idea is correct. I mean the idea having reference of Lord Krishna, which you were just talking about. All will be merged in are with your Guru as a leader. Better one's own duty though destitute of merit. These are the words of Lord Krishna. Prepare a gist for your journey. Leave your shilly-shally habits. Try to rise before the sun. If you don't leave these habits, you are doing mischief to the human beings and to the persons coming after you. The work is before you, work and work. This is the only thing which pleases me and your Guru. When you go to Madras or anywhere else, fix the time for the disciples of my Guru to have a sitting daily at the fixed time. Other than the time they take up for their own pooja and it will be your duty to concentrate yourself towards them at the time fixed by you. 9 PM is the time fixed by your Guru on your suggestion. I welcome this idea. Teach this method. There is a vast difference between theory and practice. Let them come on the latter. The hours of journey should be spent in work. You have a great task before you. You must fulfil it in your lifetime. You will get directions of work at every hour of your journey. Divide my work in circles with you at its head.

7-12-44

स्वामी विवेकानन्द: Take some work of my Mission from Madan Mohan Lal. He is also allowed to work on. Don't think yourself alone. I will remain with you all along the journey. Have a good diet, rather rich. I prefer eggs with tea for you. I mean the roasted eggs. It is curent of the day among sanyasins

to give some name called Jogpat (Yugpat) to their disciples. I call you Juliet now. This is the translation of your condition.

आज बतारीख़ 7 दिसंबर सन् 44 ई० विश्वनाथ टन्डन को बाबू मदन मोहन लाल ने बसिलसिला जदीद सहज मार्ग इजाज़त दी और तस्दीक़ भाई रामचन्द्र साहब ने की।

हस्त० मदन मोहन लाल रामचन्द्र

हज़रत क़िब्ला : स्वामी विवेकानन्द जी ने अभी अज़ीज रामचन्द्र को जिम्मवार ठहराया है कि मुज्महली की वबा न फैलने पावें। मैं इस की जिम्मेदारी, चूंकि उन को (मदन मोहन) भी उस सिलसिले से इज़ाजत है, लिहाजा मदन मोहन लाल पर भी यह ज़िम्मेदारी मुन्तकल करता हूं। अपने मुरीदैन और बिरादरान में इस की ख़ास एहतियात रखें।

स्वामी विवेकानन्द जी : I have made the arrangement needed for you. Abolish slouch from your brain. Come to the right path. I had been all our India during these days. Your presence is wanted everywhere. Afterwards comes the turn of Lahore - after finishing your present journey, you should reach Calcutta.The turn of Lahore comes in the last. Illuminate the place where you go.

8-12-44

स्वामी विवेकानन्द जी : Juliet was the beloved of Romeo. I mean the object of love as she was, so you are the same for me.

There are very many works before you. Have patience. Your field of work is far wider than anybody would have dreamt of it. You have come for the same. Be glad that our Guru is giving benedictions to you for your success and happy return.

9-12-44

Swami V: When you reach Madras, ask the man in charge of the Mission to guide you the way intending for success will attend (on) you, rest assured. There is a renowned sage there. He won't come to see you. Fix yourself towards him; giving him spiritual benefit. All along your journey, I will be with you and your Supreme Guide as well. There is nothing to fear in the way. All will go well. You will win up all. Give up your idea for (visit to) Ceylon.

10-12-44

हज़रत क़िब्ला: लोग इन्तजार कर रहे हैं। एहकाम जारी हो चुके हैं। कल न जावो। अगर मैदान साफ मिला तो इजाजत दे दूंगा। मुमकिन है कि मंगल को जाना पड़े। ये सब वक्त पर मुनैहसिर है। अगस्त मुनि ने तुम्हारी हिफ़ाजत का वायदा किया है। और फ़ील्ड भी तैयार कर दिया। मद्रास के कुतुब को स्वामी विवेकानन्द जी ने तुम्हारी हिफ़ाजत का हुकुम दे दिया। तुम ने थोड़ी सी ग़लती ज़रूर की, जो उस से यह कह दिया कि जिस वक्त मद्रास के प्लेट फार्म पर मेरा क़दम हो, उसी वक्त से तुम्हारी ड्यूटी शुरु होगी।

तुम्हें इस से पहले से ड्यूटी कराना चाहिये थी।

बात चीत दरमियान बाबू रामचन्द्र साहब और मदन मोहन लाल हो रही थी। बाबू रामचन्द्र ने कहा कि पहले अगर कोई बुजुर्ग मुझ से ग़ायबाना मुख़ातिब होता था तो फौरन मेरी समझ में आ जाता था कि वो क्या कह रहे हैं।

हज़रत क़िब्ला: यह (अज़ीज रामचन्द्र) इस क़दर ऊँचा चढ़ गया है और अपने आप को ऐसा लय कर दिया है कि उन के ख़याल की धार वहां तक झटका नहीं दे पाती। जब यह कुछ नीचे होता है तब पता चल जाता है। वैसे क़ायदा यह है कि अपने आप को हर वक्त नीचे उतारे रक्खें। मगर मैं इस को मजबूर नहीं करता। और यह भी समझता है कि बतलाने वाला मौजूद है। बाबू मदन मोहन लाल इस अमल को करें। यानी नीचे उतरने वाला अमल करें। इस ने (RC) दिल के ऊपर निगाह रखने के लिये जो कहा था वो अच्छा अमल है इस वक्त मैं फुरसत से हूँ। इस ने एक तरीक़ा ईजाद किया है जो बेहतरीन है। और इस से अच्छा तरीक़ा हो ही नहीं सकता। इस ने पहले 9 बजे रात में करने का जो तरीक़ा ईजाद किया था और उस का हवाला मेन (Main) नोट में मौजूद है। लाज़मी है। अब जो तरीक़ा उस ने ईजाद किया है। मैं स्वामी विवेकानन्द जी से भी कहूँगा। यह ऐसा तरीक़ा है कि गुरु चेला, दोनों को एक साथ फायदा होता है। वो यह है।

अगर मुरीद या अभ्यासी को पीर की शक्ल का ध्यान अगर दिल में करना बताया जाये तो उस को यह हिदायत की जाये, कि

वो यह ख़याल बांधे कि जिस बुजुर्ग की शक्ल का मैं ध्यान कर रहा हूँ उस का ताल्लुक जात से है। और यह ही तस्व्वुर बांध कर ध्यान जमाये। शग्ले-राब्ता शुरू करने से पहले अगर यह खयाल एक मर्तबा कर ले और फिर शग्ल में लग जाये तो और भी बेहतर होगा। और अगर अभ्यासी को रोशनी का खयाल बांधना बताया गया है तो उससे यह कहना चाहिये कि जिस नूर का मैं ने ख़याल बांधा है, वो जात का नूर है। यह सब ईजादें नोट बुक में लिखी जावें।

स्वामी विवेकानन्द जी : I have heard your inventions and (am) leaping with joy. I can dare say that such an inventive mind was never born in India among sages. This is all due to your Supreme Guide. It will not be out of place, if I call you wisdom personified. I again say that a person was never born. A great mischief has been done to you. Your will has been weakened.

11-12-44

स्वामी विवेकानन्दजी : We have settled together (about) your departure. The way is clear now. **Chaitanya Maha Prabhu** is waiting for you, giving you benedictions.

चैतन्य महा प्रभु : मेरी उम्मीदें तुम्हारे पीर की तरह तुम से वाबिस्ता हैं।

हज़रत क़िब्ला : चैतन्य महा प्रभु ने तुम को अपनी सज्जादा - नशीनी दी है और मैं ने मन्जूर कर लिया। उड़ीसा जाने का हुक्म दे रहे हैं।

चैतन्य महा प्रभु : मैं भी तुम्हारे गुरु के तरीक़े से यहां आया जाया करूँगा और मददगार रहूँगा । मेरा काम बहुत ख़राब हो गया है। तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ।

स्वामी विवेकानन्द जी: Look here, Ram Chandra. Your responsibility is very great now. Sway our India. Leave the service. You have no time to take other work. You have sufficient to keep on.

हज़रत क़िब्ला: तुम पर इतना काम चला आ रहा है कि मैं नहीं समझता, यह कैसे हो सकेगा। तन्द्रुस्ती का यह हाल है कि हर वक्त डाक्टर की ज़रूरत रहती है। मगर हुक्म खुदा से मज्बूरी है। यह सब हुकुम ज़ात का है। इस में और सब मज्बूर हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी: You will find speakers, extempore piles of the books by the side - platform strewn - almirahs with glasses - book worms - but nothing of spiritual nature. Our principles have been forgotten. Spirituality gave way to materialsm, and there are sundry difficulties which you will know when you go there. Either I will finish these things or people come to spirituality. These (things) mean, the people themselves and their decoratory matter. If you don't succeed in my Mission or people don't listen to you; destruction shall be

ordered, and I will abide by this. There must remain one religion and only one - that will be your Guru's on the face of the earth. The fibres of your being have been made strong by your Supreme Guru. There is nothing (which) remains to be made. You have double force in you. Forces are increasing day by day. There are some other Maha Purushas waiting for you and want to take work. Christ is restless and requires your help. Nanak is waiting. The responsibility of all these things lies upon your shoulders. You cannot unyoke yourself. Rest we see. World is moving towards resurrection. We have our common goal. You will build temples upon the heaps of bones of the persons going down. That is the order of God direct to us, for which we made you. Churches will be razed to ruins, but in the long run - and who knows it may happen after you. There will be but one religion based on spirituality only. The superfluous things will go away. Your Guru will be worshipped throughout the world and all over the Globe, and you will b e the Maker. The world will be different from the present world, in the long run to come. Peace will reign - based on spirituality only. Countries will be absorbed in one, but this time is not fast approaching.

स्वामी विवेकानन्द जी: Spirituality is not in a man's clothing, but in him who wears it. That is the principle dotted with glimming eyes, but sorry, this has been forgotten. Search is made there only where there is nothing but garments. A man is judged by his clothes. Immorality travels on; western people are prey to it. Indians copy those who know nothing. Quotations are given from their philospphy; customs are followed; manners copied. Things are going to be changed so soon that the man's

wisdom cannot reach. All these things will disappear so soon that a man cannot dream of it. Change and change; do your duty. It depends upon you only, we are the helpers. I am putting all these facts before you to give you guidance. Work and work and nothing else. Follow your Guru and his mandates.

हज़रत क़िब्ला : मैं ने इन का जाना तय कर दिया। मेरी राय थी कि यह कल बुध को चले जायें या बृहस्पत को। दोनों दिन इन की मरजी पर छोड दिये थे। इन की राय जुमेरात के जाने की थी। चूंकि स्वामी विवेकानन्द जी ने खुद तशरीफ ला कर बृहस्पत मुकर्रर कर दी, अब टल नहीं सकती। जुम्मे को जब यह मथुरा पहुँचे, अगर आराम की ज़रूरत हो तो शनीचर को रवाना हो जायें वरना शुक्र (जुम्मा) ही को मथुरा छोड दें। इतना मैं ने उन की मरज़ी पर रक्खा है। गाडियों पर इन्तजाम कर दिया गया। दोनों दिन खाली मिलेंगी। इतनी कि यह बैठ जायें। अगर किसी बात को करने से मदन मोहन लाल की तबीयत रोके, तो उस को सोच लें।

स्वामी विवेकानन्द जी : There is a vast difference between the people of the East and West, rather civilization differs widely. Their civilization sprang up in the 18th century, when we people were on bickerings. They took advantage of our simplicity. The very idea to make us an easy going life came across the traders of the west. Glittering things and ladies were pouring in to give us curiosity to copy them out. The state so changed in India that we all came to the level of occident. * All these things are to disappear now. The world is changing to

supremacy, but you have not begun this work yet. It depends upon you and you alone.

(* Note : यह मज़मूम 13 दिसम्बर को फरमा कर 11 दिसम्बर वाले मज़मून.को पूरा किया था)

13-12-44

S.V. You have enough work before you, rest throw to dogs. You have to make a brighter world. (see note above marked*)

Opinion about you of Lord Krishna :His (Ram Chandra) Guru Mahatma Ram Chandraji of Fatehgarh, has made him (Ram Chandraji of Shahjahanpur) a man, the world will copy. His Jivani will be written in gold letters. He has great love for you, more than anybody would have done to his disciple. That is the reason of progress so soon. There is no limit to your improvement, but will is wanting.

S.V. : I will be the person to guide you in this respect. Be firm as a rock. Iron will is required for you. Don't let any idea of weakness come. It will be very shameful for such a man like you to think of weakness which is not really in you. We all give you power at every moment. You are absorbed in your Guru and He in you. He (Guru) is so absorbed in love that He thinks himself to be Ram Chandra (his disciple). I have not found this example anywhere in my lifetime. This love comes next to Radha; still weakness; strange. You have set an example to follow on. No power in the world can match you. Whoever

comes to you, I mean the *Moksh Atmayen*, becomes your lover. I tell you the truth that I have not loved, leaving my Guru, anyone except you in my lifetime. The same is the condition of my Guru, the revered one leaving me. At all hours, I think of you and you alone.

हज़रत किब्ला : स्वामी विवेकानन्द जी साहब की जो तहरीरात है वो भी इस क़दर क़ीमती हैं जितनी कि मेरी।

स्वामी विवेकानन्द जी : मैं ने दयानन्द मूल शंकर को भारत वर्ष के काम के लिये बनाया था। मगर उन की ज़िन्दगी ने वफा न की। काम अधूरा बांकी रह गया। मेरी लाइन काम की मुख्तलिफ थी। मैं योग अभ्यास का दिलदाद था और उसी के जरिये से रुहानियत की मन्ज़िलें पार कीं। यह तरीका दूसरा है। इस से भी वो ही मक्सद हल होता है। लिहाजा अब इस को साथ ले कर चलो। लोगों की वो तन्दुरुस्तियां अब नहीं रहीं कि जो योग अभ्यास कर सकें। मैं ने स्वामी दयानन्द से क़सम ली थी कि ब्राह्मणों की इज्जत भारत वर्ष से मिटा दूँगा। उन्हों (ब्राह्मणों) ने मुझ को बहुत परेशान किया था। और हिन्दु जाति के सुधारने में यह ही बाधक रहे। इस लिये ऐसा हुक्म दिया था। जब तक यह लोग अपनी हैसियत पर मौजूद हैं, तरक्की होना मुश्किल है। लिहाजा अब मैं अपना काम तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ । मैं चाहता हूँ कि तुम भी वो ही क़सम ख़ालो तो भारत वर्ष का उद्धार हो जाये। अब मैं जा रहा हूँ। जब ज़रूरत होगी, आता रहूँगा।

स्वामी विवेकानन्द जी: Look here, Ram Chandra Eyes of

Swami Brijanand are on you. Realize your responsibility and put (yourself) to work. World is changing now (again). I will give all (that) I have. Your will has been made stronger. Be ready for the journey. Don't delay.

हज़रत क़िब्ला: खत आम्दा बाबू अज्युध्या नाथ भाई साहब फरमाया : मैं ने यह कहा था कि शाहजहांपुर से जो कुछ आवे, ले लेना। और इस के कहने की ज़रूरत थी । आवाजें कानों में ज़रूर पड़ीं हैं। यह लोग जो अब मदद कर रहे हैं, ज्यादा साथ नहीं देंगे। आखिर को तुम्हीं को करना होगा। जो बात वो चाहते हैं वो नहीं हो सकती। उन्हों (चची साहबा) ने अब तक तुम्हें (RC) पहचाना ही नहीं। यह ज़रूर क़बिले तहसीन है कि उन की मुहब्बत क़रीब-क़रीब सब पर यक्सा है। औरतो में अक्ल नहीं होती। ज़ाहिरा खुशामद और लीप-लाप पसंद आती है। यह ही वजह है कि इस से उन को जो चाहे गर्वीदा कर ले। अगर मेरे काम में ख़ामी पड़ी तो उन की बात मानने की ज़रूरत नहीं। मतलब भणडारे के ऐलान से है। ऐलान हो ही जाना चाहिए। खाह मामला किसी हद तक पहुंच जाये।

स्वामी विवेकानन्द जी: Stages do nothing at the time of death. Moderation is required which is wanting everywhere. Spirituality alone can do nothing. It must go side by side with morality. I describe your (RC) character now. From the very time, you went to your Guru, you thought him a Master of Universe. You thought him everything. Your Guru has described you sufficiently in the notes, but it remains as it is. One thing, which you set an example to the world is that every

particle of your body was absorbed in your Guru, and his too, with you. Such an example, you will hardly find anywhere. If I describe your expansion, you have cleared every particle of atmosphere. You are in everything. B. Madan Mohan lal has love for you, and you should be thankful to him.

14-12-44

Today Shriman Ram Chandraji started for southern India.

17-12-44 (Madras)

(On) way to Madras: Swami Vivekananda : Work to illumine the Deccan Plateau, and then Southern India beginning from Dharok (Dharakhoh) wherein first tunnel begins, and afterwards a number of tunnels. When you go to Madras, illuminate the place and give the spiritual touch to the public in general leaving Brahmans ब्राह्मण and repeat the process to the place you move on. I have made you the Master of Universe and your Guru too. The world will remember ever and after. Realise your responsibility and feel that you are the same. Your words won't go unpunished (waste), if you utter the same to anybody; but have regard. Sovereignty of spiritual, you enjoy.

18-12-44 (Madras)

SV : It touched me deeply that you were not given an

accommodation. I have been to President last night and remain busy all along but he would not received the dictates directly.

नोट : जिस वक्त मुझ से यह कहा गया कि इस वक्त प्रेसीडेन्ट साहब मराक्बा कर रहे हैं। आप सुबह आयें और हमारे यहां इस वक्त कई मेहमान मौजूद हैं। उस वक्त जमीन में कई jerks मालूम हुए। यह सिर्फ compound में थे। (RC)

हज़रत क़िब्ला : यहां काम तुम ने खत्म कर दिया। कल रामेश्वरम जाओ। तुम्हारे ज़ात में रहने से मेरा नुक्सान हुवा। मैं कुछ कह, सुन न सका।

SV : We are one and the same in this condition.

21-12-44

SV : I swear upon by what is holy to me that I can never neglect you.

कुतुब मद्रास ने अपनी हद निकलते ही इत्तला दी कि मेरा सर्कल अब खत्म हो गया। लिहाजा अपनी duty से दस्तबरदार होता हूँ।

22-12-44 (Rameshwaram)

SV : Your work has been praiseworthy throughout. Our hopes are with you. Going back.

हज़रत क़िब्ला : रामेश्वरम में तुम को बहुत काम करना है। कुल मन्दिर मुनव्वर कर दो। शिव कुण्ड में पैर धोने का मेरा ही हुक्म था ताकि तुम्हारे पैरों की बिजली पानी में सरायत कर जावे। इस का चप्पा-चप्पा मुनव्वर करना है। ताकि यात्रियों को फायदा पहुंचे। पन्डों को डिस्ट्रक्शन शुरु कर दो। वो पन्डा जिस से तुम पहले मिले थे, सबसे पहले लेना। धनुष कोटि जाने की कोई जरूरत नहीं। बाकी सब जगह जाना पडेगा। तुम रात को जगे हो, आज आराम कर लो।

मद्रास का काम अच्छा रहा। तुम्हारा ठीक ख़याल है कि वहां पर रुहानी तालीम शुरू नहीं हो सकती। यह खित्ता सब से आखिर में सम्भलेगा। नौकर ठीक मिला है। कुछ ख़दृशा नहीं, फिर भी एहतियात लाज़िम है।

श्री कृष्ण जी : मैं तुम को दुआ देता हूं कि तुम्हारे घर से रुहानियत कभी न जाये। तुम जहां गये, तुमने काम बहुत अच्छा किया। इस वक्त मन्दिर रामेश्वरम में वो काम कर के दिखा दिया कि दुनियाँ की कोई ताक़त ऐसा नहीं कर सकती थी। तुम्हारा नाम हमेशा ज़िन्दा रहेगा। मैं दुआ देता हूँ। और जिस पर तुम्हारी एक निगाह वाक़ई पड़ गई, वो अक्सीर बन जावेगा। मैं बहुत खुश हूं कि तुम ने मेरे कहने के मुकाबिले में रुपये की परवाह नहीं की। जहां ज़रूरत पड़ जावे मुझे आवाहन कर लेना। और गुरु देव तुम्हारे हर वक्त साथ हैं। ऐसी हस्ती कभी दुनियाँ में कहीं पैदा नहीं हुई। और न ऐसा कभी किसी ने बनाया जैसा कि उन्होंने तुम को बनाया है। खुश रहो। मेरी उम्मीदें भी तुम्हारे साथ हैं। कोई अवतार या नबी उस वक्त तक काम नहीं कर सकते जब तक कि वो अपना औज़ार न बना लें। स्वामी

विवेकानन्द जी ने भी तुम्हारे साथ रहने की क़सम खाई है। दोनों को एक ही समझों।

रामेश्वरम 22-12-44 continued

SV : I have resolved, as early as possible, to merge all the spiritual societies into one, and the same (with) which you belong. Mine will also go with you. All will glitter like the morning stars; but wait for the orders. It is not the matter of doing it so soon. Lord Chaitanya is disgusted from his disciples. I too am an example. Kabirism (कबीर पन्थी) is being dwindled into nothing, but look here, have company of good persons and work independently. Do what you say and say what you do. I do not want any middleman. Never mind if success attends (upon) you or not in the first step. Go on doing till you achieve the goal. Look here, the breeding ground of your thoughts are our hearts; so you can commit no wrong. Your aims are high, I know but how to achieve them is left for you and you alone. We are only the helpers. You ought to stand on your own legs, and on your own footing. Look here again; that God's blessings will be pouring on you in every stage of your life; and every fibre of your being has been brought up in the same way. Be always firm on which you hold good.

23-12-44

SV : Look here. If you need somebody for your safety, call the sage of Ceylon to look after you so long as you are here

in Rameshwaram; (as it) lies in his regime or circle. यह हुकुम सादर होने पर स्वामी विवेकानन्द जी से दरियाफत किया कि यह ज़रूरी है कि मद्रास के ऋषि की हिफ़ाजत के लिये हुकुम दे दिया जावे। इरशाद हुवा :

It is not all necessary, we are looking afer you. But as you are their Master, you can call him to this duty,if you like.

मन्दिर रामेश्वरम मातमी लिबास में था। मैं (RC) क़यास कर रहा था जैसे किसी के यहां कोई मौत हो जाती है। लक्ष्मी कुण्डः सीता कुण्ड, राम कुण्ड वगैरः सब मुनव्वर कर दिये गये। जिस धर्मशाला (भगवान दास बागला) में मैं ठहरा हुवा था। रात में कोठरी के अन्दर, बवजह cash (रुपया) ज्यादा, सोने का हुकुम था। एक रात बसर की। मच्छरों की वजह से नींद न आई। मजबूरन इजाजत लेकर बाहर ब्राम्दे में लेटा। उस वक्त Ceylon के बुजुर्ग ने इत्तला दी कि मुझे आप की हिफ़ाजत का, जब तक आप रामेश्वरम रहें, हुकुम हुवा है। चुनांचे उन्होंने हिफ़ाज़त शुरु कर दी।

24-12-44 (In the way)

SV: You have given power to the temple of Rameshwaram which will not exhaust for a hundred years.

श्री कृष्ण जी ने दरियाफ़्त करने पर फ़रमायाः रामेश्वरम का चप्पा-चप्पा मुनव्वर हो चुका है। ज्यादा भरने से लोग उकला उठेंगे।

अब तुम्हारे यहां क़याम करने की ज़रूरत नहीं । काम ख़त्म होगया। Ceylon के ऋषि तुम को बुला रहे हैं। कल Ceylon लेलो। परसों कूच कर दो।

25-12-44 (3 PM)

कृष्ण जी : तुम मदुरा (मदुरई) जा रहे हो। मदुरा में भी तुम्हारा ही काम करने का है। जगह मुनव्वर करोगे। और ब्राह्मणों का डिस्ट्रक्शन। मेरे इतने भगत हुये, मगर यह काम कोई न कर सका। यह काम तुम्हारे लिये महफूज रखा गया था। अभी Ceylon पर और तवज्जह करने की ज़रूरत है।

हज़रत क़िब्ला (वक्त 4.15 PM) : तुम ने Ceylon पर गजब कर दिया। अगर मैं आ न जाता तो बहुत से शख्स जिन्दगी से हाथ धो बैठते। तुम ने जात की पूरी ताकत लंका पर घसीट दी। थोडा सलब कर लो। लोगों के दिमाग मोत्तल हो चुके हैं, जल्दी कर दो। चुनाचे तामील हुकुम उसी वक्त की गई । अब क़तई मुखातिब न होना। कल कूच कर दो।

4.20 PM ऋषि लंका : इस वक्त लंका में यह हालत हो रही है कि लोग इस को देखने के लिये तरसेंगे। हर शख्स फकीरी हालत में है। और दिमागी हालत ठप है। जिस को देखो बुत नजर आ रहा है। खयालात क़तई ठहरे हुये है। मुबारक हो। मैं उस गुरु को धन्यवाद (शुक्रिया) अदा करता हूं जिस ने आप को ऐसा बनाया। मुझे ऐसा

एहसास हो रहा है कि आप दुनियाँ के तबादले के लिये उतरे हैं। मैं बड़ा शुक्रगुज़ार हूंगा कि आप की सोहबत मिलती रहे। इतनी बड़ी हस्ती मेरे दखने में नहीं आई। ईश्वर ने मेरे आँखें दी है। जहां निगाह गई आप का सानी न पाया। इस वक्त मैं आप में फ़ना हो गया था। वो नज़ारा देखा जो तमाम उम्र देखने में नहीं आया। और इसी हालत में गुफ्तगू की। मैं एक बूढ़ा आदमी हूँ। मैं दुआ करता हूँ कि ईश्वर करे आप ज़माने को पलट दें और यह आप ही से हो सकेगा। मेरी एक ख्वाहिश है। वो यह कि कुछ हिस्सा लंका का आप उलट देते। यह वो हिस्सा है जिसे Columbo कहते हैं। यहां यात्री लोग बहुत आते हैं और बदचलनियां करते हैं। या आप अगर मुझे ताकत देदे तो मैं उलट दूं। आप के पीर साहब का फिर शुक्रिया अदा करता हूं, और ड्युटी पर लगता हूं। मैं इस ड्युटी से बहुत खुश हुआ। और यह मेरी खुश किस्मती है कि आप की खिदमत का मौका मिला। आप तो इस को टाल ही गये थे।

हज़रत किब्ला: यह एक बहुत जबर्दस्त बुजुर्ग हैं जिन का सानी लंका में नहीं है। Columbo उलट देने के लिये यह कह रहे हैं। मगर अभी खुदाई हुकुम नहीं है।

SV: Your work in Ceylon has been examplary. You have beaten the world record. What you could do in 2 (two) minutes in Ceylon for others require a hundred years. All the people there are in spiritual trance. Not a one left without it. Going back.

27-12-44 Madurai

SV : Illuminate the city altogether and Brahman destruction. Leave it tomorrow morning for Trivandrum. You will reach there direct. No change of train. There you will get bus for Cape Comorin. I will tell you there the shortest route to Mysore. For, Ernakulam is the tedious journey. There is nothing to see there. You have won up my heart and it is with profound love that I give you a place in my heart. Look here, you will always be happy, that is my prayer for you. You have done the work with extra-ordinary ability, and it pleased me much as well as your Supreme Lord Mahatma Ram Chandraji (of Fatehgarh). Is there anything that you want? I (RC) told the Lord, any other work. There is enough for compliance; do it. We have been telling you for compliance all along.

हज़रत क़िब्ला: तुम ने मेरा नाम ज़िन्दा कर दिया। तुम ने ऐसे ऐसे काम कर दिखायें हैं जो आज तक कोई न कर सका। मसलन Ceylon को दो मिनट के अन्दर इस हालत में कर दिया जो लोगों को हज़ारों बरस की तपस्या में नसीब नहीं हो सकता। यह उनका फ़ेल है कि इस को रखें या न रखें। बुजुर्गों में मेरी बड़ी तारीफ है और हर शख्स की निगाह तुम्हारे ऊपर ही गड़ रही है। यह ज़माना भी तुम्हारे बाद लोगों को याद आवेगा। तुम्हारे ऊपर खुदाई बरकतें, इस काम के ख़त्म करने के बाद और नाज़िल होंगी। और वो इस काम का इनाम होगा। कुछ बुजुर्गों की राय है कि इन से काम झट-पट ख़त्म करा के यहां बुला लिया जावे। मगर मेरी राय नहीं है। और न मैं ऐसा करने दूँगा।

SV (4PM) You have finished your work assigned to you this very time by new discovery. Nothing remains to be done here.

हज़रत क़िब्ला: इस discovery को शाहजहाँपुर जाकर नोट बुक में लिख देना।

तरीक़ा : अपने आप को कुल मदुराई में सूक्ष्म रूप से फैला दिया और ताकत को सब तरफ भर के ज़मीन और परमाणु में प्रवेश कर दिया।

29-12-44 - Trivandrum

SV : Cut short your journey as pain begins. Go to Mysore. (Hasan, Bellur, if you so desire) after completing your journey to the southern-most point of India. Then depart for Hyderabad. Leave Poona.

हज़रत क़िब्ला: कल Cape Comorin जाओ। उस को अच्छा Hypnotize करना। मगर लंका की तरह नहीं। वापसी पर ट्रिवेण्ड्रम एक रोज़ ठहरो। सुबह की गाड़ी से मैसूर रवाना हो जावो। बेन्गलूर ठहरने की ज़रूरत नहीं। वहां दो एक मक़ामात मसलन Bellur वगैरह देख सकते हो। उस के बाद हैदराबाद (दक्कन) चले जाओ। काम वहीं मिलेगा। वहां से दौलताबाद, अजन्टा देखते हुये बम्बई चले जाओ। वहां जितने क़याम की ज़रूरत होगी, बता दूंगा। पूना जाने की ज़रूरत नहीं ।

बम्बई से द्वारका चले जाओ। ट्रिवेन्ड्रम का भी काम अच्छा रहा। ट्रिवेन्ड्रम (Trivandrum) में तुम काफी रुजूअ रह चुके हो। अब ज़रूरत नहीं मालूम होती। हल्का खयाल रखो। Padmana Swami Temple (Padmanabha Swami Temple) अच्छा मुनव्वर हुवा। आज रात में सिर्फ ब्राह्मणों का डिस्ट्रक्शन करो। इस क़ौम ने हिन्दुओं का सत्यानाश लगा दिया। कडे डिस्ट्रक्शन की ज़रूरत है।

31-12-44 Trivandrum

तुम 30 दिसम्बर सन् 44 ई० को Cape Comorin गये। काम तुम ने रास्ते ही में ख़त्म कर दिया। हवा बदल चुकी है। कल सुबह कूच कर दो। अब Travancore रियासत में रहने की ज़रूरत नहीं रही। Cape Comorin का मन्दिर मिस्मार कर दो। यह कुछ मायनें नहीं रखता।

SV : You have renounced everything of this transitory world for your Lord and he for you. You have got that power examplarily developed in you. Having regard to this fact you pass a life worth living for a king. If you had a kingly life, then it would add a pleasure to me and your Guru. The time is approaching fast to the footprints of your Guru, the Supreme Lord. The idea of Sanyas will disppear in course of time, that is why we want you to lead that kind of life and to set an example for others. Be happy. Going back with Lord.

हज़रत क़िब्ला: स्वामी विवेकानन्द जी के कहने का मतलब यह था कि तुम को शाहाना ज़िन्दगी बसर करना चाहिये।

Glossary

अमामत की	=	From the position of a spiritual Guide
अतिया	=	बख्शिश, पुरस्कार (Gift)
आग़ाज़े आलम	=	श्रुष्टि की उत्पत्ति
आबरू रेज़ी	=	सतीत्व हरण, भर्तसना, तिरस्कार
अन्सर	=	तत्व (Element) यानी आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वि।
अज़ सेरे-नौ	=	नये सिरे से
आमेज़िश	=	मिलावट
अक्स	=	छाया, प्रतिबिम्ब
आरजी	=	अस्थायी (Temporary)
आली ज़र्फ	=	उदारचित्त, उच्चाशय
अर्श-ए-मोडल्ला	=	सबसे ऊँचा आकाश (High heavens)
अक्ल-सलीम	=	उचित समझ, मनीषा
आसारे-नबुवत	=	Signs of prophethood
आजाद मुतलक	=	Completely free
इन्कशाफ करना	=	खोलना, ज़ाहिर करना
इब्द का मक़ाम	=	बंदगी का स्थान (Point of humility)

इश्के-हक़ीकी	=	सच्चा प्रेम, परमात्मा के प्रेम
इम्तियाज़ी	=	वो रियायतें जो किसी गिरोह या शख़्स को उस के ओहदे या मन्सब की वजह से मुमताज़ रखें।
उक्दा	=	समस्या, ग्रंथि
उलिया	=	पारब्रह्माण्ड (मण्डल)
एत्क़ाद	=	विश्वास
कुबरा	=	ब्रह्माण्ड
कुतुब	=	ध्रुव
कैफियत	=	व्योरेवार हाल, मस्ती का नशा
कोह-तूर	=	तूर पर्बत, मुल्क शाम का वो मशहूर पर्बत, जिस पर परमात्मा ने हज़रत मूसा को अपनी तजल्ली दिखाई थी और जो (पर्वत) जल गया था। और दस शरई अहकाम (Ten Commandments) नाजिल फरमाये थे।
कुतुब-उल-अक़्ताब	=	ध्रुवाधिपति
कूव्वेत-इरादी	=	इच्छा शक्ति
कुदरती रुझान	=	Natural Inclination
कस्त्रें शान समझना	=	वो बात जिस से मनुष्य की इज्जत व आब्रू में फर्क आजाये।
क़ाबिले-तहसीन	=	सरोहने के लायक (Praiseworthy)

क़ुदरत-कामिला	=	महाशक्त प्रकृति
कातिब	=	लेखक
कोताही करना	=	आलस्य करना, गफलत करना
क़सदन्	=	जानबूझ कर
कूज़े का पानी	=	मिट्टी के घड़े के पानी

ख़सोखाशाक	=	घास फूस
खते-इस्तवा	=	भू मध्य रेखा (Equator)
खते सरतान	=	कर्क रेखा (Tropic of Cancer) खते इस्तवा के मुत्वाज़ी (Parallel) 23 1/2 दर्जे उत्तर में है।
खते जद्दी	=	Tropic of Capricorn (भूमध्य रेखा के मुत्वाज़ी 23 1/2 दर्जे दक्षिण में है)
ख्वाबीदा हालत	=	निद्रावस्था (Sleeping State)
खलीफा	=	उत्तराधिकारी
खुदादाद	=	ईश्वर की दी हुई (God given)

गौस-उल-आज़म	=	महापार्षद
ग़ल्ताँ व पेचाँ	=	परेशान, उधेड़बुन में
गुज़रगाह	=	मार्ग, पथ
ग़ायेबाना	=	अनुपस्थिति
गुलु-तराशी	=	गला काटना
गोश गुज़ारना	=	कान में कहना, सुनाना

तवज्जह देना	=	ध्यान, कृपा, प्राणाहुती देना (To pay attention)
तबलीग़ का ज़ोअम	=	धर्म प्रचार का गर्व
तफ़ावत	=	अन्तर, भेद, विभेद
तबाअ आज़माई	=	ज़हानत की परीक्षा
तहफ्फुज होना	=	सुरक्षित होना, बचाव, हिफ़ाज़त
तास्सुब	=	धार्मिक या जातीय पक्षपात
तालीम-निस्वाँ	=	स्त्रियों की शिक्षा
तल्क़ीन करना	=	तालीम देना, सिखाना, हिदायत करना, नसीहत करना
तिफले मक्तब	=	पढ़ने वाला बच्चा
त्वायफ	=	वेश्या
तर्जे-तमद्दुन	=	रहने का तरीक़ा
दिमाग़ मोत्तल होना	=	Suspension of mind
दोजख	=	नरक
दोस्फानी	=	नश्वर दुनिया
दिल बंरदाश्ता	=	टूटा हुवा दिल, खण्डित हृदय
निज़ामें शम्सी व अरजी	=	धरती-आकाश की व्यवस्था
नबुवत	=	पैग़म्बरी (Prophethood)
नूर	=	प्रकाश, रोशनी

नहूसत बरसना	=	अमंगल, अनिष्ट, मनहूसपन
नफ्स	=	प्राणवायू, रूह, वजूद, अस्तित्व, मन
नार	=	आग
पैवस्त करना	=	प्रविष्ट करना
पसोपेश होना	=	संकोच होना, अस्मजस
पेशेनगोई	=	भविष्य वाणी (Forecast)
फ़नाइयत	=	लय अवस्था
फ़ना होना	=	लय होना, मिट जाना
फैज़	=	कृपा (Grace)
फुक़रा	=	फ़कीर का बहुवचन
फलाह	=	हित, कल्याण
फ़ारिग-उल-बाल	=	निवृत, प्राप्तावकाश, निश्चिन्त
बग़लगीर होना	=	गले मिलना
बतौसल पीर	=	गुरुद्वारा
बराहे-रास्त	=	सीधे रास्ते से (Directly)
बादी उल-नज़र में	=	सरसरी तौर पर, सरसरी नज़र से
बाहम सिलसिला	=	आपस में
बेसरोसामानी	=	ग़रीबी, निर्धन्ता
बैअत करना	=	दीक्षा लेना, मुरीद होजाना
बे-हुरमती	=	इस्मतदरी, सतीत्व हरण, बेइज्जति
बेचिराग़ होना	=	औलाद का न रहना

बिस्तसना	=	को छोड कर
बिला नागा	=	नाग़ा किये बग़ैर (Without fail, daily)

मक्सद बरारी होना	=	सफलता, उद्देश्य पूरा होना
मक्सूद हासिल होना	=	लक्ष्य, उद्देश्य प्राप्त करना
मख़जन	=	कोषागार, ख़ज़ाना
मादरी ज़बान	=	मात्र भाषा
मुज़्दा	=	शुभसूचना
मुनहरिफ होना	=	विमुख हाना, अवज्ञाकारी
मुत्बन्ना	=	बेटा बनाया हुवा, गोद लिया हुवा (Adopted son)
मिस्मार करना	=	ध्वस्त करना
मुत्बर्रिक जगह	=	पवित्र स्थान
मुस्तस्ना	=	अलग किया गया, वह शख्स या चीज जिसे अलग कर दिया गया हो
मुकम्मिल कर दिया	=	पूर्ण कर दिया
मोजजन होना	=	ठाठे मारना, हिल्लोल
मोडल्लम	=	अध्यापक, शिक्षक
मुन्तक़ल करना	=	हस्तान्त्रन करना
मुनव्वर होना	=	प्रकाशमय होना
मुजमलन्	=	संक्षिप्त, सार रूप में
मुखलफ़ीन	=	शत्रु, प्रतिपक्षी
मैलाने-तबाअ	=	मन की वृत्ति, अभिरुचि,स्वभाव,प्रकृति

मौत्क़द	=	श्रद्धालू, श्रद्धावान
मोरिज़े-इताब	=	क्रोध ज़ाहिर होना
मतलब फ़ोत होना	=	कार्य निष्फल होना (Meaningless)
मुज़महल	=	थका हुवा, शिथिल, सुस्त
मुरीद	=	शिष्य, वह चेला जो गुरु में लय हो गया हो
मुन्तक़ल करना	=	हस्तांतरित करना, स्थानांतरित करना (Transfer)
मजजूबियत	=	बेसुध अवस्था, लय-अवस्था (Condition of merger)
मस्लेहत	=	समयोचित, भलाई, हित, परामर्श
रियाज़त	=	तपस्या, Practice, साधना
रुजुअ होना	=	झुकना, मुखातिब होना (To get oriented, to get inclined)
रायजुल वक्त ज़बान	=	प्रचलित भाषा
राहे-रास्त	=	आवश्यक, ज़रूरी, लाज़मी, यक़ीनी
वतीरा	=	व्यवहार, तरीक़ा, दस्तूर
वुक़अत	=	प्रतिष्ठा, मान सम्मान
विसाल	=	मिलन, महा समाधी
हस्बुल-हुक्म	=	आदेशानुसार

हज़रत क़िब्ला	=	गुरु महाराज
हर कस व नाकस	=	हरेक व्यक्ति, छोटा बडा सब, (Every Tom, Dick and Harry)
हल्का	=	चक्र, परिधि (Circle)
सज्जादानशीन	=	उत्तराधिकारी (Successor Representative)
सलब करना	=	छीन लेना
सरफराज होना	=	इज्जत अफ़्जाई होना, दर्जा बढ़ाना
समरा	=	फल
सानी	=	दूसरा, सदृश, समान
सरकोबी	=	सर कुचलना, सज़ा देना
सरज़द होना	=	अमल में आना
संग-ए-अस्वद	=	वो स्याह पत्थर जो काबा शरीफ की दीवार में लगा है और जिसे मुसलमान बोसा देते हैं।
सआदतमन्दी	=	खुशक़िस्मती
शक़ होना	=	खंडित होना
शग्ले राब्ता	=	गुरु जी शक्ल पर ध्यान
शिज्र:	=	वंश वृक्ष
शनावरी करना	=	तैराकी करना
शफ्कत	=	कृपा, दया